इंटरनेट पर देखें
www.dainikdawa.com

संस्कारधानी से प्रकाशित मध्यभारत व छत्तीसगढ़ अंचल का सर्वप्रसारित लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र

भारत सरकार व छत्तीसगढ़ शासन से विज्ञापन के लिए अधिकृत

दैनिक प्रातः संस्करण

"यो आत्मानं वेत्ति, सर्वं स वेत्ति"।।

दावा

सम्पादक - दीपक कुमार बुद्धदेव

आर.एन.आई.नं. 58841/93
डाक पंजीयन छ.ग./दुर्ग/14/2024-26

वर्ष- 43 अंक -170 राजनांदगांव, मंगलवार 07 मई 2024 पृष्ठ - 8 मूल्य - 4.00 रुपए

झारखंडः मंत्री के पीएस के करीबी पर ED की कार्रवाई, घर से 35.23 करोड़ रु. बरामद

रांची (झारखंड)। मनी लॉन्ड्रिंग मामले में छापेमारी के दौरान झारखंड की राजधानी रांची के एक कमरे से ईडी ने 35.23 करोड़ रुपये बरामद किए हैं. नोटों की गिनती खत्म हो गई है.

झारखंड में लोकसभा चुनाव से कुछ दिन पहले इस बरामदगी ने राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया है. बीजेपी ने इसमें कांग्रेस के मंत्री का कनेक्शन बताया है और विपक्षी पार्टी पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है.

पीएम मोदी ने ओड़िशा की रैली में किया नकद बरामदगी का जिक्र

चुनाव प्रचार के लिए ओडिशा पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नकद बरामदगी का जिक्र भी किया. उन्होंने केंद्र द्वारा जांच एजेंसियों के कथित दुरुपयोग पर विपक्ष के आरोप का जवाब देते हुए पूछा, ÷आज

पड़ोसी राज्य झारखंड में नोटों के पहाड़ मिल रहे हैं. अब आप ही बताइए, अगर मैं उनकी चोरी, उनकी कमाई, उनकी लूट बंद कर दूं, तो क्या वे मोदी को गाली देंगे या नहीं? गालियों के बावजूद, क्या मुझे आपका पैसा नहीं बचाना चाहिए. वहीं कल्पना सोरेन पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी हैं और मनी लॉन्ड्रिंग मामले में उनकी गिरफ्तारी के बाद सक्रिय राजनीति में आई हैं.

जांच पूरी होने से पहले किसी निष्कर्ष पर पहुंचना सही नहीं - आलमगीर आलम

इधर आलमगीर आलम ने कहा है कि ईडी को अपनी जांच पूरी करने से पहले किसी को भी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहिए. उन्होंने यह भी बताया है कि संजीव लाल दो पूर्व मंत्रियों के सचिव के रूप में काम कर चुके हैं. उन्होंने कहा, ÷संजीव लाल एक सरकारी कर्मचारी हैं. वह मेरे निजी सचिव हैं. संजीव लाल पहले से ही दो पूर्व मंत्रियों के निजी सचिव रह चुके हैं. हम आमतौर पर अनुभव के आधार पर निजी सचिवों की नियुक्ति करते हैं. ऐसे में ईडी की जांच शुरू होने से पहले छापे पर टिप्पणी करना सही नहीं है.

लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान लिये सभी तैयारियां पूरी

नयी दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 के तीसरे चरण के लिए मंगलवार को 12 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों की 93 सीटों पर मतदान की सभी तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। तीसरे चरण में 120 महिलाओं सहित 1351 प्रत्याशियों की किस्मत तय होना है। तीसरे चरण में जिन प्रत्याशियों का भविष्य दाव पर है उनमें केन्द्रीय मंत्री अमित शाह, ज्योतिरादित्य सिंधिया, पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, दिग्विजय सिंह, सांसद डिंपल यादव और सुप्रिया सुले समेत कई दिग्गज नेता शामिल हैं।

चुनाव आयोग मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिये मतदाता जागरूकता अभियान के कई कार्यक्रम कर रहा है। तीसरे चरण में 12 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के 93 लोकसभा सीटों के लिये वोट पड़ेंगे, इनमें बिहार की पांच, मध्यप्रदेश की नौ, असम की चार,छत्तीसगढ़ की सात, कर्नाटक की 14, गोवा की दो, गुजरात की 25, महाराष्ट्र की 11, उत्तर प्रदेश की 10, बंगाल की चार, दमन और दीव की दो सीट शामिल हैं।

जिन सीटों पर मतदान होना है, उनमें असम की चार सीटों धुबरी, कोकराझार, बारपेटा, गुवाहाटी, बिहार की पांच सीटों- झंझारपुर, सुपौल, अररिया, मधेपुरा, खगड़िया, छत्तीसगढ़ की सात सीटों- सरगुजा, रायगढ़, जांजगीर-चांपा, कोरबा, बिलासपुर, दुर्ग, रायपुर, दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव की दो सीटों, गोवा की दो सीटों- उत्तरी गोवा, दक्षिणी गोवा, गुजरात की 25 सीटों- कच्छ, बनासकांठा, पाटन, महेसाणा, साबरकांठा, गांधीनगर, अहमदाबाद पूर्व, अहमदाबाद पश्चिम, सुरेंद्रनगर, राजकोट, पोरबंदर, जामनगर, जूनागढ़, अमरेली, भावनगर, आनंद, खेड़ा, पंचमहल, दाहोद, वडोदरा, छोटा उदयपुर, भरूच, बारडोली , नवसारी, वलसाड, कर्नाटक की 14 सीटों: चिक्कोडी, बेलगाम, बागलकोट, बीजापुर, गुलबर्गा, रायचूर, बीदर, कोप्पल, बेल्लारी, हावेरी, धारवाड़, उत्तर कन्नड़, दावणगेरे, शिमोगा, *(शेष पृष्ठ 6 पर...)*

'हमारी सरकार आने पर 50 प्रतिशत आरक्षण की सीमा हटाएंगे, जितनी जरूरत उतना देंगे रिजर्वेशन' : राहुल गांधी

भोपाल। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने भाजपा पर बड़ा आरोप लगाया है. उन्होंने कहा कि भाजपा आदिवासी, दलित और पिछड़ों से आरक्षण छीनना चाहती है. कांग्रेस की सरकार आने के बाद आरक्षण की 50 प्रतिशत की सीमा खत्म की जाएगी. राहुल ने कहा कि आरक्षण पर अदालत ने 50 प्रतिशत की लिमिट लगा रखी है, हम उसे हटाएंगे और गरीबों, पिछड़ों, दलितों और आदिवासियों को जितने आरक्षण की जरूरत है, हम उतना आरक्षण देंगे.

मध्यप्रदेश के झाबुआ-रतलाम संसदीय क्षेत्र में कांग्रेस उम्मीदवार कांतिलाल भूरिया के समर्थन में आयोजित जनसभा में राहुल गांधी ने कहा कि भाजपा नेता कहते हैं कि उनकी सरकार बनने पर आदिवासियों, दलितों, पिछड़े वर्ग से आरक्षण छीन लिया जाएगा.

राहुल गांधी ने संविधान की प्रति दिखाते हुए

कहा कि ये चुनाव संविधान को बचाने का चुनाव है. संविधान को भाजपा और आरएसएस खत्म करना चाहती है, इसे बदलना चाहती है. कांग्रेस पार्टी और इंडिया गठबंधन संविधान की रक्षा कर रहा है. उन्होंने कहा कि भाजपा ने संविधान को बदलने के इरादे से '400 पार' (400 से अधिक लोकसभा सीटें जीतने का लक्ष्य) का नारा दिया है. लेकिन, 400 सीटें तो छोड़िए, भाजपा को इस बार 150 से ज्यादा सीटें भी नहीं मिलेंगी.

संविधान ने दिया आरक्षण के हक

कांग्रेस नेता ने कहा कि जल, जंगल, जमीन का जो हक है, वह सब संविधान ने दिया है. मोदी सरकार आपके अधिकार को छीनना चाहती है, ये उनका लक्ष्य है. हम आदिवासियों, दलितों और पिछड़ों की भागीदारी बढ़ाना चाहते हैं. हमने फैसला किया है कि जातीय जनगणना कराई जाएगी.

इससे देश की राजनीति बदलने जा रही है. इसके अलावा किसानों की कर्ज माफी भी होगी. युवाओं को पहली नौकरी पक्की होगी, जिसमें एक साल तक हर महीने साढ़े आठ हजार रुपये मिलेंगे. राहुल गांधी ने यह भी कहा कि उनकी पार्टी सत्ता में आने पर महिलाओं को 'लखपति' बनाने के लिए *(शेष पृष्ठ 6 पर...)*

धर्मांतरण के खिलाफ सरकार लायेगी कठोर कानून

रायपुर (दावा)। अगर मैं कहूं कि कांग्रेस ही भ्रष्टाचार की जननी है तो ये कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आजादी के बाद जितने कांग्रेसी प्रधानमंत्री हुए, उनमें स्व. पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक अधिकांश पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे। स्व. राजीव गांधी के कार्यकाल में बोफोर्स घोटाले के कारण उनकी सरकार चली गई।

यहां तक कि खुद राजीव गांधी स्वीकार करते थे कि मैं दिल्ली से 1 रुपए भेजता हूं, तो लोगों तक केवल 15 पैसा ही पहुंच पाता है। मनमोहन सिंह सरकार में भी अनेक घोटाले हुए उस समय जब भी कोई समाचार पत्र या टीवी में न्यूज चैनल देखते तो हर दिन कोई नया स्कैंडल सामने आता था। कोलगेट घोटाला, कॉमनवेल्थ गेम घोटाला, अगस्ता हेलीकॉप्टर खरीदी घोटाला जैसे आरोप मनमोहन सरकार पर लगे। इन्होंने जमीन छोड़ा ना आसमान, हर जगह घोटाला और भ्रष्टाचार किया। एक

मुख्यमंत्री बोले, कांग्रेस भ्रष्टाचार की जननी, अधिकांश प्रधानमंत्री पर घोटाले के आरोप

साक्षात्कार में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में जब 2018 में विधानसभा चुनाव हुए तो जनता ने कांग्रेस पार्टी पर बहुत बड़ा विश्वास करके उन्हें सरकार में बैठाया था लेकिन यहां भी पांच साल कांग्रेस सरकार ने सिर्फ घोटाले किए। पूर्व मुख्यमंत्री पर भी महादेव सट्टा ऐप में प्रोटेक्शन मनी लेने का आरोप लगा। भारतीय जनता पार्टी में भ्रष्टाचार के लिए कोई जगह नहीं है। नरेंद्र मोदी जी ने जब पहली बार प्रधानमंत्री के रूप में अपना दायित्व संभाला तो उन्होंने कहा था कि ना खाऊंगा ना खाने दूंगा और सौभाग्य है इस देश का कि दो कार्यकालों के बाद भी मोदी सरकार व उनके किसी मंत्री पर भ्रष्टाचार या घोटालों के आरोप नहीं लगे। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ में भी हम भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपना रहे हैं और जो भी इसमें लिप्त पाया जाएगा उस पर हमारी सरकार सख्त से सख्त कार्रवाई करेगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'वोट जिहाद' शब्द बोलने के सवाल पर सीएम साय ने कहा कि कांग्रेस तुष्टिकरण की राजनीति करती है इनके पूर्व प्रधानमंत्री रहे मनमोहन सिंह बोल चुके हैं कि देश के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है। लेकिन ये सब यहां नहीं चलने वाला। *(शेष पृष्ठ 6 पर...)*

दिल्ली एलजी ने केजरीवाल के खिलाफ की एनआईए जांच की सिफारिश आप ने कहा - एक और बड़ी साजिश

नई दिल्ली। दिल्ली के हैं. ये सीएम केजरीवाल के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन से कथित राजनीतिक फंडिंग के मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ एनआईए जांच की सिफारिश की है. एलजी ने प्रतिबंधित संगठन सिख फॉर जस्टिस से कथित तौर पर राजनीतिक फंड लेने को लेकर इस जांच की सिफारिश की है.

उपराज्यपाल सक्सेना को शिकायत मिली थी कि अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी को देवेंद्र पाल भुल्लर की रिहाई की सुविधा देने और खालिस्तान समर्थक भावनाओं को बढ़ावा देने के लिए चरमपंथी खालिस्तानी समूहों से भारी धनराशि (तकरीबन 16 मिलियन अमेरिकी डालर) मिली थी.

मुख्यमंत्री के खिलाफ गंभीर शिकायत की जांच जरूरी- एलजी

वीके सक्सेना ने सिफारिश की है कि चूंकि शिकायत एक मुख्यमंत्री के खिलाफ की गई है और एक प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन से लिए गए राजनीतिक फंडिंग से संबंधित है, ऐसे में शिकायतकर्ता द्वारा दिए गए इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों की फोरेंसिक जांच सहित पूरी जांच की जरूरत है.

वहीं आम आदमी पार्टी ने इसे एक और साजिश करार दिया है. ह्ढ्ढ जांच की सिफारिश पर आप नेता सौरभ भारद्वाज ने कहा कि एलजी साहब भाजपा के एजेंट खिलाफ एक और बड़ा षड्यंत्र है. भाजपा के इशारे पर ये साजिश रची गई है. सौरभ भारद्वाज ने कहा कि भाजपा दिल्ली में सातों सीट हार रही है और हार के डर से वो बौखला गई है. उन्होंने कहा कि पंजाब विधानसभा चुनाव से पहले भी भाजपा ने ये साजिश की थी.

घिसे-पिटे आरोप लगाना भाजपा का राजनीतिक षयंत्र- सौरभ भारद्वाज

भारद्वाज ने कहा कि हर चुनाव से पहले फंडिंग से जुड़े घिसे-पिटे आरोप लगाना भाजपा का राजनीतिक षड्यंत्र है. इसी मामले में उच्चस्तरीय जांच की मांग वाली जनहित याचिका दो साल पहले हाईकोर्ट ने खारिज कर दी थी. 2022 में पंजाब विधानसभा चुनाव से ठीक पहले भाजपा ने यही आरोप लगाए थे, गृहमंत्री ने जांच भी कराई थी, पर कुछ नहीं निकला. अब एक बार फिर वही आरोप एक संगठन के अध्यक्ष, उसके महासचिव और भाजपा के एक नेता ने लगाया है.

उन्होंने कहा कि जिस मामले को तुच्छ बताकर हाईकोर्ट खारिज कर चुका है, उस आरोप की सुर्खियां बटोरने के लिए एलजी जांच करा रहे. उन्होंने कहा कि अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य, मुफ्त बिजली, पानी देने वाले सीएम केजरीवाल को अपमानित करने वाली भाजपा को हराकर जनता इसका जवाब देगी.

एक शादी में शामिल होने आए मेडिकल कॉलेज के 5 छात्र कन्याकुमारी तट के पास समुद्र में डूब गए

चेन्नई। तमिलनाडु में कन्याकुमारी तट के पास सोमवार को दो महिलाओं सहित पांच मेडिकल कॉलेज के छात्र समुद्र में डूब गए. इन छात्रों का मेडिकल का फाइनल ईयर था और कुछ ही सप्ताह में इन्हें डिग्री मिलने वाली थी. ये सभी एक बंद पड़े

प्राइवेट बीच पर तैराकी कर रहे थे. कन्याकुमारी जिले के पुलिस अधीक्षक ई सुंदरवथनम ने एनडीटीवी को बताया, छात्रों का समूह नारियल के पेड़ों के माध्यम से बंद लेमुर बीच तक पहुंच गया था. समुद्र के अशांत होने के कारण इसे बंद कर दिया गया था. हम मामले की जांच कर रहे हैं.

जांचकर्ताओं का कहना है कि छात्रों का यह समूह, तिरुचिरापल्ली के एसआरएम मेडिकल कॉलेज के कई अन्य छात्र-छात्रओं के साथ रविवार को कन्याकुमारी की एक शादी में शामिल होने के लिए आया था. यहां आकर ये सभी छोटे-छोटे समूहों में विभाजित हो गए और लगभग सभी शहर घूमने निकल गए. मगर यह विशेष समूह प्राइवेट बीच पर पहुंच गया था. डूबे हुए छात्रों की पहचान तंजावुर के चारुकावी, नेवेली के गायथिरी, कन्याकुमारी के सर्वदर्शित, डिंडीगुल के प्रवीण सैम और आंध्र प्रदेश के वेंकटेश के रूप में की गई है.

इनके साथ आईं तीन अन्य महिला मेडिकल इंटर्न्स करूर से नेशी, थेनी से प्रीति प्रियंका और मदुरै से सरन्या को बचा लिया गया है और उनका इलाज असारीपल्लम मेडिकल कॉलेज अस्पताल में किया जा रहा है. रविवार को, चेन्नई के तीन अन्य लोग उस समय डूब गए जब वे दूसरे समुद्र तट पर डुबकी लगा रहे थे.

छत्तीसगढ़ की 7 लोकसभा सीटों पर मतदान आज; जनता करेगी 168 प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला

रायपुर। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में मंगलवार को छत्तीसगढ़ की सात लोकसभा सीटों पर मतदान होंगे। इसमें रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, सरगुजा, जांजगीर-चांपा लोकसभा क्षेत्र में वोट डाले जाएंगे। सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक वोटिंग होगी। प्रदेश की जनता कुल 168 प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला करेगी। इस संबंध में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी रीना बाबा साहेब कंगाले ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जानकारी दी।

सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक डाले जाएंगे वोट

उन्होंने बताया कि मंगलवार को प्रदेश में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है। छत्तीसगढ़ की 7 लोकसभा सीटों के 58 विधानसभा क्षेत्रों में सुबह 7 से शाम 6 बजे तक वोटिंग होगी। इन लोकसभा क्षेत्रों में मतदाताओं की कुल संख्या 1 करोड़ 39 लाख 01 हजार 285 है। पिछले चुनाव की तुलना में इस बार मतदाताओं की संख्या में 9.34 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस बार के चुनाव में 11 लाख 87 हजार 470 नये मतदाता बढ़े हैं।

भीषण गर्मी वोटर्स के लिए रहेंगी सुविधायें

इस बार भीषण गर्मी को देखते हुए मतदान केंद्रों में वेटिंग हाल की अतिरिक्त व्यवस्था रहेगी। कूलर की भी व्यवस्था की गई है। केंद्रों में पंडाल लगाए जायेंगे। पेयजल, नींबू पानी और ओआरएस घोल की व्यवस्था रहेगी।

सीएम ने की मतदान की अपील

सीएम विष्णु देवसाय अपने गृह ग्राम बगिया में वोटिंग करेंगे। वो जशपुर जिला स्थित गृह ग्राम बगिया में अपना मतदान करेंगे। इसके लिए वो सीएम हाउस से बगिया जाएंगे। सीएम गांव के प्राथमिक शाला बूथ क्रमांक 49 में सपरिवार मतदान करेंगे। उन्होंने प्रदेश की जनता से अधिक से अधिक मतदान करने की अपील की है। सीएम सुबह 10.05 से शाम 4.10 बजे तक अपने निज निवास बगिया में रहेंगे और क्षेत्र के लोगों से मुलाकात करेंगे। शाम 4.15 बजे वापस राजधानी रायपुर आयेंगे।

राधिका खेड़ा को सुशील आनंद शुक्ला ने भेजा मानहानि का नोटिस

रायपुर (दावा)। छत्तीसगढ़ में राधिका खेड़ा विवाद ने सियासी सरगर्मी बढ़ा दी है। जिस तरह से दिल्ली प्रेस क्लब में राधिका खेड़ा ने प्रेस कांफ्रेंस लेकर कांग्रेस मीडिया विभाग के चेयरमैन सुशील आनंद शुक्ला और प्रवक्ता धनंजय ठाकुर पर गंभीर आरोप लगाये हैं। उसके बाद से कांग्रेस भी राधिका खेड़ा पर आक्रामक हो गयी है। सुशील आनंद शुक्ला ने प्रेस कांफ्रेंस कर राधिका खेड़ा को मानहानि का नोटिस भेजने की बात कही थी, अब जानकारी ये आयी है कि सुशील आनंद शुक्ला ने राधिका खेरा को नोटिस भेज दी है। साथ ही सुशील आनंद शुक्ला ने राधिका खेरा को नार्को टेस्ट की चुनौती दी है। सुशील आनंद शुक्ला ने कहा है कि राधिका और मेरा दोनों का नार्को टेस्ट

बोले, नार्को टेस्ट कराया जाये, कौन सच्चा, कौन झूठा सब बाहर आ जायेगा

कराया जाये, तो पता चल जायेगा कौन झूठ बोल रहा है।

इससे पहले कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद सोमवार को दिल्ली में राधिका खेडा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने प्रियंका गांधी के नारे, 'लड़की हूं तो लड़ सकती हूं' पर भी कटाक्ष किया। कहा कि, कांग्रेस का अब स्लोगन है 'लड़की हो तो पिटोगी'। वहीं दूसरी ओर रायपुर में आरोपों पर सफाई देते हुए सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि, हर कोई जानता है कि मैंने शराब का सेवन नहीं किया। मैं मानहानि का नोटिस भेजूंगा।

इधर छत्तीसगढ़ कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने भी प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि आरोप तो कोई भी लगा सकता है। मैसेज दिल्ली भेजा गया है, एआईसीसी आगे फैसला करेगी। बताया जा रहा है कि, 'क्रियेटिव जिप्सी' नामक जिस कंपनी को भूपेश सरकार में फिल्म निर्माण का जिम्मा दिया गया था, उसकी सीईओ राधिका खेड़ा की मां श्रीमती नीरु खेड़ा हैं, इस कंपनी के भुगतान को लेकर भी विवाद की स्थिति बनी।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय आज अपने गृह ग्राम बगिया में करेंगे मतदान

रायपुर (दावा)। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय 07 मई को जशपुर जिला स्थित गृह ग्राम बगिया में अपना मतदान करेंगे। इसके लिए वे रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास से बगिया जाएंगे। श्री साय ने छत्तीसगढ़ की जनता से अधिक से अधिक संख्या में मतदान में शामिल होने की अपील की है।

अपने 47 दिन के तूफानी जनसभाओं के बाद प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय आज प्रातः 08:35 बजे अपने गृह ग्राम बगिया के लिए रवाना होंगे। जहाँ आज वो गांव के प्राथमिक शाला बूथ क्रमांक 49 में सपरिवार मतदान करेंगे। श्री साय आज प्रातः 10:05 बजे से शाम 04:10 बजे तक अपने निज निवास बगिया में रहेंगे और क्षेत्र के लोगों के साथ मेल-मुलाकात करेंगे। सायं 04:15 बजे सीएम साय वापस राजधानी रायपुर के लिए रवाना होंगे।

गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ में तीसरे व अंतिम चरण में होने वाले चुनाव के लिए प्रचार थम चुका है। जिसके अंतर्गत बची हुई 7 सीटों में आज 7 मई को वोट डाले जाएंगे। आज दुर्ग, रायपुर, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, सरगुजा, जांजगीर-चांपा लोकसभा सीटों के लिए मतदान होगा। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने 20 मार्च से 05 मई तक प्रदेश के सभी ग्यारह लोकसभा क्षेत्रों का तूफानी चुनावी दौर किया। इस दौरान उन्होंने 75 विधानसभा क्षेत्रों 100 आमसभाओं को संबोधित किया।

अक्षय तृतीया पर बाल-विवाह रोके जाने की तैयारी

प्रशासन ने आंगन बाड़ी कार्यकर्ता, पंचायत सचिव व अन्य मैदानी अमलों की ली मदद

राजनांदगांव (दावा)। भगवान परशुराम जयंती अक्षय तृतीया के दिन अक्सर बाल-विवाह सम्पन्न कराए जाते है। समाज में यह एक परम्परा का रूप धारण लिया है। आज के जमाने में बाल-विवाह एक सामाजिक बुराई व अभिशाप माना गया है। चूंकि अक्षय तृतीया के दिन बच्चों द्वारा गुड्डे-गुडियों के ब्याह रचाए जाते है उसी तरह अभिभावक जन अपने कम उम्र के बच्चों का भी ब्याह रचा देते है। प्रशासन की नजर में यह घोर अपराध है। अतः प्रशासन द्वारा अक्षय तृतीया के दिन जिले में कही भी बाल विवाह न होने पाए इसके लिए पूरी तैयारी कर ली गई है। स्थानीय प्रशासन व महिला बाल विकास विभाग के सहयोग से जिले में कही भी होने वाले बाल विवाह को रोकने के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से लेकर पंचायत सचिव व अन्य मैदानी अमले को लगा दिया गया है। इनकी जिले भर में होने वाले बाल-विवाह पर पैनी नजर बनी रहेगी।

बाल विवाह पर रहेगी इनकी पैनी नजर

रोके गए थे आधा दर्जन बाल विवाह

बता दे कि आगामी 10 मई अक्षय तृतीया के दिन अबूझ मुहूर्त मानते हुए बड़ी संख्या में वैवाहिक आयोजन सम्पन्न होते है। ग्रामीण क्षेत्रों में इस दिन बाल-विवाह भी करा दिया जाता है। बाल विवाह को सामाजिक बुराई मानते हुए जिला प्रशासन द्वारा गत वर्ष आधा दर्जन बाल-विवाह रोके गए थे। प्रशासन ने इस बार पहले से ही जन-जागरूकता अभियान शुरू कर दिया है।

प्रशासन द्वारा गांवों में मुनादी करवा दी गई है कि कम उम्र के बच्चों का बाल विवाह कराए जाने पर उन पर कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। लोगों को कानून में कार्रवाई को लेकर किए गए प्रावधानों से उन्हें अवगत कराया जा रहा है। बाल विवाह रोकने के लिए प्रशासन द्वारा ग्राम सेवकों, कोटवारों, पंचायत सचिवों के अलावा आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ ही अन्य मैदानी अमलों को सजग किया जा चुका है। राजनांदगांव में इसकी कमान महिला बाल विकास विभाग व पुलिस ने संभाल रखी है। बताया जाता है कि बाल विवाह में शामिल होने वाले लोगों पर सजा व जुर्माने के प्रावधान है। वही बाल विवाह करवाने वाले दोनों पक्षों पर कानूनी कार्रवाई के विधान है।

दूरस्थ क्षेत्रों में ज्यादा शिकायत

बता दे कि शहरी इलाके से दूर पड़ने वाले क्षेत्रों में जहां शिक्षा का अभाव है। बाल-विवाह की ज्यादा शिकायत है। इसमें ज्यादातर छुईखदान, गंडई के अलावा वनांचल क्षेत्र मानपुर-मोहला-अं. चौकी, साल्हेवारा क्षेत्र आते है। इन क्षेत्रों में कही भी बाल-विवाह न हो सके इसलिए व्यापक जन जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। महिला बाल विकास विभाग अधिकारी गुरूप्रीत कौर ने बताया कि प्रशासन के सक्रियता से गत वर्ष 6 बाल विवाह रोके गए थे। इस बार भी बाल विवाह को लेकर जागरूक कर्ता अभियान शुरू कर दिया गया है। इसके लिए कलेक्टर ने एक मिटिंग लेकर बाल-विवाह रोकने के निर्देश दिए है तथा आगन बाड़ी कार्यकर्ता, पंचायत सचिव, कोटवार ग्राम सेवकों के साथ ही अन्य मैदानी अमलों को सजग कर दिया गया है। ताकि कही भी बाल-विवाह न हो सके। महिला बाल विकास विभाग परियोजना अधिकारी कौर ने बताया कि तृतीया के एकदिन पहले से ही प्रशासन संभावित क्षेत्रों में सक्रियता बढ़ा देगी। वही उपरोक्त अमलों की कड़ी नजर बनी रहेगी।

जूनियर भारतीय हॉकी टीम में राजनांदगांव की अनिशा साहू का चयन

राजनांदगांव (दावा)। हॉकी नर्सरी राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) की कु.अनिशा साहू का चयन ब्रेडा नीदरलैंड में 18 मई से 31 मई तक आयोजित है टूर ऑफ यूरोप अंडर 21 बालिका हॉकी चैम्पियनशिप के लिए भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम में किया गया है। छत्तीसगढ़ हॉकी के अध्यक्ष फिरोज अंसारी ने बताया कि उक्त प्रतियोगिता में भारत सहित बेल्जियम, जर्मनी तथा मेजबान ब्रेडा नीदरलैंड चार देशों की हॉकी टीम भाग लेगी। आज घोषित जूनियर भारतीय टीम के 20 सदस्यों की सूचि में नगर की बेटी कु.अनिशा साहू को शामिल किया गया है। कु.अनिशा ही विगत दो वर्ष से हॉकी इंडिया की कोर टीम के साथ बैंग्लुरू सांई सेन्टर में जूनियर भारतीय हॉकी टीम के कोंचिग कैम्प में शामिल है।

छत्तीसगढ़ हॉकी के अध्यक्ष फिरोज अंसारी ने कु. अनिशा की इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए बताया कि कु.अनिशा साहू ने अभी हाल पुणे में सम्पन्न सीनियर नेशनल चैंपियनशिप तथा राउरकेला में सम्पन्न हुई 13वी हॉकी इंडिया जूनियर बालिका हॉकी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन किया था।

छत्तीसगढ हॉकी के महासचिव मनीष श्रीवास्तव ने बताया कि कु.अनिशा ने उनके प्रारंभिक कोच अनुराज श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में सन् 2014 से बसंतपुर तथा अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम में हॉकी खेलना प्रारंभ किया था, छत्तीसगढ़ की ओर से खेलते हुए कु अनिशा घरेलू हॉकी प्रतियोगिताओं में अच्छे खेल का प्रदर्शन करते आ रही है। जिसमें 7वीं सब जूनियर बालिका राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता रामानाथामपुरम (तमिलनाडू) 2017, 7वीं जूनियर बालिका राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता भोपाल (मध्यप्रदेश) 2017। 8वी सब जूनियर व जूनियर बालिका राष्ट्रीय प्रतियोगिता हिसार (हरियाणा) व भोपाल (मध्यप्रदेश) 2018, 9वी जूनियर बालिका राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता, 13वी हॉकी इंडिया सीनियर महिला कोयलपपट्टी, 14वी हॉकी सीनियर महिला हॉकी चैंपियनशिप शामिल है।

कु.अनिशा साहू की इस उपलब्धि पर विष्णुदेव साय मुख्यमंत्री छ.ग. शासन, टांकराम वर्मा खेलमंत्री पूर्व मुख्यमंत्री, विधानसभा अध्यक्ष व विधायक डॉ.रमन सिंह, नीलम नामदेव एक्का खेल सचिव छ.ग. शासन, श्रीमति तनुजा सलामे संचालक खेल एवं युवा कल्याण विभाग, संजय अग्रवाल कलेक्टर, श्रीमति हेमा सुदेश देशमुख महापौर, पूर्व सांसद मधुसूदन यादव, निगम अध्यक्ष हरिनारायण पप्पू धकेता, ओलपिंयन श्रीमति रेणुका यादव, पूर्व भारतीय कप्तान पदमश्री सुश्री सबा अंजुम, अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी नीता डूमरे, मृणाल चौबे, रेणुका राजपूत, ए.एक्का सहायक संचालक राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ हॉकी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डी.रविशंकर, हरिंदर सिंह भाटिया, एम.वाय कुरैशी, रोहित बापपाई, विनिता नवघरे, मंजुला बिसवास, कोषाध्यक्ष सुश्री ऑशा थॉमस, सह-सचिव गोपेश्वर कहरा, राजेश मंडावी, वर्षा शर्मा, रीना बोरकर, गजेन्द्र शर्मा, अंसार अहमद, जिला हॉकी संघ के सचिव शिवनारायण धकेता, नेता प्रतिपक्ष किशुन यदु, उपाध्यक्ष भूषण साव, आशा थामस, गणेश प्रसाद शर्मा, ज्ञानचंद जैन, अब्दुल कादिर, कुमार स्वामी, अनुराज श्रीवास्तव, महेंद्र ठाकुर, प्रिंस भाटिया, गुणवंत पटेल, राजू रंगारी, अजय झा, प्रकाश शर्मा, बबीता लीलहरे, ममता गुप्ता, शकील अहमद, अमित माथुर, मनीष गौतम, सचिन खोब्रागडे, कृष्णा यादव, किशोर धीवर अफसाना खान सहित छत्तीसगढ़ हॉकी, जिला हॉकी परिवार ने बधाई व शुभकामनाएं दी है।

पहला कॉलम...

टेडेसरा शराब भट्टी में अनैतिक तरीका से झिल्ली एवं रेपर चिपकी मिली

शराब बिक्री का मामला

घुमका (दावा)। कल घुमका में किसी आदमी ने शराब का एक पव्वा ले जाकर दिखाया की शराब के बोतल में झिल्ली का रेपर एवं झिल्ली भी दिखाई दिया, जिसे लेकर जाकर कलेक्टर कार्यालय में आबकारी के मुख्य आयुक्त मैडम को घटना से अवगत कराया गया, लेकिन आबकारी मैडम ने यह कहकर अपना पड़रा झाड़ दी की हम इस बारे में पहले भी शिकायत सुन चुके है। लेकिन इससे शराब सेवन करने वाले लोगों की जान से खिलवाड़ हो रहे है। अतः आबकारी आयुक्त को अनुरोध है कि ऐसी घटना की उचित कार्यवाही करें।

मेडिशाईन हॉस्पिटल द्वारा मतदान दिवस पर निःशुल्क ओ.पी.डी. की व्यवस्था

रायपुर (दावा)। न्यू राजेंद्र नगर अमलीडीह स्थित श्री मेडिशाईन हॉस्पिटल द्वारा आज 7 मई को मतदान दिवस पर मतदान करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए 1 दिन के लिए फ्री ओपीडी की व्यवस्था की गई है। उंगली में सियाही का निशान दिखाकर फ्री ओपीडी का लाभ ले सकते है, साथ ही मरीजों को सभी प्रकार के जांच 20% एवं दवाइयों पर 7% की विशेष छूट प्रदान की जायेगी। श्री मेडिशाईन हॉस्पिटल द्वारा की गई।

इस योजना का मरीजों द्वारा भरपूर सराहा गया है। उलेखनीय है श्री मेडिशाईन हॉस्पिटल की लोकप्रियता आज न केवल संपूर्ण छत्तीसगढ़ बल्कि उड़ीसा एवं दूर-दूर के क्षेत्रों में फैली हुई है। उल्लेखनीय की श्री मेडिशाईन हॉस्पिटल द्वारा समय-समय पर मरीजों के हितों को ध्यान में रखते हुए निःशुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का भी आयोजन किया जाता है। जिसमें सुगर यूरिक एसिड बी पी एवं ईसीजी आदि की निःशुल्क जांच की जाती है।

लू-तापघात से बचाव के लिए व्यापक तैयारी एवं नियंत्रण कक्ष स्थापित

राजनांदगांव (दावा)। कलेक्टर संजय अग्रवाल के आदेशानुसार लू-तापघात से बचाव के लिए व्यापक तैयारी की जा रही है एवं कलेक्टोरेट के कक्ष क्रमांक 37 में जिला स्तरीय नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है। जिसका दूरभाष क्रमांक 07744-220557 एवं मोबाईल नंबर 98279-04189 है। कलेक्टर ने लू-तापघात से व्यापक तैयारी व बचाव के लिए डिप्टी कलेक्टर एवं प्रभारी अधिकारी राहत श्रीमती सरस्वती बंजारे को नोडल अधिकारी नियुक्त किया है।

आस्था मूकबधिर शाला का शत-प्रतिशत परीक्षाफल

वार्षिक परीक्षा में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के मूकबधिर बच्चें हुए शामिल

राजनांदगांव (दावा)। जिले की एक मात्र मूकबधिर शाला का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। वार्षिक परीक्षा में मध्यप्रदेश महाराष्ट्र एवं छत्तीसगढ़ के 80 मूकबधिर दिव्यांग बच्चे शामिल हुए, जिसमें कक्षा (केजी-1) में कु. भूमिका साहू 86 प्रतिशत, कक्षा (केजी-2)चुम्मन लाल साहू 95 प्रतिशत, कक्षा-पहली में कु.फरहा फातिमा 90 प्रतिशत, कक्षा दूसरी कुलदीप कुंवर 88प्रतिशत, लीलेश भुआर्य 88 प्रतिशत, कक्षा तीसरी कु. प्रीति हटीले 94 प्रतिशत, कक्षा चौथी बासु मंडावी 90.4 प्रतिशत, कक्षा पांचवी लक्की मरकाम 94 प्रतिशत, कक्षा छठवीं कु. गरिमा लाउत्रे, कक्षा सातवीं में देव विश्वकर्मा 95 प्रतिशत, कक्षा आठवीं में कु. पूजा देवांगन 94 प्रतिशत, अंक प्राप्त कर आस्था मूक बधिर शाला को गौरवान्वित किया।

सकल जैन समाज के अध्यक्ष मनोज बैद के मुख्य आतिथ्य में एवं आस्था के सचिव राजेश जैन कोषाध्यक्ष महेंद्र सुराना अनिल बडकुल मीनू खंडेलवाल संगीता अग्रवाल नवीन खंडेलवाल प्रभात जैन, पंकज जैन, राकेश शर्मा, नईम कुरेशी, शिव राठी की गरिमामय उपस्थिति में के. जी. 1 से लेकर कक्षा आठवीं तक उच्च अंक प्राप्त बच्चों को सम्मानित किया गया। वहीं शिक्षिकाओं को भी सम्मानित किया गया।

आस्था के सचिव राजेश जैन ने बताया कि आस्था मूक बधिर शाला में अधिकांश बच्चें गरीब परिवार से आते है, जो कि संस्था के ही छात्रावास जिसमें बालक छात्रावास एवं बालिका छात्रावास अलग-अलग है में रहकर पढ़ाई करते है और सभी विद्यार्थियों को निःशुल्क भोजन के साथ सभी सुविधाएं दी जा रही है। आस्था मूक बधिर शाला को नगर के दान दाताओं से सहयोग भी प्राप्त होता है, मूक बधिर शाला के बच्चें पढ़ाई के साथ-साथ खेल संगीत नृत्यकला चित्रकारी में भी दक्ष है। परीक्षा परिणाम एवं प्रतिभा सम्मान समारोह में बड़ी संख्या में पालकगण की उपस्थिति में आयोजन गरिमामय रहा। उक्त जानकारी शाला की लेखपाल आयशा खान के द्वारा दी गई।

पराजय के भय से मानसिक रूप से विचलित है सांसद पाडे - कांग्रेस

आरोप लगाने से पहले चिंतन करें-रूपेश दुबे

राजनांदगांव (दावा)। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता रूपेश दुबे ने राजनांदगांव के सांसद प्रत्याशी संतोष पांडे के हास्यास्पद और अनिभिज्ञतापूर्ण बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि श्री पांडे को पहले तथ्यों की जानकारी लेनी चाहिए, उसके उसके बाद कुछ बोले तो उचित होगा।

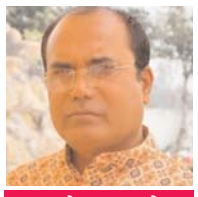

प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के चेयरमैन सभ्य, सौम्य व्यक्तित्व के धनी सुशील आनंद शुक्ला पर मिथ्या आरोप लगाने वाली राधिका खेड़ा के समर्थक शुभचिंतक बने श्री पांडे थोडा चिंतन भी करें है कि जब मणिपुर की में नारी शक्ति शर्मसार हुई, तब हरियाणा की पहलवान बेटियां न्याय की गुहार लगा रही थीं, तब हाथरस उन्नाव और कठुआ में जब अमानवीय घटनाएं घटित हुई, तब क्यों मुंह में दही जमाए बैठे थे, तब क्या नारी अस्मिता का बोध आपको नही हुआ, जिस राधिका खेडा के खुद के बयानों में पर्याप्त विरोधाभासी अविस्वनीय कथन है, उस पर महाभारत और अन्य कथानकों का उदाहरण दे रहे हैं, वे स्वयं आत्ममंथन करें कि उन्होंने भारत देश में जब भाजपा के राज में नारियों पर अत्याचार हुए, किसानों पर अत्याचार हुए, उन अत्याचारों को लोकसभा के सदन में आवाज उठाना छोड़ वह स्वयं धृतराष्ट्र बनकर बैठे रहे और कौरव रूपी आरोपियों के मुख्य समर्थक बन संसदीय गरिमा को तार-तार करने का काम किए है। राजनांदगांव संसदीय क्षेत्र में अपनी सुनिश्चित हार से वे हताश मानसिकता से बयानबाजी कर रहे हैं, जिससे उन्हें बचना चाहिए।

जमीन एवं आवास का लाभ देने कलेक्टर से गुहार

राजनांदगांव (दावा)। डोंगरगढ़ निवासी प्रकाश यादव नामक व्यक्ति ने सोमवार को जिला मुख्यालय पहुंच कर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपते हुए उसे जमीन एवं आवास का लाभ देने की गुहार लगाई है। उसने नगर पालिका अधिकारी पर उसकी गरीबी के सम्बंध में गलत जानकारी देने का आरोप लगाया है तथा कहा है कि विगत 10 वर्षो से वार्ड नं. 6 बधियाटोला में शासकीय जमीन पर झोपड़ी बनाकर वह निवास कर रहा है।

जबकि वहां की आधा से ज्यादा आबादी वहां शासकीय जमीन पर निवासरत है। उन्होंने बताया कि वार्ड नं. 8 के पार्षद पति जयेश सहारे जो कि नगर पालिका में दैनिक वेतन भोगी है। आपसी रंजिश के चलते उन्होंने उनकी झोपड़ी बिना किसी सूचना के जेसीबी से तुड़वा दिया है।

पीड़ित प्रकाश यादव ने कहा कि उसका पुत्र आदित्य यादव के नाम से प्रधानमंत्री आवास है लेकिन वह बचपन से उसके साथ नहीं रहता व अपने दादी मां के पास रहता है। आदित्य को उनकी पैतृक सम्पति भी प्राप्त नहीं है उन्होंने मेहनत मजदूरी कर के जमीन खरीद कर पीएम आवास का लाभ लिया। उसका हमारे साथ रहना-बसना नहीं है। पीड़ित प्रकाश ने कलेक्टर को सौपे ज्ञापन में कहा है कि वह और उसकी पत्नी झोपड़ी तोड़े जाने के बाद आज भी किराए के मकान पर रह रहे है। उन्होंने कहा कि वे शासकीय दफ्तरों के चक्कर काटते काटते परेशान हो गया है। यदि उसे न्याय नहीं मिला तो वे आत्महत्या जैसे कदम उठा लेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा आवास। गरीबों के लिए शासकीय योजनाएं चला रही है वे सिर्फ कागजी न रह जाए इसलिए उस गरीब को जमीन व आवास का लाभ दिलाई जाए।

निर्वाचन कर्तव्य के दौरान मृत्यु होने पर अनुग्रह राशि किया गया जारी

बालोद (दावा)। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ द्वारा लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के दौरान निर्वाचन कर्तव्य पर लगाए गए अधिकारी, कर्मचारी की मृत्यु होने पर छत्तीसगढ़ राज्य अनुग्रह प्रतिकार भुगतान नियम के तहत् 15 लाख रुपए राशि की स्वीकृति प्रदान की गई है। जिसमें बालोद जिले के स्व. श्री खेलन सिंह पटेल की निर्वाचन कर्तव्य के दौरान सड़क दुर्घटना में मृत्यु होने पर वैध उत्तराधिकारी उनकी पत्नी सरोज पटेल के लिए 15 लाख रुपए अनुग्रह प्रतिकार राशि स्वीकृत की गई है। उल्लेखनीय है कि स्व. श्री खेलन सिंह पटेल जिले के पूर्व माध्यमिक शाला ग्राम तरौद में शिक्षक के पद पर पदस्थ थे।

श्री कृष्णा (एयरकुल) में

शानदार भीड़ भरा तीसरा सप्ताह रोजाना 4 खेल

समय : 12, 3, 6 व 9 बजे

बाल्कनी की एडवांस बुकिंग प्रारंभ है।

प्रणव झा प्रॉडक्शन कृत

बी.ए. फाईनल ईयर

छत्तीसगढ़ी भाषा में

कलाकार - मन कुरैशी, दीक्षा जायसवाल, दादू साहू, अंजली चौहान, राजेश बाघमारे, जयंती मनहर आदि

ऑनलाईन बुकिंग paytm & bookmyshow.com

SILVER SCREEN MULTIPLEX

04th May To 09th May 2024

The Fall Guy (Hindi) - 03:30, 06:30 and 09:30 pm | Pyar ke do Naam- 12:30 pm | BA Final Year (C.G) - 12:00, 03:00, 06:00 & 09:00 pm

Sumeet Mandi Mall, Rajnandgaon (C.G) 8085600200

बंजर जमीन पर सोलर पैंट की संभावना को लेकर आरईसी अध्यक्ष विवेक कुमार देवांगन ने सौर ऊर्जा के विस्तार की संभावनाओं को लेकर ली बैठक

रायपुर (दावा)। ग्रामीण विद्युतीकरण निगम लिमिटेड (आर.ई.सी.) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक विवेक कुमार देवांगन (आई.ए.एस.) की अध्यक्षता में छत्तीसगढ़ में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में विकास कार्यों को लेकर क्रेडा के मुख्य कार्यपालन अधिकारी राजेश सिंह राणा (आई.ए.एस.) एवं अन्य अधिकारियों के साथ क्रेडा प्रधान कार्यालय, रायपुर में बैठक आयोजित की गई।

बैठक में सीईओ, क्रेडा द्वारा क्रेडा के अंतर्गत सौर ऊर्जा के क्षेत्र में संचालित विभिन्न योजनाओं यथा सौर सुजला, सोलर हाई मास्ट, बायोगैस, सोलर पंप, शासकीय भवनों में सौर ऊर्जा से ऊर्जीकरण इत्यादि से संबंधित जानकारी दी गई। सी.एम.डी., आर.ई.सी. द्वारा यह बताया गया है कि भारत सरकार रिन्यूवेबल एनर्जी के क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों के लिये कृतसंकल्पित है। इस उद्देश्य को पूरा करने में स्टेट नोडल एजेंसी का विशेष योगदान रहेगा। इसी क्रम में उनके द्वारा फ्लोटिंग सोलर का बिजनेस मॉडल भी तैयार करते हुए आर.ई.सी. लिमिटेड को वित्तीय सहायता हेतु प्रस्ताव प्रेषित करने का सुझाव दिया। उनके द्वारा छत्तीसगढ़ प्रदेश के बंजर भूमि तथा छोटे बड़े झाड़ के जंगलों का उपयोग विकेन्द्रीकृत सोलर पॉवर प्लांट की स्थापना हेतु बंजर भूमि को लीज पर लेकर किया जा सकता है। इस दिशा में महाराष्ट्र सरकार द्वारा किये गये प्रयासों तथा कार्यों का उल्लेख करते हुए कृषक सहायता समूह बनाकर उसी प्रकार का प्रोजेक्ट मॉडल छत्तीसगढ़ में भी क्रियान्वित करने का सुझाव दिया। बायोगैस एवं ऊर्जा सरंक्षण की दिशा में विशेष प्रयास करते हुए जी-20 अंतर्गत निर्धारित सतत् विकास लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में कार्य करने हेतु क्रेडा को प्रेरित करते हुए आर.ई.सी. से समस्त प्रकार का सहयोग आवश्यक होने पर प्रदान किये जाने का आश्वासन दिया गया। प्रत्येक जिलें में 01 मॉडल सौर ग्राम का निर्माण करने की नीति के संबंध में सी.ई.ओ. क्रेडा द्वारा छत्तीसगढ़ में उक्त योजनांतर्गत 100 ग्रामों का चयन कर शत प्रतिशत् सौर ग्राम विकसित करने की कार्यवाही प्रक्रियाधीन होने की जानकारी दी गई। इन 100 ग्रामों में से 50 ग्राम क्रेडा द्वारा ऑफग्रिड मोड पर किये जाने का प्रस्ताव है, शेष 50 ग्राम सी.एस.पी.डी.सी.एल. द्वारा ग्रिड कनेक्टेड मोड पर किये जाने का प्रस्ताव है। सी.ई.ओ., क्रेडा द्वारा आर.ई.सी. को छत्तीसगढ़ के 5500 अविद्युतीकृत छुटे परिवारों के विद्युतीकरण हेतु सी.एस.आर. में प्रेषित प्रस्ताव के संबंध में आवश्यक कार्यवाही कर क्रेडा को राशि उपलब्ध कराने का अनुरोध भी किया गया तथा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु आश्रम/छात्रावासों में स्थापित सौर संयंत्रों के क्षमता उन्नयन के साथ प्रदेश के 1000 ग्रामों में सोलर पॉवर प्लांट के माध्यम से स्ट्रीट लाईट की स्थापना का प्रस्ताव भी रखा गया। उक्त प्रस्तावों पर विचार किये जाने का आश्वासन सी.एम.डी., आर.ई.सी. द्वारा किया गया।

इसके अलावा सी.ई.ओ., क्रेडा द्वारा प्रदेश में सौर ऊर्जा से ऊर्जीकृत ग्रामों में स्थापित सोलर पॉवर प्लांटों के क्षमता उन्नयन का प्रस्ताव आर.ई.सी. को भेजे जाने पर चर्चा की गई। जिस पर सीएमडी, आर.ई.सी. द्वारा आर.डी.एस.एस. फेस-02 के आधुनिकीकरण अंतर्गत संचालन, संधारण अवधि समाप्त होने पर क्रेडा से प्रस्ताव प्राप्त करने हेतु आर.ई.सी. के अधिकारियों को निर्देश दिया गया। अंत में क्रेडा के सर्वांगीण विकास हेतु रिवेन्यू शेयरिंग मॉड्ल पर कार्य करने का सुझाव देते हुए पी.एम. सूर्य घर योजना अंतर्गत वेण्डर के रूप में पंजीकरण का सुझाव भी दिया गया। बैठक में क्रेडा के अधीक्षण अभियंता, सहायक अभियंता तथा आर.ई.सी. लिमिटेड के मुख्य परियोजना प्रबंधक एवं उप परियोजना प्रबंधक भी उपस्थित थे।

शुभांक

अनुमानित

बी. के

3-6-9

147-2 250-7

राजधानी

2-5-7

370-0 230-5

चेतावनी:-इस पत्र में प्रकाशित सर्वत्र शुभ राशियां ज्योतिष एवं ग्रह नक्षत्र के आधार पर धारणा मात्र है। इसका सट्टे आदि से कोई संबंध नहीं है, दुरूपयोग न करें। दुरूपयोग करने पर प्रकाशक की कोई जवाबदारी नहीं होगी। -सम्पादक

स्वामी आत्मानंद छत्तीसगढ़ का गौरव हैं, उनका नाम हटाकर पछताएगी भाजपा : भूपेश बघेल

० भाजपा को अब संतों व धार्मिक व्यक्तियों के नाम से समस्या होने लगी
० निर्णय लेने से पहले डॉ. रमन सिंह से पूछ लीजिए, वे उनके सानिध्य में रहे हैं

रायपुर (दावा)। स्वामी आत्मानंद स्कूल योजना का नाम बदलने की भाजपा सरकार की योजना पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा है कि अगर ऐसा होता है तो यह दुर्भाग्यजनक होगा और ऐसा करके भाजपा समाज में ग़लत संदेश देगी और बाद में पछताएगी. उन्होंने कहा कि राजनीतिक व्यक्तियों के नाम से चल रही योजनाओं का नाम बदलना भाजपा की फ़ितरत रही है पर छत्तीसगढ़ के एक विश्वविख्यात संत और आध्यात्मिक व्यक्ति के नाम पर चल रही योजना का नाम बदलने से पता चलता है कि अब भाजपा को संतों और धार्मिक व्यक्तियों से भी दिक़्क़त होने लगी है।

उन्होंने कहा है कि स्वामी विवेकानंद का रायपुर से नाता रहा है और इसीलिए स्वामी आत्मानंद ने छत्तीसगढ़ में रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद भावधारा का प्रचार प्रसार करने का फ़ैसला किया था. समाजसेवा को उन्होंने सर्वोच्च प्राथमिकता दी थी. श्री बघेल ने कहा कि जब छत्तीसगढ़ में भीषण सूखा पड़ा था तब उन्होंने मंदिर निर्माण के लिए एकत्रित दान राशि को सूखा राहत कार्यों में लगाने का फ़ैसला किया था. वे जीवनपर्यंत स्वामी विवेकानंद के 'दरिद्र नारायण' की अवधारणा का पालन करते रहे और रामकृष्ण मिशन विवेकानंद आश्रम के माध्यम से ग़रीबों और ज़रूरतमंदों की सहायता करते रहे।

पूर्व मुख्यमंत्री बघेल ने कहा है कि स्वामी आत्मानंद आरंभ से ही मेधावी छात्र रहे और नागपुर विश्वविद्यालय में गणित में एमएससी प्रवीणता के साथ पास की थी. उनकी जीवनी में लिखा है कि वे आईएएस (तदर्थ आलोन आईसीएस) के लिए चयनित हो गए थे पर जनसेवा के लिए उन्होंने संन्यास का रास्ता चुना. उनके ज्ञान की वजह से दुनिया भर में उन्हें प्रवचन देने के लिए बुलाया जाता था. छत्तीसगढ़ में हमेशा उन्हें गौरव के रूप से देखा जाता रहा है।

इसीलिए जब वंचित वर्ग के बच्चों के लिए कांग्रेस की सरकार ने अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूल खोलने का निर्णय लिया तो योजना को स्वामी आत्मानंद के नाम पर रखने का फ़ैसला किया गया. अगर भाजपा की सरकार सिर्फ़ इसलिए स्वामी आत्मानंद योजना का नाम बदलना चाहती है क्योंकि यह कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में शुरू हुई योजना है तो यह एक आध्यात्मिक विद्वान व्यक्तित्व के बारे में भाजपा के नेताओं की सोच को दर्शाता है।

भाजपा के नेताओं को भूपेश बघेल ने सलाह दी है कि वे चाहें को नाम बदलने से पहले पूर्व मुख्यमंत्री व वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह जी से भी चर्चा कर लेनी चाहिए क्योंकि डा सिंह विवेकानंद आश्रम के हॉस्टल में रह चुके हैं और स्वामी आत्मानंद के सानिध्य में रहे हैं।

पूर्व मुख्यमंत्री बघेल ने कहा है कि भले ही नाम बदलने की राजनीति भाजपा की विरासत में है पर स्वामी आत्मानंद जी के नाम पर बनी योजना का नाम बदलने से पहले उन्हें विचार कर लेना चाहिए कि इस निर्णय से छत्तीसगढ़ की जनता की भावना किस तरह आहत होगी और भाजपा को बाद में पछताना होगा।

रॉयल किड्स कान्वेंट में आईसीएसई बोर्ड के 10वीं एवं 12वीं के नतीजे घोषित

राजनांदगांव (दावा)। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी आई.सी.एस. ई.बोर्ड ने 10वीं एवं 12वीं के परीक्षा परिणामों की घोषणा कर दी है। आई. सी.एस.ई. बोर्ड से संबंधित जिले की एकमात्र संस्था रॉयल किड्स कान्वेंट में विद्यार्थियों ने प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी अपनी प्रतिभा का डंका बजाया है। कक्षा दसवीं विज्ञान संकाय से प्रथम स्थान पर अथर्व बोंबले द्वितीय स्थान पर हिमेश टंडन तृतीय स्थान पर अनन्या श्रीवास्तव रही, वहीं वाणिज्य संकाय में प्रथम वैभवी खंडेलवाल, द्वितीय राज सिन्हा एवं तृतीय- तहूर अहमद रहे।

कक्षा 12वीं में विज्ञान संकाय(गणित) में माही राजपूत प्रथम, शिवानी चंद्राकर द्वितीय, मुस्कान लोहानी तृतीय स्थान पर रही। विज्ञान संकाय (जीव विज्ञान) में प्रथम प्राची बंजारे, द्वितीय धानी साहू, तृतीय-कृष्णा श्रीवास्तव रहीं। वाणिज्य संकाय में प्रथम राज चौरसिया, द्वितीय काव्या जैन, तृतीय देवांश राजपूत रहे, ह्यूमैनिटीज में अमीर रजा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस अवसर पर शाला की अध्यक्षा श्रीमती डॉ. सविता जे. बी. सिंह, उपाध्यक्ष अशोक चौधरी, प्रशासक संजय बहादुर सिंह, डायरेक्टर सावंत बहादुर सिंह, जन्मेजय बहादुर सिंह, श्रेयांश बहादुर सिंह, एकेडमिक डायरेक्टर एवं प्राचार्य अभिषेक खंडेलवाल, गोपाल साहू, श्रीमती एकता खंडेलवाल, बरसर आई. के. वैष्णव एवं सभी शिक्षक शिक्षिकाओं ने परीक्षा में सफलता प्राप्त करने एवं उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन पर बच्चों को ढेर सारी बधाई दी।

जग्गी हत्याकांड के तीन और अभियुक्तों ने किया सरेंडर

रायपुर (आरएनएस)। राम अवतार जग्गी के हत्याकांड में शामिल अभियुक्त राजू भदोरिया , धर्मेंद्र उर्फ लल्लन, और एक अन्य ने सोमवार को रायपुर न्यायालय के समक्ष सरेंडर किया। ये तीनों अपने परिजनों, वकीलों के साथ मप्र के भिंड से रायपुर पहुंचे थे। अब इस मामले में कुल 27 मे से 10 लोग सरेंडर कर चुके हैं। मामले में पिछले दिनों याह्या ढेबर,चिमन सिंह, सूर्यकांत तिवारी, सहित तीन पूर्व पुलिस अफ़सरों ने सरेंडर किया था।

बता दें कि रामवतार जग्गी हत्याकांड 2003 में अजीत जोगी के शासनकाल में हुआ था। जिसका एफ्आईआर स्वर्गीय विद्याचरण शुक्ल के दबाव में मौदहापारा थाने में दर्ज हुआ था, जिसमें 32 आरोपियों के नाम हत्याकांड में सामने आए थे। सभी आरोपियों को 7 -8 साल के उपरांत हाई कोर्ट से ज़मानत अपील के द्वारा मिली थी जो विगत सप्ताह हाईकोर्ट ने लोअर कोर्ट के फ़ैसले को बरकरार रखते हुए सभी आरोपियों की जमानत रद्द कर दी और सभी आरोपियों को एक हफ्ते का समय सजा हेतु सरेंडर करने का दिया था। जिसमें महापौर के सगे बड़े भाई याहया ढेबर सहित 22 आरोपियों को अपनी सजा पूरी करने के लिए वापस जेल जाना था। लेकिन कोर्ट में दो आरोपी अभय गोयल और आरसी त्रिवेदी द्वारा सरेंडर का समय बढ़ाने का आवेदन दिया था।

लोकसभा निर्वाचन- 2024 : जिला दण्डाधिकारी द्वारा प्रतिबंधात्मक आदेश जारी

० बाहरी राजनैतिक पदाधिकारी जायेंगे जिले से बाहर
० मतदान हेतु शांति व्यवस्था बनाने प्रतिबंधात्मक आदेश

दुर्ग (दावा)। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी ने जिले में लोकसभा निर्वाचन निर्विघ्न, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन संपन्न कराने के उद्देश्य से संपूर्ण दुर्ग जिले की राजस्व सीमा अंतर्गत निर्वाचन वाले क्षेत्रों में दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 144 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए प्रतिबंधात्मक आदेश एक पक्षीय रूप से पारित किया है।

जिला दण्डाधिकारी के आदेशानुसार जिला दुर्ग में बाहरी व्यक्तियों / अभ्यर्थियों / राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों / चुनाव प्रचार में संलग्न कार्यकर्ता जो उस निर्वाचन क्षेत्र का मतदाता नहीं है उन्हें मतदान समाप्ति के 48 घण्टे पूर्व से मतदान समाप्ति तक संबंधित क्षेत्र में आवागमन पर प्रतिबंध लगाया गया है। किसी भी प्रत्याशी या राजनैतिक दल द्वारा सामुहिक भोज / रसोई का आयोजन नहीं किया जाएगा। अतिथि भवनों और धर्मशालों को भी सतर्कता के तहत रखा जाये ताकि यह सुनिश्चित किया जा सकें कि इन्हें राजनीतिक पार्टियों या उम्मीदवारों द्वारा मतदाताओं को किसी भी तरीके से प्रभावित करने के लिए उपयोग नहीं किया जा रहा है। जिला दुर्ग की सीमा के अंदर किसी भी व्यक्ति / समूह या राजनैतिक दलों को लाउड स्पीकर का उपयोग करने की अनुमति नहीं है। मतदान का समय समाप्त होने के 48 घंटे की अवधि के दौरान लाउड स्पीकर का उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित है। कोई भी 05 से अधिक व्यक्तियों का क्षेत्र में एकत्रित होने की अनुमति नहीं दी जावेगी। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आदर्श आचरण संहिता का प्रत्येक राजनैतिक दल या अभ्यर्थी को पूर्णतः पालन करना अनिवार्य होगा।

जिला दण्डाधिकारी का यह आदेश लोकसभा निर्वाचन 2024 में बाहरी सशस्त्र एवं सुरक्षा बल, निर्वाचन कार्य में लगे कर्मी व एम्बुलेंस एवं आपातकालीन सेवा पर लागू नहीं होगा। दुर्ग जिले के राजस्व सीमा में आने वाले सभी सराय, धर्मशालाओं, होटलों तथा लॉज के मालिकों / प्रबंधक अपने सराय, धर्मशाला, होटल एवं लॉज में ठहरने वाले व्यक्तियों की दैनिक जानकारी संबंधित थाना प्रभारी को लिखित में तत्काल प्रस्तुत करेंगे। आदेश के उल्लंघन करने की दशा में भारतीय दण्ड संहिता की धारा 188 के अंतर्गत छः माह तक का कारावास या जुर्माना या दोनों से दण्डनीय होगा। उल्लेखनिय है कि भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली की घोषणा अधिसूचना 16 मार्च 2024 के अनुसार लोकसभा निर्वाचन 2024 हेतु तृतीय चरण में मतदान 07 मई 2024 को सम्पन्न होगा। संसदीय निर्वाचन क्षेत्र 07 दुर्ग में जिला दुर्ग अंतर्गत विधानसभा क्षेत्र 62 पाटन, 63 दुर्ग ग्रामीण, 64 दुर्ग शहर, 65 भिलाई नगर, 66 वैशाली नगर, 67 अहिवारा, तथा आंशिक विधानसभा क्षेत्र 68 साजा एवं 69 बेमेतरा शामिल हैं। मतदान को सुचारू रूप से संचालन एवं मतदान दिवस को कानून व्यवस्था लोक परिशांति आपसी सदभाव करने एवं स्वतंत्र व निष्पक्ष निर्वाचन संपन्न कराने के लिए यह प्रतिबंधात्मक आदेश प्रसारित किया गया है।

राधिका खेड़ा आती हैं तो भाजपा में होगा स्वागत : अजय चंद्राकर

रायपुर (आरएनएस)। पिछले दिनों कांग्रेस के प्रदेश कार्यालय में हुई बदसलूकी से आहत कांग्रेस की नेशनल कोऑर्डिनेटर राधिका खेड़ा ने कल शाम पार्टी के सभी पदों और प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया था। उन्होंने गंभीर आरोप लगाते हुए बताया था कि राम लला दर्शन के कारण उनका विरोध हो रहा था। उन्हें धक्का दिया गया और कमरे में बंद कर दिया गया। वही दूसरी तरफभाजपा ने इस मुद्दे को लपक लिया था। भाजपा के नेताओं ने खुलकर राधिका खेड़ा का समर्थन किया, उन्हें न्याय का भरोसा भी दिया। राधिका ने इस संबंध में पार्टी के बड़े नेताओं को भी खत लिखा था लेकिन किसी तरह की प्रतिक्रिया नहीं मिलने से आहत राधिका खेड़ा ने इस्तीफ़ा दे दिया। वही अब राधिका खेड़ा के भाजपा में शामिल होने की संभावना जताया जा रही हैं। हालाँकि खुद उन्होंने इसके संकेत नहीं दिए हैं।

इस बारे में मीडिया ने विधायक अजय चंद्राकर से चर्चा की हैं। पूछा गया कि क्या राधिका खेड़ा पार्टी प्रवेश कर रही हैं? इसपर चंद्राकर ने कहा हर राष्ट्रवादी का बीजेपी में स्वागत है। जो राष्ट्र को प्रेम करता है उसका बीजेपी में स्वागत है। सुशील आनंद शुक्ला पर एफ्आईआर की मांग पर विधायक अजय चंद्राकर ने कहा कि एफ्आईआर कराया जाना चाहिए, इस पर तुरंत कार्रवाई करना जरूरी हैं।

जमीन दलाल ने आदिवासी ग्रामीणों के साथ ठगी कर बेच दिया पूरा जमीन

० अवैध प्लाटिंग में दलालों का साथ दे रही राजस्व विभाग
० बिना स्थल निरीक्षण किए ही रजिस्ट्रार कर रहा रजिस्ट्री

मोहला (दावा)। मोहला जिले में फिर एक बार जमीन दलाल सक्रिय हो चुके है। मोहला-मानपुर सहित अम्बागढ़ चौकी क्षेत्र में दलाल कृषि भूमि, सीलिंग भूमि, छोटे व बड़े झाड़ के जंगलों को भोले-भाले आदिवासी लोगो से कम कीमत पर खरीद कर अवैध प्लाटिंग कर अधिक कीमत में बेचा जा रहा है और सबसे चौकने वाली बात यह है कि दलालों के कारनामों में साथ स्वयं राजस्व विभाग के अधिकारी दे रहे है जिनकी भूमिका भी संदेह के दायरे में है। इन्हीं कारनामों में मोहला विकासखण्ड के ग्राम धोबेदंड में एक आदिवासी परिवार जमीन दलालों के ठगी का शिकार हो गया। भूमि स्वामित्व श्रवण कोर्राम ने खुद के साथ हुए ठगी को लेकर जिला पुलिस अधीक्षक से लिखित शिकायत की है जिसमें बताया है कि श्रवण कोर्राम और उसके परिवार के नाम पर ग्राम धोबेदंड के खसरा नंबर 148 में 6.50 एकड़ जमीन था, जिसमें परिवारिक समस्या के चलते 2.50 एकड़ जमीन को बेचना था। मोहला के जाने माने जमीन दलाल संजय और रेमंत व उसके सहयोगियों ने 2.50 एकड़ का सौदा किया और बड़ी चालाकी से पूरी जमीन को बेच दिया जबकि अभी वर्तमान में श्रवण व उसके परिवार के पास सिर्फ 32 डिसमिल जमीन बचा दिखा रहा है। 2.50 एकड़ जमीन के सौदे का पूरा पैसा भी अभी तक नहीं दिया गया है व जमीन दलाल ने किसान परिवार के सभी सदस्यों की जरुरी कागजात - पर्चा पट्टा, आधार कार्ड, बैंक पास बुक अभी तक अपने पास रखा है जिसे अभी तक नही लौटाया गया है। इस पूरे मामले को लेकर श्रवण कोर्राम ने कलेक्टर को आवेदन सौंपा है जिस पर कलेक्टर मोहला मानपुर अम्बागढ़ चौकी ने एसडीएम मोहला को जांच का आदेश दिया है जो मामला अभी राजस्व विभाग मोहला में दर्ज है।

मतदान दिवस 07 मई को सामान्य अवकाश घोषित

कोरबा (आरएनएस)। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ रायपुर के निर्देशानुसार जिले में 'लोकसभा निर्वाचन 2024' अन्तर्गत 'संसदीय निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक-04 कोरबा' के लिए होने वाले मतदान तिथि 07 मई मंगलवार को सार्वजनिक अवकाश तथा सामान्य अवकाश घोषित किया गया है।

कांग्रेस विलुप्ति की ओर बढ़ रही : मुख्यमंत्री साय

राधिका खेड़ा मामले में सीएम ने किया ट्वीट

रायपुर, 06 मई (आरएनएस)। कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता राधिका खेड़ा के पार्टी से इस्तीफे पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने ट्वीटर अपनी पोस्ट करते हुए लिखा-पिछले कुछ दिनों से यह खबर चर्चा में है कि राष्ट्रीय स्तर की महिला प्रवक्ता कांग्रेस भवन में अपने लोगों द्वारा अपमानित हुई। उनका रो-रो कर बुरा हाल हो गया और कांग्रेसी नारी न्याय की बात करते हैं। उसके कथनी और करनी में फर्क है। जिसके कारण आज कांग्रेस की दुर्गति हो रही है। देश में 55-60 साल तक एकछत्र राज करने वाले आज विलुप्ति की ओर बढ़ते जा रहे हैं। गौरतलब है कि राधिका खेड़ा ने कांग्रेस पार्टी से इस्तीफ़ा दे दिया है। उन्होंने कहा कि आज अत्यंत पीड़ा के साथ पार्टी की प्राथमिक सदस्यता त्याग रही हूं। साथ ही अपने पद से इस्तीफ़ा दे रही हूं। उन्होंने कहा कि हां, मैं लड़की हूं और लड़ सकती हूं और मैं अब वही कर रहीं हूं। राधिका ने कहा कि अपने और देशवासियों के न्याय के लिए मैं निरंतर लड़ती रहूंगी। राधिका खेड़ा ने अपने इस्तीफे में लिखा कि हर हिंदू के लिए प्रभु श्रीराम की जन्मस्थली पवित्रता के साथ बहुत मायने रखती है। रामलला के दर्शन मात्र से जहां हर हिंदू अपना जीवन सफल मानता है वहीं कुछ लोग इसका विरोध कर रहे हैं। राधिका ने लिखा कि मैंने जिस पार्टी को अपने 22 साल से ज्यादा दिए। मीडिया विभाग में पूरी ईमानदारी से काम किया। आज वहां ऐसे ही तीव्र विरोध का सामना मुझे करना पड़ा है, क्योंकि मैं अयोध्या में रामलला के दर्शन करने से खुद को रोक नहीं पाई।

नाबालिग बालिका से छेड़छाड़ करने वाले आरोपी गिरफ्तार

राजनांदगांव (दावा)। घुमका पुलिस ने अपने थाना क्षेत्र में नाबालिग बालिका से छेड़छाड़ करने वाले आरोपी को धर दबोचा है। आरोपी का नाम गोविंदा कोसरे पिता जनकर लाल कोसरे उम्र 27 साल निवासी गिधवा बताया जाता है।

पुलिस ने बताया कि सोमवार 06 म ई को एक नाबालिग बालिका ने लिखित आवेदन दिया कि आरोपी गोविंदा कोसरे निवासी गिधवा के द्वारा दिनांक घटना 29 अप्रैल व 4 मई की मध्य रात्रि उसके के घर के छत पर जाकर छेडछाड कर जान से मारने की धमकी दिया है व जब वह रिपोर्ट लिखाने पुलिस थाना जा रही थी तब पुनः आरोपी द्वारा पीडिता को बलपूर्वक रोका गया था। पुलिस ने पीडिता के लिखित आवेदन पर सोमवार 6 मई को थाना घुमका में आरोपी गोविंदा कोसरे के विरूद्ध अपराध क्रमांक 69/2024 धारा 354, 354(क), 354(घ), 456, 506, 509, 341 भादवि. 8,10,12 पाक्सों एक्ट कायम कर विवेचना में लिया गया।

प्रकरण नाबालिग बालिका एवं महिला संबंधित होने से उक्त घटना क्रम की सूचना वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को दी गई जिस पर प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा, अनुविभागीय पुलिस अधिकारी डोंगरगांव दिलीप सिसोदिया के निर्देशन में थाना प्रभारी घुमका निरीक्षक विनय कुमार पम्मार के नेतृत्व में तत्काल घुमका पुलिस के द्वारा आरोपी को ग्राम गिधवा से सोमवार 06 मई को गिरफतार किया गया और जिला न्यायालय के समक्ष रिमाण्ड हेतु पेश किया गया है। उक्त कार्यवाही में थाना घुमका से थाना प्रभारी निरीक्षक विनय कुमार पम्मार, उप निरीक्षक विक्रात सुरेश कुमार सिंह, खेदूराम उइके कोदूराम नागवंशी, विजय राज सिंह, आर. साहू, गोवर्धन कंवर, केयूर भूषण, यशवंत बंजारे की भूमिका सराहनीय रही।

भू-संपदा (विनियमन और विकास) अधिनियम के प्रावधानों के उल्लंघन पर रेरा द्वारा प्रमोटर्स पर 18.82 लाख रुपए का जुर्माना

रायपुर (दावा)। छत्तीसगढ़ भू-संपदा विनियामक प्राधिकरण (रेरा) द्वारा भू-संपदा (विनियमन और विकास) अधिनियम के प्रावधानों के उल्लंघन पर रेरा द्वारा रियल स्टेस्ट प्रोजेक्ट्स प्रमोटर्स पर 18.82 लाख रूपए का जुर्माना लगाया गया है। गौरतलब है कि भू-संपदा (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 की धारा-4 (2) (1)(डी) में वर्णित प्रावधानों के अनुसार सभी प्रमोटर्स को उनके प्रत्येक रियल एस्टेट प्रोजेक्ट्स में आबंटितियों से प्राप्त राशि एवं उपयोग रेरा विनिर्दिष्ट खाते के माध्यम से नियमानुसार करना अनिवार्य है।

रियल एस्टेट प्रोजेक्ट्स जिन पर जुर्माना लगाया गया है, उनमें व्ही.आई.पी.सिटी. सेक्टर-01 एक्सटेंशन, व्हीआई पी.सिटी, सेक्टर-02, व्ही. आई पी. सिटी, सेक्टर-01, व्ही.आई.पी सिटी सेक्टर-01 एक्सटेंशन, व्ही.आई.पी.सिटी, सेक्टर-04 ग्राम-सड्डू, जिला-रायपुर के प्रमोटर्स-आर पी इन्फ्राटेक प्रा.लि. द्वारा राकेश पाण्डेय, पता-व्ही.आई.पी. सिटी, ग्राम सड्डू, जिला-रायपुर द्वारा छत्तीसगढ़ रेरा में पंजीयन क्रमाक पीसीजीआरई आरए 230618000304, पीसीजीआरई आरए 270618000353, पीसीजीआरई आरए 230618000310, पीसीजीआरई आरए 260618000341, पीसीजीआरई आरए 260618000330 के माध्यम से वर्ष 2018 में पंजीकृत कराया गया है।

रजिस्ट्रार, छग रेरा द्वारा 17 जनवरी 2024 के प्रतिवेदन के अनुसार यह पाया गया कि संबंधित प्रमोटर द्वारा अधिनियम के प्रावधानों तथा प्राधिकरण के निर्देशों की अवहेलना करते हुए, रेरा विनिर्दिष्ट खाता का नियमानुसार संचालन नहीं किया जा रहा है। प्राधिकरण द्वारा अधिनियम की धारा-60 के अतर्गत दिनांक 11/03/2024 को अनावेदक के विरूद्ध प्रकरण क्रमांक एम-कॉम-2024-02337, 02338, 02339, 02340, 02343 संधारित किया गया।

प्रकरण में विधिवत् सुनवाई करने के फलस्वरूप प्रोजेक्ट्स व्ही.आई.पी.सिटी. सेक्टर-01 एक्सटेंशन, व्ही.आई. पी सिटी, सेक्टर-02, व्ही.आई.पी. सिटी, सेक्टर-01, व्ही.आई.पी. सिटी. सेक्टर-01 एक्सटेंशन, व्ही.आई.पी. सिटी, सेक्टर-04 ग्राम सड्डू, जिला रायपुर (छ.ग.) के प्रमोटर्स-आर.पी इन्फ्राटेक प्रा.लि. द्वारा राकेश पाण्डेय, को उक्त कृत्य भू-संपदा (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 की धारा 60 के प्रावधानों का उल्लंघन किये जाने के कारण क्रमशः राशि 2,17,000, 3,23,000, 3,60,000, 2,47,000, 7,35,000 रूपये शास्ति अधिरोपित करते हुये आदेश पारित किया गया है। अनावेदक द्वारा रेरा विनिर्दिष्ट खाता का संचालन नहीं किये जाने के कारण अनावेदक के विरूद्ध कुल रूपये 18,82,000 का शास्ति अधिरोपित किया गया है।

मतदाता फोटो पहचान पत्र के अतिरिक्त 12 वैकल्पिक फोटोयुक्त दस्तावेज दिखाकर भी मतदाता कर सकेंगे मतदान

रायगढ़, 06 मई (आरएनएस)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा निर्वाचन-2024 के अंतर्गत तीसरे चरण में 7 मई 2024 को रायगढ़ संसदीय निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 02 के लिए मतदान होगा। सभी मतदान केन्द्रों में सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे।

छत्तीसगढ़ लोकसभा निर्वाचन-2024 अंतर्गत भारत निर्वाचन आयोग की ओर से सभी मतदाताओं को निर्वाचक फोटो पहचान पत्र जारी किए गए है। आयोग सभी मतदाताओं से अपेक्षा करता है कि वे मतदान स्थल पर अपना मत देने से पहले अपनी पहचान सुनिश्चित करने के लिए आयोग की ओर से जारी निर्वाचक फोटो पहचान पत्र दिखाएंगे।

यदि कोई निर्वाचक फोटो पहचान पत्र नहीं दिखा पाता है तो भारत निर्वाचन आयोग द्वारा उनके लिए 12 वैकल्पिक दस्तावेज भी अनुमत किए गए है। ऐसे निर्वाचक जो अपना निर्वाचक फोटो पहचान पत्र प्रस्तुत नहीं कर पाते है, उन्हें अपनी पहचान स्थापित करने के लिए निम्नलिखित 12 वैकल्पिक फोटो पहचान दस्तावेजों में से कोई एक प्रस्तुत करना होगा जैसे आधार कार्ड, मनरेगा जाब कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, भारतीय पासपोर्ट, फोटोयुक्त पेंशन दस्तावेज, केंद्र/राज्य सरकार/लोक उपक्रम/पब्लिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा अपने कर्मचारियों को जारी किए गए फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, बैंकों/डाकघरों द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक, एनपीआर के अंतर्गत आरजीआई द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड, श्रम मंत्रालय की योजना के अंतर्गत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, सांसदों/विधायकों/विधान परिषद सदस्यों को जारी किए गए सरकारी पहचान पत्र और भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा दिव्यांगजनों को जारी यूनिक डिसएबिलिटी आईडी (यूडीआईडी) कार्ड शामिल है। मतदाता इनमें से कोई भी दस्तावेज प्रस्तुत कर मतदान कर सकेंगे। प्रवासी निर्वाचकों को जो अपने पासपोर्ट में विवरणों के आधार पर निर्वाचक नामावालियों में पंजीकृत है, मतदान केंद्र में केवल उनके मूल पासपोर्ट (तथा अन्य कोई पहचान दस्तावेज नहीं) के आधार पर ही पहचाना जाएगा।

० रायगढ़ संसदीय क्षेत्र के लिए मतदान 7 मई को
० सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक मतदाता अपने मताधिकार का कर सकेंगे प्रयोग

अनमोल दावा

"सफलता जिस ताले में बंद रहती है वह दो चाबियों से खुलती है। एक कठिन परिश्रम और दूसरा दृढ़ संकल्प ।

चीन के प्रभाव में नेपाल की उकसावे वाली जिद, संप्रभुता का अतिक्रमण तकलीफदेह

भारत के लिए यह तकलीफदेह इसलिए भी है कि सदियों से नेपाल के साथ मधुर रिश्ते रहे हैं। इसी वजह से नेपाल के सबसे विकट समय में भी भारत ने उसका साथ दिया है, हर स्तर पर आगे बढ़ कर मदद पहुंचाई है। पड़ोसी देश नेपाल ने पिछले कुछ समय से भारत को लेकर जैसा रवैया अख्तियार किया हुआ है, उससे साफ है कि वह चीन के प्रभाव में कुछ अवांछित फैसले भी कर रहा है। हालांकि उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि भारत जैसे पड़ोसी के संप्रभु क्षेत्र में अगर वह दस्तावेजी तौर पर नाहक दखलअंदाजी करने की कोशिश करता है तो वह एक तरह से उकसावे की कार्रवाई है। गौरतलब है कि नेपाल सरकार ने सौ रुपए के नए नोट छापने का फैसला किया है, जिस पर देश का एक नक्शा भी होगा। किसी भी देश का यह अपना फैसला होता है कि वह अपनी मुद्रा पर क्या प्रतीक चिह्न देता है।

मगर उसमें अगर किसी पड़ोसी देश की संप्रभुता के अतिक्रमण का संकेत दिखेगा तो यह निश्चित तौर पर आपत्तिजनक है। नेपाल ने सौ रुपए के नोट पर जो नक्शा छापने का फैसला किया है, उसमें लिपुलेख, लिंपियाधुरा और कालापानी इलाके भी शामिल हैं, जबकि ये भारत के सीमा क्षेत्र में हैं। पिछले चौंतीस वर्षों से वह भारत के इन तीनों क्षेत्रों को अपना बता कर विवाद को जटिल बनाता रहा है।

भारत के लिए यह तकलीफदेह इसलिए भी है कि सदियों से नेपाल के साथ मधुर रिश्ते रहे हैं। इसी वजह से नेपाल के सबसे विकट समय में भी भारत ने उसका साथ दिया है, हर स्तर पर आगे बढ़ कर मदद पहुंचाई है। अफसोस की बात है कि नेपाल भारत के साथ अपने पुराने संबंधों की गरिमा को ताक पर रख कर अब कूटनीतिक संवेदनशीलता का ध्यान रखना भी जरूरी नहीं समझ रहा है।

नेपाल की ओर से यह विवाद करीब चार वर्ष पहले भी उठा था, जब उसने देश के नए राजनीतिक और प्रशासनिक नक्शे की मंजूरी के लिए संसद में पेश किया था। सवाल है कि जो इलाके लंबे समय से और आधिकारिक तौर पर भारत का हिस्सा रहे हैं, उन पर दावा जता कर नेपाल क्या हासिल करना चाहता है! अभी तक भारत, नेपाल के इस रुख पर तीखी प्रतिक्रिया देकर शांत रह जाता रहा है। मगर अब उसे इस मसले के हल के लिए अपनी ओर से ठोस पहल करने की जरूरत है।

प्रांतीय राजनीति की चुनौती

भाजपा के रणनीतिकारों को यह बात समझ नहीं आई है कि नब्बे के दशक के बाद इस देश की राजनीति एकदम बदल गई है।

नरेंद्र मोदी और उनकी प्रचार मंडली ने सरकार या भाजपा की जगह 'मोदी की गारंटी' और 'चार सौ पार' जैसे नारों से अपने समर्थकों को उत्साहित करने की कोशिश की है। नए नारे या जुमले गढ़ने में प्रधानमंत्री मोदी का जवाब नहीं है। पहले भी कई बार ऐसे नारे गढ़े गए थे लेकिन उनके पूरा न होने या चुनाव हारने के बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को कहना पड़ा था कि ये तो उनके कार्यकर्ताओं को उत्साहित और प्रेरित करने के लिए था।

आज यह सवाल सबसे मौजूं है कि भाजपा को चार सौ सीटें आएंगी कहां से। जो कोई राज्यवार हिसाब लगाता है, वह सारी उदारता के बावजूद 272 पार नहीं कर पाता क्योंकि उत्तर और पश्चिम के राज्यों में भाजपा ने पिछली बार लगभग सारी सीटें जीती थीं और दक्षिण तथा पूरब में बहुत कम। इस बार दक्षिण और पूरब में भी सीटें बढ़ने की जगह घटती या कड़ी चुनौती में उलझी लग रही हैं और उत्तर तथा पश्चिम में भी। वहां भाजपा के लिए सीटें बढ़ाने की गुंजाइश तो नहीं ही बची है। भाजपा को अपने सौ से ज्यादा सांसदों का टिकट काटना पड़ा है और जगह-जगह बगावत है। कई मंत्री बेटिकट रह गए हैं। दर्जन भर मुद्दों की रस्साकशी के बाद मोदी खुद मुद्दा बन गए हैं, सारा चुनाव उन्होंने अपने ऊपर ओढ़ लिया है। भाजपा के चुनाव घोषणा पत्र में नरेंद्र मोदी का जिक्र सबसे ज्यादा 65 बार आया है।

काफी लंबे अनिश्चय के बाद अचानक 'इंडिया' गठबंधन जब उभर कर आया, तो मोदी या भाजपा की सारी कवायद उसे बदनाम करने, तोड़ने और एक 'शेर और जाने कितने गीदड़ों' की लड़ाई बताने की रही। जल्दी ही यह समझ आया कि लीडर के दावे और सारे प्रचार के बावजूद विविधता भरे इस देश में गठबंधन के बगैर काम नहीं चलने वाला है, तो लाज-लिहाज छोड़कर जाने किस-किस दल या नेता के साथ गठबंधन किया गया, एनडीए को पुनर्जीवित करने का नाटक किया गया। कई राज्यों में स्थानीय स्तर पर मजबूत क्षेत्रीय दल के खिलाफ साम-दाम-दंड-भेद अपनाने के बावजूद भाजपा की बात नहीं बनी। इसके बावजूद यही लगता है कि भाजपा के रणनीतिकारों को यह बात समझ नहीं आई है कि नब्बे के दशक के बाद इस देश की राजनीति एकदम बदल गई है।

भले इंदिरा गांधी की हत्या के बाद 1985 में कांग्रेस को 413 सीटें मिली थीं, लेकिन उसे अपना कार्यकाल पूरा करना भारी पड़ गया। जीत के इसी गुमान में कांग्रेस ने अपने चंडीगढ़ अधिवेशन में ''एकला चलो'' का नारा दिया था जबकि वी.पी. सिंह ने अपने मुट्ठडी भर साथियों के साथ अलग किस्म की राजनीति की और भाजपा तथा कम्युनिस्ट पार्टियों को मजबूर कर दिया कि वे उनकी सरकार को समर्थन दें। दुर्भाग्य से, यह प्रयोग लंबा नहीं चला लेकिन कांग्रेस और भाजपा दोनों को गठबंधन राजनीति और क्षेत्रीय दलों की उभरती ताकत का अंदाजा हो गया।

पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने क्षेत्रीय दलों को गलत ढंग से पटाकर अल्पमत की सरकार चलाई, लेकिन अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा ने अनुच्छेद 370 हटाने, राम मंदिर का निर्माण और कॉमन सिविल कोड जैसे अपने बुनियादी मसलों को ताक पर रखकर नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस (एनडीए) बनाया और राज किया। तब यह नई सियासी बात थी। देश में क्षेत्रीय दलों की राजनीति निरंतर प्रबल होती गई।

नेहरू के समय की कांग्रेस के बारे में माना जाता था कि वह सामाजिक स्तर पर एक ''रेनबो कोलिशन'' बनाकर चलती थी। प्रसिद्ध राजनीति विज्ञानी रजनी कोठारी इसे नेहरू मॉडल कहते हैं, हालांकि तब भी पूर्वोत्तर, तमिलनाडु और पंजाब में भिन्न स्वर सुनाई देने लगे थे लेकिन कुल मिलाकर कांग्रेस सारे समाज को साथ रखती थी। धीरे-धीरे वह ब्राह्मण, दलित और मुसलमान की पार्टी बनने लगी और मध्य जातियां समाजवादी आंदोलन के प्रभाव में उससे छिटकती गईं। कालांतर में उन्होंने अपनी मजबूत पार्टियां बनाईं। आज उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी, बिहार में राष्ट्रीय जनता दल, हरियाणा में लोकदल, पंजाब में अकाली दल, कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस- पीडीपी, ओडिशा में बीजद, पश्चिम बंगाल में टीएमसी और दक्षिण की तो पूरी राजनीति ही क्षेत्रीय दलों के कब्जे में आ चुकी है।

शुरू में कांग्रेस और कथित राष्ट्रीय पार्टियां इन आंदोलनों/दलों को देश की एकता के लिए खतरा बताती थीं, इनके नेताओं को जातिवादी परिवारवादी बताती रहीं, लेकिन वी.पी.सिंह वाले प्रयोग ने यह जातिवादी परिवारवादी बताती रहीं, लेकिन वी. पी. सिंह वाले प्रयोग ने यह उप्पा हटा दिया। देश में पहली बार एक मुसलमान मुफ्ती मोहम्मद सईद को गृह मंत्री ही नहीं बनाया गया, बल्कि अंग्रेजी न जानने वाले देवीलाल उप-प्रधानमंत्री बने। फिर तो रक्षा मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय, रेलवे मंत्रालय समेत सारे महत्वपूर्ण मंत्रालयों पर क्षेत्रीय सूरमा आए और उन्होंने मजे से बढ़िया शासन किया। 'कुशासन और जंगल राज' के लिए बदनाम लालू यादव का रेल मंत्रालय प्रबंधन हार्वर्ड के मैनेजमेंट कोर्स में शामिल हुआ। कई फैसले (खासकर क्षेत्रीय दल से जुड़े मंत्रियों को लेकर) दिल्ली की जगह चेन्नै, लखनऊ और पटना में होने लगे। देश टूटने का खलस और देशद्रोही वाला तमगा जाने कहां बिला गया। करुणानिधि, जयललिता और प्रकाश सिंह चादल जैसे लोग भले दिल्ली नहीं आए, लेकिन दिल्ली की राजनीति में उनकी धमक बढ़ी।

क्षेत्रीय दलों की धमक बढ़ने के पीछे संसद में उनकी उपस्थिति का बहना मुख्य कारण था। उनके मजबूत समर्थकों ने जोखिम लेकर भी उनके उम्मीदवारों को संसद में भेजा। जाहिर तौर पर ऐसा राज्य में मजबूती आने के बाद हुआ। एक समय तो ऐसा आया कि चुनाव आयोग की परिभाषा से राष्ट्रीय मानी जाने वाली सारी पार्टियों के सांसदों की कुल संख्या क्षेत्रीय दलों के सांसदों से कम होने लगी। वोट प्रतिशत में वे कब का पचास फीसदी पार कर गई थीं।

इधर दो चुनाव से और पुलवामा की घटना के बाद मोदी तथा भाजपा के आसमान पर पहुंचने पहुंचने के बाद यह हुआ कि राष्ट्रीय पार्टियों के सांसदों की संख्या फिर आधे से ऊपर हो गई (हालांकि क्षेत्रीय दलों की हिस्सेदारी भी 42-43 फीसदी है) लेकिन मत प्रतिशत में पिछली लोकसभा में भी क्षेत्रीय दल ऊपर थे। इस बार मोदी और मीडिया के सारे शोर-शराबे के बावजूद अगर पहली नजर में और राज्यवार गिनती में भाजपा का चार सौ या 370 सीटों के आसपास पहुंच पाना असंभव सा लगता है तो उसका कारण क्षेत्रीय दलों की निरंतर बनी मजबूती है। बात इतनी भर नहीं है। क्षेत्रीय दल समाज और राजनीति की जो जरूरत पूरी करते हैं, उसे पूरा करना किसी राष्ट्रीय दल के वश की बात नहीं है। हिंदू, अगड़ा, पुरुष, शहरी और कॉरपोरेट हितों का रक्षक होना अगर भाजपा का मुख्य चरित्र बन गया है तो पिछड़ा, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, गरीब और ग्रामीण जनता ही क्षेत्रीय दलों का आधार है। भाजपा जैसे-जैसे ताकतवर हुई है, ज्यादा

बेशर्मी से मुसलमानों से आंख फेरती जा रही है। भाजपा ने हल्के एहसास के साथ बीजद, अन्नाद्रमुक, भारत देशम पार्टी और अकाली दल के साथ गठबंधन बनाने का असफल प्रयास किया। तमिलनाडु में उसका घुसना मुश्किल हो गया तो आंध्र में उसे चंद्रबाबू नायडु का सहारा लेना पड़ा है जिन्हें केंद्रीय एजेंसियों के माध्यम से पचहत्तर दिन जेल में रखा गया था। जेल से नेताओं को तोड़ने का प्रयास तो पूरे देश में हो रहा है, लेकिन झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल की गिरफ्तारी ने हवा बदल दी। अदालत ने अगर चुनावी बॉन्ड पर भाजपा के भ्रष्टाचार को उजागर किया तो इन गिरफ्तारियों ने हवा बदली है। पहला लक्षण तो मुरझाए 'इंडिया' गठबंधन में जान आ जाना है। कांग्रेस भी अब 'एकला चलो' का नारा छोड़कर काफी आगे आ चुकी है। अब तो वह देश भर में जातिवार जनगणना और आरक्षण की सीमा पचास फीसदी से भी ऊपर करने की मांग कर रही है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और टिप्पणीकार हैं। विचार निजी ठंप्पा हटा दिया। देश में पहली बार एक मुसलमान मुफ्ती मोहम्मद सईद को गृह मंत्री ही नहीं बनाया गया, बल्कि अंग्रेजी न जानने वाले देवीलाल उप-प्रधानमंत्री बने। फिर तो रक्षा मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय, रेलवे मंत्रालय समेत सारे महत्त्वपूर्ण मंत्रालयों पर क्षेत्रीय सूरमा आए और उन्होंने मजे से बढ़िया शासन किया। 'कुशासन और जंगल राज' के लिए बदनाम लालू यादव का रेल मंत्रालय प्रबंधन हार्वर्ड के मैनेजमेंट कोर्स में शामिल हुआ। कई फैसले (खासकर क्षेत्रीय दल से जुड़े मंत्रियों को लेकर) दिल्ली की जगह चेन्नै, लखनऊ और पटना में होने लगे। देश टूटने का खलस और देशद्रोही वाला तमगा जाने कहां बिला गया। करुणानिधि, जयललिता और प्रकाश सिंह चादल जैसे लोग भले दिल्ली नहीं आए, लेकिन दिल्ली की राजनीति में उनकी धमक बढ़ी।

क्षेत्रीय दलों की धमक बढ़ने के पीछे संसद में उनकी उपस्थिति का बहना मुख्य कारण था। उनके मजबूत समर्थकों ने जोखिम लेकर भी उनके उम्मीदवारों को संसद में भेजा। जाहिर तौर पर ऐसा राज्य में मजबूती आने के बाद हुआ। एक समय तो ऐसा आया कि चुनाव आयोग की परिभाषा से राष्ट्रीय मानी जाने वाली सारी पार्टियों के सांसदों की कुल संख्या क्षेत्रीय दलों के सांसदों से कम होने लगी। वोट प्रतिशत में वे कब का पचास फीसदी पार कर गई थीं।

इधर दो चुनाव से और पुलवामा की घटना के बाद मोदी तथा भाजपा के आसमान पर पहुंचने पहुंचने के बाद यह हुआ कि राष्ट्रीय पार्टियों के सांसदों की संख्या फिर आधे से ऊपर हो गई (हालांकि क्षेत्रीय दलों की हिस्सेदारी भी 42-43 फीसदी है) लेकिन मत प्रतिशत में पिछली लोकसभा में भी क्षेत्रीय दल ऊपर थे। इस बार मोदी और मीडिया के सारे शोर-शराबे के बावजूद अगर पहली नजर में और राज्यवार गिनती में भाजपा का चार सौ या 370 सीटों के आसपास पहुंच पाना असंभव सा लगता है तो उसका कारण क्षेत्रीय दलों की निरंतर बनी मजबूती है। बात इतनी भर नहीं है। क्षेत्रीय दल समाज और राजनीति की जो जरूरत पूरी करते हैं, उसे पूरा करना किसी राष्ट्रीय दल के वश की बात नहीं है। हिंदू, अगड़ा, पुरुष, शहरी और कॉरपोरेट हितों का रक्षक होना अगर भाजपा का मुख्य चरित्र बन गया है तो पिछड़ा, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, गरीब और ग्रामीण जनता ही क्षेत्रीय दलों का आधार है। भाजपा जैसे-जैसे ताकतवर हुई है, ज्यादा बेशर्मी से मुसलमानों से आंख फेरती जा रही है। भाजपा ने हल्के एहसास के साथ बीजद, अन्नाद्रमुक, भारत देशम पार्टी और अकाली दल के साथ गठबंधन बनाने का असफल प्रयास किया। तमिलनाडु में उसका घुसना मुश्किल हो गया तो आंध्र में उसे चंद्रबाबू नायडु का सहारा लेना पड़ा है जिन्हें केंद्रीय एजेंसियों के माध्यम से पचहत्तर दिन जेल में रखा गया था। जेल से नेताओं को तोड़ने का प्रयास तो पूरे देश में हो रहा है, लेकिन झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल की गिरफ्तारी ने हवा बदल दी। अदालत ने अगर चुनावी बॉन्ड पर भाजपा के भ्रष्टाचार को उजागर किया तो इन गिरफ्तारियों ने हवा बदली है। पहला लक्षण तो मुरझाए 'इंडिया' गठबंधन में जान आ जाना है। कांग्रेस भी अब 'एकला चलो' का नारा छोड़कर काफी आगे आ चुकी है। अब तो वह देश भर में जातिवार जनगणना और आरक्षण की सीमा पचास फीसदी से भी ऊपर करने की मांग कर रही है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और टिप्पणीकार हैं। विचार निजी हैं)

कविता

।। ध्वजा पताका ।।

गांव गली शहर नगरिया, जन-जन मन हरसाइस ।
दिसा-दिसा धजा पताका, राम लला जब आइस ।।
इहि दिन के आसा मा, साँसा कतको माटी महके।
उछाह मंगल स्वागत सिरतो,फहर-फहर फहराइस।।
झांझ मंजीरा ढोल तासा,करिन मंगल आरती गान।
धरती अगास छूवय पताका,धरम करम अभिमान।।
चिनहा भर नोहे येहा संगी, देव रक्षा दया असीस।
सत सील के धजा परस, नित दरस करय गुनमान।।
बिपत नसाये सुख बरसाये, साहित भगवान होथे।
दरस करय माथ नवाये, देव कस दया निधान होथे।।
खूंदावय चिरावय झन कभू, उड़ावय झन येती तेती।
धजा पताका मान होथे, टूटय गिरय हिनमान होथे।।

रोशन साहू (मोखला) मो. 7999840942

विचार सरिता

मन में बसे हैं राम : 141 प्रजा हितैषी सीताजी के, विवाह के बाद मिथिला छोड़कर अवध चले जाने की पीड़ा

डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय

माता सुनयना ने भाव विह्वल होते हुए अश्रुपूर्ण आंखों से श्री राम की ओर संकेत किया और श्री राम आगे बढ़कर उनके दूसरे कंधे से लग गए। माता ने दोनों को देर तक लाड़ दुलार किया।

''हां राम! सीता के विवाह से मैंने अपने पुत्र के रूप में राम को प्राप्त कर लिया है।'' महारानी सुनयना ने कहा।

इसी तरह से चारों पुत्रियों और उनके चारों वरों ने अपने-अपने माता-पिता, अन्य संबंधियों और सखियों से भावपूर्ण भेंट की। विदाई के समय मिथिला के प्रत्येक नर - नारी की आंखों में आंसू हैं। यह मिथिला राज परिवार का अपनी प्रजा से आत्मिक संबंधों का परिचायक है। महाराज जनक से लेकर राजकुमारी सीता और अन्य राजकुमारी तक प्रजा के सुख-दुख में सहभागी बनते हैं।अगर कभी वर्षा नहीं हुई और अकाल की स्थिति बनी तो महाराज जनक न सिर्फ प्रजा को लगाए जाने वाला न्यूनतम कृषि कर भी माफ कर देते हैं, बल्कि स्वयं अपनी ओर से प्रत्येक पीड़ित परिवार को आर्थिक और अन्नादि की सहायता भी उपलब्ध कराते हैं। स्वयं महाराज दशरथ ने भी कठोर अनुशासन और संयमित दिनचर्या का पालन किया है। राजकुमारी सीता स्वयं राज्य के विभिन्न प्रांतो का भ्रमण करती रही हैं और प्रजा की समस्याओं का स्वयं ज्ञान प्राप्त कर राजधानी लौटने पर महाराज दशरथ को अवगत कराती रही हैं।

राजप्रासाद में रहते हुए भी महाराज जनक और उनके परिजनों का जीवन स्तर भव्य किंतु सादगी से पूर्ण है और वे प्रजा के लिए आदर्श हैं।

''अब हमारा क्या होगा राजकुमारी? विपत्ति की घड़ी में हमारे साथ रहने के लिए कौन खड़ा होगा?'' एक वृद्ध महिला ने राजकुमारी सीता से कहा।

''मैं अभी भी आपके साथ हूं माते और महाराज जनक तथा उनका संपूर्ण प्रशासन आप सब की सुख सुविधाओं के साधनों की आपूर्ति के लिए और आपत्ति के समय आपकी रक्षा के लिए पूर्व की तरह ही तत्पर रहेगा।'' राजकुमारी सीता ने उस वृद्ध महिला का हाथ पड़कर उन्हें आश्वासन दिया।

''परंतु आप तो यहां से बहुत दूर चली जाओगी राजकुमारी जी...अपने ससुराल.... तब हम आपसे वैसी सहजता से तो भेंट नहीं कर पाएंगे न?'' एक किशोरी ने कहा।

अभी भी सीता जी की आंखों में आंसू की कुछ बूंदें थीं, लेकिन उस किशोरी की यह बात सुनकर सीता जी के मुख पर मुस्कान फैल गई।

सीता जी कुछ कह पातीं, इससे पूर्व श्री राम ने कहा, ''हे बाला! तीज के अवसर पर जानकी अपने मायके आएंगीं ही और आप लोग भी जब चाहे अयोध्या जा सकती हैं। इसमें तो कोई प्रतिबंध नहीं है। जानकी जब चाहे, वे भी मिथिला आ सकती हैं।''

(भगवान श्री विष्णु के मनुज अवतार भगवान श्री राम और माता सीता की कथा हजारों वर्षों से भारतीय जनमानस में प्रचलित है। संस्कृत में आदिकवि वाल्मीकि और हिंदी साहित्य में अवधी के महाकवि तुलसी से लेकर विश्व की अनेक भाषाओं में अब तक सैकड़ों रामायण लिखी गई हैं।लेखक ने इस रचना में श्री राम की महागाथा के विविध प्रसंगों से कथा प्रवाह की प्रेरणा प्राप्त की है। उन्होंने उन रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए एक साधारण भक्त की अपनी कल्पनादृष्टि से रामकथा की मौलिक साहित्यिक प्रस्तुति का प्रयत्न किया है।)

सामयिक चर्चा

गृहमंत्री जवाब देंगे

खबर पढ़ कर, बानी बोले- ''गजाधर!
केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने
कटघोरा की चुनावी सभा में कहा
कि यदि श्री नरेन्द्र मोदी
तीसरी बार प्रधानमंत्री बनते हैं
तो हम दो साल में,
नक्सलवाद को जड़ से खत्म कर देंगे।''
गजाधर! इस पर, आप क्या कहेंगे?''
गजाधर कुछ कहते इसके पहले
गृहस्थ गिरधारी बोल उठे- ''बानी!
जरा अमित शाह जी से कहें
कि वे पीएम मोदी जी से,
पूछ कर बताएं कि, हम गृहस्थों को,
बर्बाद करने वाली महंगाई को,
कब तक जड़ से खत्म कर देंगे।''
बानी ने कहा- हाँ तो गजाधर अब आप कहिए?
गजाधर मुस्कराए बोले- ''बानी!
आपके प्रश्न के उत्तर में हम क्या कहें!
अब तो गृहमंत्री शाह जी ही जवाब देंगे।'' -गिरीश बख्शी

कविता

//जीवन को अपनाना सीखो//

जीवन की बस यही कहानी।
रंक बनें या राजा रानी।।
रोम-रोम हो जाय प्रफुल्लित।
अगले क्षण भ्रम करता विस्मित।।
कभी पीर सम घटा सताती।
नयन झड़ी जस धार बहाती।।
सहसा पुष्पित होती काया।
फिर भव सागर कसती माया।।
पृथक रहें अंबर ज्यों सारे।
सूरज ग्रह अरु चंद्र सितारे।।
सृष्टि नीति के पथ पर चलते।
एक दूसरे से ना जलते।।
शीतल-गर्म पवन के झोंके।
किसमें दम जो इनको रोके!
नित्य धर्म है बहते रहना।
हों गतिशील सदा है कहना।।
चलती ऐसे जीवन गाड़ी।
अफसर हो या रहे अनाड़ी।।
प्रतिपल तुम मुस्काना सीखो।
जीवन को अपनाना सीखो।।

प्रिया देवांगन ''प्रियू''
राजिम जिला - गरियाबंद

राशिफल

मेष
आज का दिन फेवरेबल रहने वाला है। स्वास्थ्य के लिहाज से दिन अच्छा रहेगा। आज आपके बढ़ते खर्चे परेशानी का कारण बन सकते हैं इसीलिए बजट बनाकर चलने का प्रयास करें। किसी संपत्ति का सौदा जल्दबाजी में ना करें। राजनीति से जुड़े लोगों को आज किसी समारोह में भाग लेने का मौका मिलेगा।

वृषभ
आज का दिन आपके लिए निश्चित रूप से फलदायक रहने वाला है। आपकी योजनाओं को गति मिलेगी। आज नए लोगों से मुलाकात होगी, उनसे आपको कुछ अच्छा सीखने को मिलेगा। आज आपको बड़ों का साथ व सहयोग भरपूर मात्रा में मिलेगा। आज आपकी शिक्षा में आ रही परेशानी से छुटकारा मिलेगा, आपको खुशी होगी।

मिथुन
आज आपका दिन, आपके परिवार के लिए खुशियां लाने वाला है। परिवार में आपके अच्छे काम की तारीफ़ होगी। महिलाओं के लिए आज का दिन बेहद खास रहने वाला है। आज आपके पास बिजनेस को आगे बढ़ाने का अच्छा मौका है। कम्पटीशन की तैयारी कर रहे छात्रों को तैयारी जारी रखनी चाहिए।

कर्क
आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आज आप एक से अधिक स्रोतों से आय प्राप्त करेंगे। आज निवेश संबंधी मामलों को गति मिलेगी। आज किसी अजनबी पर सोच समझकर भरोसा करें। प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र में आज आप आगे बढ़ेंगे। आज आपके दांपत्य जीवन में खुशहाली बढ़ेगी।

सिंह
आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहने वाला है। ऑफिस के उच्चधिकारियों का सहयोग मिलने से आपका इम्पोर्टेन्ट काम बन जायेगा। पैसों के मामलों में लोगों पर जरूरत से ज्यादा भरोसा करने से बचना चाहिए। आज जीवनसाथी के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करने का प्लान कर सकते हैं।

कन्या
आज के दिन आपको रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे। आज आपके अच्छे व्यवहार से समाज में अच्छी पहचान बनेगी। आज आप घर पर डेकोरेशन का काम भी करवा सकते हैं। व्यापार में आज का दिन धन लाभ देने वाला है। आज अपनी समझ बूझ से आप परिवार की एकता को बरकार रखने में कामयाब होंगे।

तुला
आज आपका दिन बहुत बढ़िया रहने वाला हैं। आज दूसरों को जितना ज्यादा महत्व देंगे, आपको भी उतना ही महत्व मिलेगा। माईग्रेन की समस्या से आज आपको काफी राहत मिलेगी। पैतृक संपत्ति से धन लाभ मिलने के योग बन रहे हैं। लम्बे समय से चल रही योजना में आज कुछ नए चेंजेस कर सकते हैं।

वृश्चिक
आज आपका दिन नई उमंगो के साथ शुरू होने वाला है। जो लोग बेकरी का बिजनेस करते हैं, उन्हें आज उम्मीद से ज्यादा लाभ हो होगा। माताएं अपने बच्चों को कुछ नया सिखाएंगी, जिससे बच्चों में नए विचार आएंगे। शाम का समय खुशियों से भरा रहेगा। आज यात्रा पर जाने के योग बन रहे हैं।

धनु
आज आपके दिन की शुरुआत आपके अनुकूल होने वाली है। आज आप ऑफिस में खूब मेहनत करेंगे। आपको कोई नयी जिम्मेदारी मिल सकती है। इस राशि के मनोरंजन उद्योग से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन फायदेमंद होगा। आज परिवार के किसी सदस्य को बड़ी सफलता हासिल होगी।

मकर
आज आपका दिन खुशनुमा रहने वाला है। कार्यक्षेत्र में जो भी रुकावटें आएंगी, उनसे आप कुछ सीख सकते हैं। कारोबार में कुछ नया करने के लिए चल रहे प्रयास सफल होंगे। दूसरों की मदद करने से समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। ज़मीन जायजाद के मामले में लाभ मिलेगा।

कुंभ
आज आपका दिन बढ़िया गुजरेगा। किसी काम को पूरा करने के लिए शॉर्टकट तरीके अपनाने से बचें। आज बिजनेस में बढ़ोतरी होगी। माताएं बच्चों को मोरल स्टोरी सुनाएंगी। काम को पूरा करने में मन लगायेंगे और कुछ क्रिएटिव work करने का प्रयास करेंगे।

मीन
आज आपका दिन फेवरेबल रहेगा। आज किसी के बहकावे में न आये और अपने काम के प्रति सतर्क रहें। आपके परिवार में नन्हें मेहमान आने के योग बन रहे हैं। आज आपके परिवार में खुशियों का माहौल बनेगा। आज आपको किसी महत्वपूर्ण चर्चा में शामिल होने का मौका मिलेगा।

भरोसे का कत्ल: दोस्त की बीवी को धमतरी बुलाया, पहले पिलाई शराब फिर कर दी हत्या

बालोद (दावा)। उक्त मामले को लेकर पुलिस कंट्रोल रूम में प्रेस वार्ता में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार जोशी ने बताया कि बालोद जिले के सनौद थाना क्षेत्र के ग्राम तितुरगहन में एक महिला भेश्वरी उर्फ छोटी साहू निवासी रमतरा की लाश बंद बोरी में मिली थी। पुलिस अज्ञात हत्यारे की तलाश में जुटी थी। केस में पुलिस और साइबर सेल की टीम ने 24 घंटे के भीतर मामले को सुलझा लिया। इस हत्या के आरोप में मृतका के पति खिलावन साहू और उसके दोस्त डीसू राम साहू को गिरफ्तार कर लिया गया है।

मामला दरअसल में मृतिका अपने पति की दूसरी पत्नी थी। शादी के कुछ साल बाद दोनों के बीच काफी झगड़ा होने लगा था। इस विवाद से तंग आकर पति ने अपनी दूसरी पत्नी को अपने दोस्त के जरिए हत्या करवाने की साजिश रची थी और बदले में बीमा के तीन लाख के मिलने वाले पैसे को आपस में बांटने की योजना बनाई थी। हत्या पति के दोस्त डिसू राम साहू निवासी रामपुर जिला धमतरी ने की। लेकिन पूरी प्लानिंग पति द्वारा की गई थी। पुलिस ने दोनों को हिरासत में लेकर रिमांड पर जेल भेजा है। सोमवार को बालोद पुलिस कंट्रोल रूम में मामले का खुलासा करते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार जोशी ने बताया कि आरोपी द्वारा हत्या कर शव को छुपाने के उद्देश्य से बोरी में भरकर सड़क पर फेंका गया था। हत्या का आरोपी मृतिका का पति एवं उसका दोस्त निकला है।

पूर्व में दोनों आरोपी हत्या के प्रकरण में सजा भी काट चुके हैं जहां जेल में ही दोनो की दोस्ती हुई थी। घटना में प्रयुक्त पत्थर, मृतिका का मोबाईल, पर्स एवं आरोपी का दोपहिया वाहन को जब्त किया गया है। 4 मई को अज्ञात आरोपी द्वारा हत्या कर शव को छुपाने के उद्देश्य से बोरी में भरकर सनौद गुरूर मुख्य मार्ग पर ग्राम तितुरगहन में सड़क पर फेंक दिया था। प्रार्थी रामगोपाल देवदास के रिपोर्ट पर थाना सनौद में मर्ग एवं प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज किया गया था। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए अज्ञात आरोपियों की तलाश हेतु पुलिस महानिरीक्षक दुर्ग रेंज रामगोपाल गर्ग के मार्गदर्शन में, पुलिस अधीक्षक बालोद एस. आर. भगत के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार जोशी एवं उप पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार बागड़े के पर्यवेक्षण व उप निरीक्षक थाना प्रभारी दुलार सिंग यादव, थाना सनौद एवं उप निरीक्षक जोगेंद्र साहू प्रभारी सायबर सेल बालोद के नेतृत्व में अलग-अलग टीम का गठन किया गया।

प्रकरण में अज्ञात मृतिका के शव का पहचान पश्चात ग्राम रमतरा में मृतिका के पति खिलावन राम साहू उम्र 42 वर्ष से बारिकी से पूछताछ किया गया। काफी पूछताछ के बाद

पति की थी पूरी प्लानिंग, बोरी में बंद कर फेंकी थी लाश

खिलावन ने अपने बयान में बताया कि वर्ष 2001 में अपने फुफु दीदी के हत्या के प्रकरण में सजा होने पर सेन्ट्रल जेल रायपुर गया था, वहां पर पहले से मौजूद कैदी ग्राम रामपुर निवासी डीसूराम साहू जो हत्या के मामले में था जिनसे मुलाकात हुआ था। दोनों कैदी होने से आपस में जान पहचान हो गया था। वर्ष 2009 में जेल से छुट कर खेती मजदूरी का काम करता था। शादीशुदा बाल बच्चे वाला होने के बावजूद वर्ष 2012 में गांव में पड़ोस की रहने वाली भेश्वरी उर्फ छोटी साहू के साथ दूसरा विवाह किया था। विवाह पश्चात् मृतिका भेश्वरी के तरफ से 03 बच्चे हैं। शादी के कुछ वर्ष ठीक रहने के पश्चात् दोनों पति पत्नि में आये दिन लड़ाई झगड़ा मारपीट होता रहता था। इसी बात से तंग होकर विगत 02 वर्ष पूर्व अपने दोस्त डीसूराम साहू निवासी रामपुर के साथ मिलकर मृतिका भेश्वरी की हत्या करने का योजना बनाये।

इसी योजना के तहत मृतिका का पति खिलावन साहू ने मृतिका का 3,00,000 रू. का बीमा कराया था और अपने दोस्त डीसूराम साहू से दोनों हत्या कर बीमा की राशि को आपस में बराबर-बराबर बांटने के लिये इकरार हुआ था, तब मृतिका के पति खिलावन ने अपने दोस्त डीसूराम को विश्वास में लेकर मृतिका भेष्वरी साहू की हत्या करने के लिए अपने दोस्त डीसूराम को नियुक्त किया और दोनों योजनाबध्द तरीके से घटना दिनांक 4 मई को आरोपी का दोस्त डीसूराम ने फोन के माध्यम से मृतिका को धमतरी बुलाकर, धमतरी बस स्टैण्ड से अपने दोपहिया वाहन टी.व्ही.एस. एक्सल में बैठाकर अपने गांव रामपुर ले जाकर अपने खेत में लेकर गया।

वहां पहले से खरीदे गये शराब को मृतिका को पिलाकर नशा होने पर मृतिका के मुंह, नाक को दबाकर बेहोश कर दिया एवं पत्थर से उसके सीने में पटककर हत्या कर दिया। हत्या करने के पश्चात डीसूराम साहू ने फोन करके खिलावन को बताया कि वह उसकी पत्नि भेश्वरी की हत्या अपने खेत में कर दिया है, तो पति खिलावन साहू ने मृतिका के शव को छुपाने के उद्देश्य से बोरी में भरकर अपने गांव के तरफ लाने के लिये बोला। तब आरोपी डीसूराम साहू ने एक पीले हरे रंग के यूरिया के बोरी में मृतिका के

शव को भरकर वायर से बांधकर अपने वाहन टी.व्ही.एस. चैम्प एक्सल में सामने टंकी और सीट के बीच खाली जगह में रखकर रामपुर से सनौद होते हुए खिलावन के गांव जा रहा था।

भीड़भाड़ देख रास्ते में शव फेंक हो गया फरार मुख्य आरोपी डीसूराम सनौद गुरूर मार्ग में तितुरगहन के आगे बहुत आदमी खड़े होने से पकड़े जाने के डर से तितुरगहन गांव के पास सड़क में फेंककर वापस अपने गांव रामपुर आ गया। मृतिका का मोबाईल एवं पर्स तथा टी.व्ही.एस. गाड़ी को अपने घर में छुपाकर रखा था। प्रकरण में थाना सनौद के अपराध क्रमांक 90/2024 धारा 302, 201, 120 (बी) भा.द.वि. का अपराध दर्ज किया गया। प्रकरण में विशेष टीम के द्वारा क्षेत्र के त्रिनयन एवं सायबर तकनीकी की सहायता से आरोपियों के संबंध में जानकारी इकट्ठा किया गया। इसी आधार पर आरोपीगण मृतिका का पति खिलावन साहू पिता लालजी साहू, उम्र 42 वर्ष, रमतरा, थाना गुरूर एवं डीसूराम साहू पिता तिहारू राम साहू, उम्र 60 वर्ष निवासी रामपुर, थाना भखारा, जिला धमतरी से घटना में प्रयुक्त दोपहिया वाहन, मृतिका का मोबाईल, पर्स, घटना में प्रयुक्त पत्थर को विधिवत् जप्त किया गया। इस प्रकार घटना घटित होने के 24 घंटे के अंदर अंधे कत्ल की गुत्थी सुलझाते हुए दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर रिमाण्ड पर भेजा गया है।

कलेक्टर के निर्देशन में जिले के समिति प्रबंधकों एवं मिलर्स की हुई बैठक

शून्य शॉर्टेज के संबंध में सभी समिति प्रबंधकों एवं प्रभारियों को दिए निर्देश

खैरागढ़ (दावा)। कलेक्टर चंद्रकांत वर्मा के निर्देशानुसार जिला कार्यालय के सभा कक्ष में अपर कलेक्टर प्रेम कुमार पटेल द्वारा धान उठाव के सम्बन्ध में समिति प्रबंधकों एवं मिलर्स की समीक्षा बैठक ली गई। बैठक में अपर कलेक्टर प्रेम कुमार पटेल ने जिले के समस्त मिलरों को 3 दिवस में धान उठाव करने हेतु निर्देशित किया। साथ ही जिले के समस्त 51 उपार्जन केन्द्रों के प्रबंधकों एवं प्रभारियों को उपार्जन केन्द्रों में शेष धान का यथाशीघ्र निराकरण के लिए मिलरों को धान प्रदाय करने हेतु निर्देशित किया गया। उन्होंने कहा की जिन मिलर्स को डीओ जारी हो चुका है, वे जल्द से जल्द उठाव करें। प्रेम कुमार पटेल ने जिले में शून्य शॉर्टेज लाने के संबंध में सभी समिति प्रबंधकों/प्रभारियों को निर्देश दिए है। इस अवसर पर बैठक में जिले के खाद्य अधिकारी, सहायक पंजीयक, सहकारी संस्थाए, जिला विपणन अधिकारी, नोडल अधिकारी, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक एवं जिले के समस्त 51 उपार्जन केन्द्रों का प्रबंधक/प्रभारी के साथ जिले के समस्त 9 मिलर भी उपस्थित थे।

जमीन दलाल ने आदिवासी ग्रामीणों के साथ ठगी कर बेच दिया पूरा जमीन

0 अवैध प्लाटिंग में दलालों का साथ दे रही राजस्व विभाग 0 बिना स्थल निरीक्षण किए ही रजिस्ट्रार कर रहा रजिस्ट्री

मोहला (दावा)। मोहला जिले में फिर एक बार जमीन दलाल सक्रिय हो चुके है। मोहला-मानपुर सहित अम्बागढ़ चौकी क्षेत्र में दलाल कृषि भूमि, सीलिंग भूमि, छोटे व बड़े झाड़ के जंगलों को भोले-भाले आदिवासी लोगो से कम कीमत पर खरीद कर अवैध प्लाटिंग कर अधिक कीमत में बेचा जा रहा है और सबसे चौकने वाली बात यह है कि दलालों के कारनामों में साथ स्वयं राजस्व विभाग के अधिकारी दे रहे है जिनकी भूमिका भी संदेह के दायरे में है।

इन्हीं कारनामों में मोहला विकासखण्ड के ग्राम धोबेदंड में एक आदिवासी परिवार जमीन दलालों के ठगी का शिकार हो गया। भूमि स्वामित्व श्रवण कोर्राम ने खुद के साथ हुए ठगी को लेकर जिला पुलिस अधीक्षक से लिखित शिकायत की है जिसमें बताया है कि श्रवण कोर्राम और उसके परिवार के नाम पर ग्राम धोबेदंड के खसरा नंबर 148 में 6.50 एकड़ जमीन था, जिसमें पारिवारिक समस्या के चलते 2.50 एकड़ जमीन को बेचना था। मोहला के जाने माने जमीन दलाल संजय और रेमंत व उसके सहयोगियों ने 2.50 एकड़ का सौदा किया और बड़ी चालाकी से पूरी जमीन को बेच दिया जबकि अभी वर्तमान में श्रवण व उसके परिवार के पास सिर्फ 32 डिसमिल जमीन बचा दिखा रहा है। 2.50 एकड़ जमीन के सौदे का पूरा पैसा भी अभी तक नहीं दिया गया है व जमीन दलाल ने किसान परिवार के सभी सदस्यों की जरुरी कागजात - पर्चा पट्टा, आधार कार्ड, बैंक पास बुक अभी तक अपने पास रखा है जिसे अभी तक नही लौटाया गया है। इस पूरे मामले को लेकर श्रवण कोर्राम ने कलेक्टर को आवेदन सौंपा है जिस पर कलेक्टर मोहला मानपुर अम्बागढ़ चौकी ने एसडीएम मोहला को जांच का आदेश दिया है जो मामला अभी राजस्व विभाग मोहला में दर्ज है।

ठंडा और स्वच्छ पेयजल सेवा जारी

अनेक वर्षों से जारी है सेवा

डोंगरगढ़ (दावा)। गर्मी के सीजन में रेल यात्रियों को पर्याप्त मात्रा में पेयजल आपूर्ति करने के लिए मंडल रेल प्रशासन पूरी तरह से जुटा हुआ है। इसके अलावा विभिन्न समाज सेवी संस्थाएं भी सेवा भावना से रेल यात्रियों को पीने का पानी (प्याऊ) उपलब्ध कराने में अपना योगदान दे रहे हैं।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर मंडल द्वारा गर्मी के सीजन में ठंडा और स्वच्छ पेयजल यात्रियों को उपलब्ध कराने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहा है गर्मी के दिनों में सफर के दौरान पेयजल की अधिक आवश्यकता के मद्देनजर स्टेशनों पर समाज सेवी संस्थाओं द्वारा स्टेशनों पर यात्रियों को निःशुल्क शीतल जल पिलाने के लिए प्याऊ खोलने के लिए प्रशासन द्वारा त्वरित अनुमति दी जा रही है।

नागपुर मण्डल के छिंदवाडा, मंडला, राजनांदगाँव, बालाघाट तथा गोंदिया रेलवे स्टेशनों में समाज सेवा संस्थानों द्वारा प्याऊ घर का संचालन करते हुये यात्रियों को प्लेटफार्म के साथ ही ट्रेनों के यात्रियों को कोच के सामने ही शीतल पेयजल निःशुल्क उपलब्ध करा रहे हैं।

विभिन्न छोटे स्टेशनों में भी पेयजल उपलब्ध

इसके अलावा मंडल के रेलवे स्टेशनों पर भी रेल यात्रियों को ठंडा और स्वच्छ पेयजल सेवा हेतु यात्रियों को मटके का शीतल पेयजल निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। छोटे स्टेशन जैसे दरेकसा, मुडहीपार तथारसमडा स्टेशनों में भी यह सुविधा उबलब्ध कराया गया है।

सामाजिक संस्थाओं से सहयोग की अपील

जरूरतमंदों को पेयजल सुविधा मुहैया कराने हेतु वरिष्ट मंडल वाणिज्य प्रबंधक दिलीप सिंह द्वारा स्टेशनों में यात्रियों को स्वच्छ एवं शीतल जल पिलाने के लिए प्याऊ खोलने के इक्छुक संस्थानों/व्यक्ति संबन्धित स्टेशन के वाणिज्य निरीक्षक/स्टेशन प्रबंधक से संपर्क कर इस पुनीत कार्य में सहयोग प्रदान करने कि अपील की गई है।

राधिका-सुशील विवाद पर आलाकमान लेगी निर्णय : दीपक बैज

पीसीसी प्रमुख ने स्वीकारा दोनों के बीच पहले से है मतभेद

रायपुर (आरएनएस)। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रमुख दीपक बैज ने राधिका खेड़ा से जुड़े विवाद पर प्रेसवार्ता की और कई अहम बातें कही। दीपक बैज ने बताया कि सुशील आनंद शुक्ला और राधिका के बीच पहले से ही मतभेद थे। विवाद के दिन अपने अधिकारों को लेकर भी दोनों नेताओं के बीच विवाद हुआ। दीपक बैज ने बताया कि इस मामले में जो भी रिपोर्ट थी वह उन्होंने एआईसीसी को भेज दी गई हैं। सुशील आनंद अपने पद पर रहेंगे या नहीं यह निर्णय पार्टी लेगी। राधिका खेड़ा ने अपनी मर्जी से इस्तीफा दिया हैं, हमनें उन्हें ऐसा करने के लिए नहीं कहा। बैज ने कहा कि राम मंदिर पर कही गई बातें सही नहीं हैं। राधिका खेड़ा गुस्से में हैं और इसलिए नेताओं पर आरोप लगा रही हैं। गौरतलब हैं कि पीसीसी नेताओं के द्वारा कांग्रेस की पूर्व नेशनल कोऑर्डिनेटर राधिका खेड़ा के साथ राजीव भवन में बदसलूकी की गई थी। इस घटना के बाद अब राधिका खेड़ा ने कांग्रेस के सभी पदों के साथ ही प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया हैं। आज राधिका खेड़ा ने नेताओं पर कई गंभीर आरोप लगाए। राधिका खेड़ा ने बताया कि इस विवाद के बाद उन्हें प्रदेश के पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ छोड़ने को कहा था। इतना ही नहीं बल्कि उन्हें किसी भी तरह के डिबेट में भी शामिल होने से रोका गया। राधिका ने खुलासा किया कि अपने साथ हुई बदसलूकी के बाद उन्होंने प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कई बड़े नेताओं को फोन लगाया लेकिन किसी ने भी फोन नहीं उठाया। कई दिनों के गुहार के बाद भी जब किसी तरह की सुनवाई नहीं हुई तब उन्होंने इस्तीफे पर फैसला लिया। इससे पहले उन्होंने खुद भी मीडिया से दूरी बनाई थी।

दि बुद्धिस्ट सोसायटी ऑफ इंडिया ने मनाया स्थापना दिवस

राजनांदगांव (दावा)। 4 मई को धम्मकीर्ति बुद्ध विहार बसंतपुर में भारतीय बौद्ध महासभा, जिला ईकाई राजनांदगांव द्वारा मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूवात भगवान बुद्ध एवं बोधि सत्व बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के तस्वीरें पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर बुद्ध वंदना पंचशील त्रिशरण ग्रहण कर संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कांतिकुमार फुले बौद्ध कल्याण समिति नगर अध्यक्ष राजनांदगांव, श्रीमती वंदना मेश्राम महिला नगर अध्यक्ष राजनांदगांव, विशिष्ट अतिथि प्रशांत सुखदेवे सामाजिक कार्यकर्ता, कन्हैयालाल खोब्रागढ़े, देवपाल रामटेके, निलेश कुमार रामटेके उपस्थित थे।

एमडी वाल्दे प्रातांध्यक्ष-भारतीय बौद्ध महासभा ने बुद्धिस्ट सोसायटी आफ इंडिया की स्थापना एवं उनके उद्देश्य के बारे में जानकारी दी तथा उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए हम सबको सतत बाबा साहेब के बताए मार्ग पर चल कर हम समाज की सामाजिक आर्थिक शैक्षणिक धार्मिक राजनीतिक एवं शैक्षणिक विकास कर सकते हैं। सभी वक्ताओं ने बाबा साहेब जी द्वारा स्थापित समाजिक संगठनों पर विस्तार से जानकारी दी और कहा कि आज उन संगठनों के द्वारा समाज बंधुओं ने अपने-अपने तरीके से कार्यक्रम आयोजित करते हैं और बाबा साहेब जी को याद कर उनके बताए मार्ग पर चलने का प्रयास कर रहे हैं। कोई भी सामाजिक कार्यक्रम आर्थिक सहयोग के बिना नहीं हो सकता है, इसलिए अपने-अपने इच्छा अनुसार सामाजिक संगठनों को कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आर्थिक सहयोग देना चाहिए। बुद्ध विहारों कि उपयोग शिक्षा और संस्कार देने के लिए किया जाना चाहिए, ताकि हमारे बच्चे शिक्षित और संस्कारी व आत्मनिर्भर बनकर समाज की सेवा करने आगे आये।

यह कार्यक्रम भारतीय बौद्ध महासभा जिला ईकाई राजनांदगांव के पदाधिकारियों के द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्था के पदाधिकारी द्विवेदी प्रसाद चौधरी, मुकेश कांडे, तरुणा मेश्राम, मनीषा भीमटे, पुर्णिमा नागदेवे, भावना वाल्दे, रंजना चौधरी, खुशबू लाडेश्वर, विक्रमादित्य लाडेश्वर, पुष्पा वाघमारे, उपेन्द्र रामटेके, रेणु जामगढ़े, किरण मेश्राम, विद्या तिरपुड़े, कुमुद वैदे आदि के साथ-साथ बौद्ध उपासक व उपासिकाओं की उपस्थिति रही। अंत में जिला अध्यक्ष श्रीमती तिलोत्तमा बड़गे द्वारा आभार प्रदर्शन कर कार्यक्रम समापन की घोषणा की गयी। स्वल्पाहार वितरण किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन माला गौतम द्वारा किया गया। यह जानकारी श्रीमती तिलोत्तमा बडगे जिला अध्यक्ष भारतीय बौद्ध महासभा जिला ईकाई राजनांदगांव एवं शुभम भोइर मिडिया प्रभारी ने दी।

सर्व सेन समाज आज मनाएगा सेन महोत्सव

जिले भर में 4 दिवसीय सेन जयंती कार्यक्रम की धूम

राजनांदगांव (दावा)। जिला राजनांदगाव मे नाई समाज के आराध्य गुरुदेव संत श्री सेन जी महाराज का 724 वी जयंती 4 दिवसीय कार्यक्रम के रूप मे जिला सेन समाज राजनांदगाव द्वारा निर्देशानुसार धूमधाम से मनाया जा रहा है। सेन जयंती की शुरुआत मातृशक्ति प्रकोष्ठ के नेतृत्व में दिन रविवार को सेन भवन सहदेव नगर में किया गया। इसी क्रम मे दूसरे दिन का कार्यक्रम दिन सोमवार को ब्लाक सर्किल में मनाया गया।

जिलाध्यक्ष शेष नारायण शाण्डिल्य ने बताया की यह 'सेन-महोत्सव' के शानदार दो दिवसीय कार्यक्रमों के बाद आज तिसरे दिन 'ब्लाक राजनांदगांव सर्व सेन समाज' द्वारा श्री बूढादेव मदिर प्रांगण 'भवन' रेवाडीह मे भव्य आयोजन किया जायगा।

जिला संगठन महामंत्री अनुप श्रीवास के नेतृत्व मे भव्य बाईक रैली सेन भवन से संस्कारधानी के प्रमुख मार्गो दिग्विजय स्टेडियम के सामने, सहदेव नगर से भदौरिया चौक, गुरुद्वारा चौक, फौवारा चौक, शीतला मंदिर रोड, दिग्विजय कालेज दुर्गा चौक, बालगोविन्द् चौक, गांधी चौक, मानव मंदिर चौक, जयस्तम्भ चौक, जूनी हटारी, गुडाखु लाइन, आजाद चौक, हलवाई लाइन, भारत माता चौक, सदर लाइन, बसंतपुर से नंदई चौक, इंदिरा नगर, महामाया चौक, फरहद चौक, होते हुए रेवाडीह मे समाप्त होगा।

जिला सेलून संघ जिलाध्यक्ष ईश्वर श्रीवास ने कहा की बाईक रैली के दौरान संस्कारधानी के नाई बंधुओं द्वारा पुष्पवर्षा से स्वागत और शीतल पेयजल वितरण किया जायेगा। सर्व सेन समाज राज. के ब्लाक अध्यक्ष अनिल कौशिक ने कहा की बाईक रैली के समाप्ति के बाद रेवाडीह श्री बूढादेव मंदिर प्रांगण भवन में सेन जी महाराज का पूजा अनुष्ठान होगा। उसके बाद रामायण पाठ और भक्ती भजन होगा तब पश्चात अतिथियों का स्वागत सम्मान और सामाजिक अतिथियों का उद्बोधन और कार्य क्रम के अंत मे प्रीति भोज प्रसाद् वितरण द्वारा कार्यक्रम का समापन किया जायेगा। जिला मीडिया संयोजक इन्द्रद्वीप हीरा सेन ने आगे की कार्यक्रम की जानकारी दी की इसी प्रकार आज ब्लाक सेन समाज सोमनी टेडेसरा द्वारा सेन महोत्सव् मनाया जायेगा। जिला संयोजक देवशरण सेन सांसद प्रतिनिधि, जिला सचिव लोकेश सेन, जिला कोषाध्यक्ष भागवत श्रीवास वरिष्ठ सदस्य मोती श्रीवास, महिला प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष श्रीमती निशा श्रीवास, जिलाध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ शिव कुमार श्रीवास के साथ कार्यक्रम व्यवस्था के राजू सेन, आदित्य सेन ने जिला मीडिया प्रभारी प्रेम सेन ने सभी नाई भाई बहनो को कार्यकम की सफलता के लिए अधिक से अधिक संख्या मे सपरिवार आने की विनती की है।

मतदान की सारी तैयारियां पूरी, सुरक्षा के लिए 202 कंपनियां तैनात

रायपुर (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव के लिए निर्वाचन आयोग की ओर से सारी तैयारियां पूरी कर ली गई है। कल मंगलवार को प्रदेश के 7 लोकसभा सीट पर तीसरे चरण में मतदान होगा।

इसमें सरगुजा, रायगढ़, जांजगीर-चांपा, कोरबा, बिलसपुर, दुर्ग तथा रायपुर सीट शामिल हैं। रायपुर में कुल 38 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। इसी तरह सरगुजा में 10, रायगढ़ में 13, जांजगीर-चांपा में 18, कोरबा में 27, बिलसपुर में 37, दुर्ग में 15 उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं। इस तरह कुल 7 लोकसभा सीटों में 168 उम्मीदवार हैं।

मतदान सुबह 7 बजे प्रारंभ होगा तथा शाम 6 बजे तक चलेगा। निर्वाचकों की कुल संख्या 1, 39, 01, 285 हैं। लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न कराने के लिए केन्द्रीय सुरक्षाबलों की कुल 202 कंपनियां तैनात की गई हैं। इनमें 1072 मतदान केन्द्र संवेदनशील की श्रेणी में है। मतदान के लिए कुल 15701 मतदान केन्द्र बनाया गया है। इनमें से 7887 मतदान केन्द्रों पर वेब कॉस्टिंग की सुविधा है जहां भारत निर्वाचन आयोग सीधी निगरानी रखेगा। मतदान केन्द्रों में भीषण गर्मी को देखते हुए छांव, पानी, ओआरएस घोलू, कूलर आदि की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा वेटिंग हॉल भी बनाया गया है। मतदान केन्द्रों में आपात हालत से निपटने मेडिकल कीट भी रखी गई है।

दहेज के लिए पत्नी बेटी को घर से निकालने का आरोप पति पर लगाया

0 शादी के नौ महिने बाद ही 10 लाख की मांग करने का आरोप लगाया 0 पति अस्वस्थ, रेल विभाग ने ऑफिस अटैक किया

डोंगरगढ़ (दावा)। पत्नी द्वारा अपने पति पर शादी के नौ माह बाद ही 10 लाख के दहेज की मांग के अलावा बेटी के साथ उन्हें घर से बाहर निकालने का आरोप लगाते हुए महिला थाना राजनांदगांव में शिकायत दर्ज कराने का मामला प्रकाश में आया है। महिला थाना पुलिस ने डोंगरगढ़ मिसिया बाड़ा निवासी देवेन्द्र कुमार अम्बादे के खिलाफ दहेज के लिए प्रताड़ित करके अपनी पत्नी व मासूम बेटी को घर से निकाल देने की रिपोर्ट पर धारा 498ए के तहत जुर्म दर्ज किया है।

13 मार्च 2024 को दर्ज प्रकरण के मुताबिक रिपोर्ट नैना अम्बादे पति देवेन्द्र कुमार अम्बादे ने लिखाई है। प्रार्थिया द्वारा महिला थाना में रिपोर्ट दर्ज करने के पश्चात, प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से अपने पति पर आरोप लगाया गया है कि, शादी के नौ महिने बाद से ही उसे 10 लाख रूपये दहेज के लिए प्रताडित किया जाने लगा। 2018 में बेटी होने के बाद और प्रताड़ित किया जाने लगा। फरवरी 2019 को पत्नी व बेटी को आरोपी ने ससुराल के अन्य लोगों के साथ मिलकर घर से निकाल दिया। तब से वह अपने मायके हीरापुर मोहबा बाजार मे रह रही है। 2019 में भरण पोषण का केस दायर करने पर वे लोग तीन बार कोर्ट आए। 2023 में उसे रखने भी तैयार हो गए। लेकिन प्रताड़ना का दौर तब भी बंद नहीं हुआ। महिला थाने में एफआईआर दर्ज करके विस्तृत जांच प्रारंभ की गई है।

पति रेल कर्मचारी प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रार्थिया का पति देवेंद्र कुमार अंबादे की पारिवारिक पृष्ठभूमि संपन्न परिवारों की श्रेणी में आती है। वे अपनी विधवा मां के साथ जीवन यापन कर रहे है। वे रेलवे में गार्ड के पद पर कार्यरत है। किंतु कुछ दिनों से अस्वस्थ होने के कारण उन्हें रेल विभाग द्वारा सुविधा उपलब्ध कराते हुए ऑफिस अटैक किया गया है। समाचार हेतु उनका पक्ष जानना चाहा गया, किंतु उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया।

सूर्या के तूफान में उड़ा हैदराबाद, मुंबई की प्ले ऑफ में पहुंचने की उम्मीद बरकरार, तिलक भी चमके

मुंबई। मुंबई इंडियंस ने सूर्यकुमार यादव के शतक की बदौलत सनराइजर्स हैदराबाद को सात विकेट से हरा दिया। एमआई की इस जीत में तिलक वर्मा ने भी अहम योगदान दिया। दोनों के बीच 143 रनों की नाबाद साझेदारी हुई। वानखेड़े स्टेडियम में खेले गए इस मुकाबले में हैदराबाद के गेंदबाजों को संघर्ष करते देखा गया। मुंबई के बल्लेबाजों ने उनकी जमकर पिटाई की। आईपीएल 2024 के 55वें मैच में सनराइजर्स हैदराबाद ने 20 ओवर में आठ विकेट गंवाकर 173 रन बनाए। जवाब में मुंबई ने 17.2 ओवर में तीन विकेट गंवाकर 174 रन बनाए और सात विकेट से मुकाबला जीत लिया। मुंबई इस जीत के साथ अंक तालिका में 10वें से नौवें पायदान पर पहुंच गई है। अब टीम के खाते में आठ अंक हो गए हैं। वहीं, नेट रनरेट -0.212 का हो गया है। इसके अलावा सनराइजर्स हैदराबाद 12 अंकों के साथ चौथे स्थान पर बरकरार है।

सूर्या-तिलक ने दिलाई जीत

मुंबई इंडियंस की इस मैच में झटके के साथ शुरुआत हुई। सलामी बल्लेबाजी के लिए उतरे ईशान किशन 26 रन के स्कोर पर आउट हो गए। इसके बाद टीम को 31 रन के स्कोर पर दो झटे लगे। कमिंस ने रोहित को आउट किया।

इसके बाद पांचवें ओवर में भुवनेश्वर कुमार ने नमन धीर को आउट किया। वह बिना खाता खोले पवेलियन लौटे। इसके बाद मोर्चा सूर्यकुमार यादव और तिलक वर्मा ने संभाला। दोनों ने हैदराबाद के गेंदबाजों की जमकर खबर ली। सूर्या ने इस मुकाबले में 51 गेंदों का सामना किया और 102 रन बनाए। वहीं, तिलक वर्मा ने 37 रनों की पारी खेली। हैदराबाद के लिए भुवनेश्वर, जानसेन और कमिंस ने एक-एक विकेट चटकाया।

हैदराबाद की पारी

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी सनराइजर्स हैदराबाद ने 20 ओवर में आठ विकेट गंवाकर 173 रन बनाए। ट्रेविस हेड और अभिषेक शर्मा ने अच्छी शुरुआत की। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 56 रनों की साझेदारी हुई। हैदराबाद को पहला झटका बुमराह ने दिया। उन्होंने अभिषेक को आउट किया। वह सिर्फ 11 रन बना सके। तीसरा झटका मयंक अग्रवाल के रूप में लगा। वह सिर्फ पांच रन बना सके। इसके बाद हेड को पीयूष चावला ने पवेलियन भेजा। सलामी बल्लेबाज ने सात चौकों और एक छक्के की मदद से 48 रन बनाए। इस मैच में नीतिश 20, क्लासेन दो, जानसेन 17, शाहबाज 10, अब्दुल तीन रन बना सके। वहीं, कमिंस 35 और सनवीर आठ रन बनाकर नाबाद रहे। मुंबई के लिए हार्दिक पांड्या और पीयूष चावला ने तीन-तीन विकेट चटकाए। वहीं, अंशुल कंबोज और जसप्रीत बुमराह को एक-एक सफलता मिली।

पहला कॉलम...

क्रिकेटर से सिंगर बने आंद्रे रसेल, 9 मई को रिलीज़ होगा गाना

नई दिल्ली। आंद्रे रसेल आईपीएल 2024 में कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए शानदार बैटिंग और बॉलिंग का मुज़ाहिरा पेश कर रहे हैं. अब वेस्टइंडीज़ के स्टार ऑलराउंडर आईपीएल के बीच आपको सिंगर के रूप में नज़र आएंगे. दरअसल आईपीएल के बीच रसेल का हिंदी गाना रिलीज़ होगा, जिसमें उनके साथ टीवी जगत की मशहूर एक्ट्रेस अविका गौर नज़र आएंगी. अविका वहीं एक्ट्रेस हैं, जो मशहूर टीवी शो 'बालिका वधू' में 'आनंदी' का किरदार निभाती थी. इस गाने में खुद आंद्रे रसेल ने बॉलीवुड सिंगर पलक मुच्छल के साथ अपनी आवाज़ दी है. म्यूजिक वीडियो को पलक मुच्छल के भाई पशाल मुच्छल ने डायरेक्ट किया है, जो कथित तौर पर भारतीय महिला क्रिकेटर स्मृति मंधाना के बॉयफ्रेंड हैं. वेस्टइंडीज़ के क्रिकेटर्स गाना गाने और पार्टी करने के लिए काफी मशहूर हैं. इसी बात का सबूत देते हुए रसेल म्यूज वीडियो में दिखाई देंगे.

'गलती' से पहले ही लीक हो गई टीम इंडिया की जर्सी?

नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप 2024 धीरे-धीरे करीब आता जा रहा है. विश्व कप को लेकर शोर तेज़ हो रहा है. हालांकि इन दिनों आईपीएल 2024 खेला जा रहा है, जिसकी वजह से विश्व कप ज़्यादा सुर्खियां नहीं बटोर पा रहा है. लेकिन इसी बीच टूर्नामेंट के लिए टीम इंडिया की जर्सी लीक होने की जानकारी सामने आई है. कहा जा रहा है कि विश्व कप के लिए टीम इंडिया जर्सी आधिकारिक तौर पर रिवील नहीं की गई बल्कि लीक हो गई. सोशल मीडिया पर भारतीय टीम की जर्सी को लेकर दावे किए जा रहे हैं. लीक हुई जर्सी की वायरल तस्वीरों में देखा जा सकता है कि गले पर तिरंगे की स्ट्रिप लगी हुई है, जिसमें तीन कलर नज़र आ रहे हैं. जर्सी वी गले में दिख रही है. जर्सी का बड़ा हिस्सा नीले कलर का है और बाकी हिस्से में केसरिया रंग नज़र आ रहा है. इसके अलावा कंधों की तरफ एडिडास की तीन स्ट्रिप दिख रही हैं. वहीं छाती की तरफ बीसीसीआई का लोगो लगा हुआ है. इसको लेकर दावा किया जा रहा है कि यही टी20 विश्व कप में टीम इंडिया की जर्सी होगी. हालांकि आधिकारिक तौर पर जर्सी को लेकर कोई जानकारी सामने नहीं आई है. लेकिन वायरल जर्सी फैंस को बिल्कुल भी पसंद नहीं आ रही है. कोई इसको दयनीय तो कोई ट्रेनिंग किट बता रहा है. फिलहाल अभी आधिकारिक तौर से जर्सी के लॉन्च का इंतज़ार करना होगा.

जेट एयरवेज के फाउंडर नरेश गोयल को मनी लॉन्ड्रिंग केस में मिली जमानत

नई दिल्ली। बंबई हाई कोर्ट ने जेट एयरवेज के फाउंडर नरेश गोयल को मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में मेडिकल आधार पर दो महीने की अंतरिम जमानत दे दी है. नरेश गोयल फिलहाल रिलायंस हॉस्पिटल में अपना इलाज करवा रहे हैं. अदालत ने उनसे एक लाख रुपये जमानत राशि जमा करने को भी कहा है. नरेश गोयल और उनकी पत्नी अनीता गोयल कैंसर से जूझ रहे हैं. नरेश गोयल ने बीमारियों को आधार बनाकर कोर्ट से राहत मांगी थी. बॉम्बे हाई कोर्ट ने सोमवार को उन्हें जमानत देते हुए कहा कि उनकी मेडिकल स्थिति को देखते हुए यह राहत दी जा रही है. हालांकि, प्रवर्तन निदेशालय (श्वष्ठ) ने इस जमानत का विरोध करते हुए कहा कि इसके बदले में उन्हें प्राइवेट हॉस्पिटल में इलाज कराने के लिए एक महीने तक रुकने दिया जाए. फरवरी में स्पेशल कोर्ट ने नरेश गोयल की जमानत याचिका नामंजूर करते हुए कहा था कि वह अपनी पसंद के प्राइवेट हॉस्पिटल में इलाज करवा सकते हैं.ईडी ने नरेश गोयल को सितंबर, 2023 में गिरफ्तार किया था. उन पर आरोप है कि उन्होंने जेट एयरवेज को केनरा बैंक से मिले 538.62 करोड़ रुपये के लोन को अलग जगह इस्तेमाल किया. ईडी ने उन्हें मनी लॉन्ड्रिंग का आरोपी बनाया है. इसके बाद नवंबर, 2023 में उनकी पत्नी अनीता गोयल को भी ईडी ने गिरफ्तार किया था. हालांकि, उन्हें अपने खराब स्वास्थ्य और उम्र के चलते स्पेशल कोर्ट ने जमानत दे दी थी.

क्रिकेट खेलते 11 साल के बच्चों की मौत

नई दिल्ली। भारत में क्रिकेट काफी मशहूर है। देश में इस खेल को लेकर अलग ही जुनून देखने को मिलता है। ये खेल कई लोगों की खुशी की वजह बनता है। गली-मोहल्ले में बच्चे क्रिकेट खेलते मिल जाएंगे। हर शॉट और विकेट पर उनकी खुशी देखने लायक होती है, लेकिन पुणे में क्रिकेट के कारण एक परिवार ने अपने मासूम से बच्चे को खो दिया। पुणे के लोहेगांव में क्रिकेट खेलने के दौरान 11 साल के शौर्य की मौत हो गई। यह दर्दनाक हादसा वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हो गया। शौर्य अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेल रहा था। वह गेंदबाजी कर रहा था। तभी कुछ ऐसा हो गया कि शौर्य को अपनी जान गंवानी पड़ी। उसके दोस्त हैरान रह गए, लेकिन वह कुछ नहीं कर पाए।शौर्य गर्मियों की छुट्टियों में अपने भाइयों और दोस्तों के साथ क्रिकेट खेल रहा था। गुरुवार शाम को ये सभी लोग लोहेगांव में ही स्थित जगतगुरू स्पोर्ट्स एकेडमी में खेल रहे थे। शौर्य गेंदबाजी कर रहा था। उसकी कुछ गेंदों पर सामने खड़े बल्लेबाज ने शॉट्स मारे।

श्रीलंका ने यूएई को 15 रन से हराया, टी20 वर्ल्ड कप में की जगह पक्की

नई दिल्ली। श्रीलंकाई टीम ने आईसीसी महिला टी20 वर्ल्ड कप क्वालीफायर के दूसरे सेमीफाइनल में यूएई को 15 रन से हराया और महिला टी20 वर्ल्ड कप में अपनी जगह पक्की की। स्कॉटलैंड के बाद महिला टी20 वर्ल्ड कप के लिए श्रीलंका क्वालीफाई करने वाली दूसरी टीम बनी। पता हो कि आईसीसी महिला टी20 वर्ल्ड कप बांग्लादेश की मेजबानी में 3 से 20 अक्टूबर तक खेला जाएगा।

अबुधाबी में खेले गए मुकाबले में श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी की और निर्धारित 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 149 रन बनाए। जवाब में यूएई की टीम 20 ओवर में सात विकेट खोकर 134 रन बना सकी। श्रीलंकाई टीम अब मंगलवार को स्कॉटलैंड के खिलाफ आईसीसी महिला टी20 वर्ल्ड कप क्वालीफायर फाइनल मैच खेलेगी।

बता दें कि 150 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी यूएई की तरफ से कप्तान ईशा ओजा (66) का अर्धशतक बेकार गया। यूएई की शुरुआत खराब रही क्योंकि ओपनर थीरता सतीश को फर्नांडो ने खाता नहीं खोलने दिया और क्लीन बोल्ड किया। इसके बाद यूएई को टॉप ऑर्डर के बैटर्स ने मजबूती दी। खुशी शर्मा (22) और कविशा इगोडेग (16) ने उपयोगी योगदान दिया।

इन दोनों के आउट होने के बाद यूएई की पारी ढह गई और श्रीलंका ने दमदार वापसी की। श्रीलंकाई गेंदबाजों ने सुनिश्चित किया कि यूएई लक्ष्य को पार नहीं कर सके और इसमें वो सफल रहे। श्रीलंका ने यूएई को 134/7 के स्कोर पर रोक दिया और 15 रन से मैच अपने नाम किया।

टी20 वर्ल्ड कप 2024 पर मंडराया आतंकी हमले का खतरा, पाकिस्तान से मिली धमकी!

नई दिल्ली। टी20 वर्ल्ड कप 2024 की शुरुआत 1 जून से होगी. इस बार का विश्व कप वेस्टइंडीज़ और अमेरिका की मेज़बानी में खेला जाएगा. लेकिन टूर्नामेंट की शुरुआत से पहले वेस्टइंडीज़ यानी कैरेबियाई देशों को आतंकी हमले की धमकी मिली है. यह धमकी उत्तरी पाकिस्तान से मिली. हालांकि इसको लेकर क्रिकेट वेस्टइंडीज़ ने सुरक्षा का इंतज़ाम करना शुरू कर दिया है.

उत्तरी पाकिस्तान में मौजूद आईएस-खोरासान से टी20 विश्व कप के दौरान कैरेबियाई देशों को निशाना बनाने की धमकी मिली है. आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ने दुनियाभर में होने वाले बड़े आयोजनों को निशाना बनाने की धमकी दी है, जिसमें 2024 का टी20 विश्व कप भी शामिल है. कैरेबियाई मीडिया रिपोर्ट्स में बताया गया कि खूफिया जानकारी आईएस के मीडिया ग्रुप %नाशिर पाकिस्तान% से मिली है. त्रिनिदाद एक्सप्रेस के माने तो %नाशिर पाकिस्तान% आईएस से जुड़ा एक प्रोपेगेंडा चैनल है.

%क्रिकबज% की रिपोर्ट के मुताबिक इसके बाद जारी किए गए सुरक्षा अलर्ट में कहा गया, ÷प्रो इस्लामिक स्टेट (आइएस) के मीडिया सोर्सेज ने स्पोर्टिंग इवेंट के खिलाफ हिंसा उसकाने का अभियान चलाया है, जिसमें अफगानिस्तान-पाकिस्तान ब्रांच का वीडियो मैसेज भी शामिल है, जिसमें कई देशों में हमलों को हाइलाइट किया गया है और समर्थकों से अपने देशों में युद्ध के मैदान में शामिल होने का आग्रह किया गया है.÷

इस गंभीर मुद्दे को लेकर क्रिकेट वेस्टइंडीज़ के सीईओ जॉनी ग्रेव्स ने क्रिकबज से बात करते हुए कहा, ÷हम मेज़बान देशों और शहरों में अधिकारियों के साथ मिलकर काम करते हैं और यह पुख्ता करने के लिए ग्लोबल लैंडस्केप की लगातार निगरानी और मूल्यांकन करते हैं कि हमारे आयोजन के लिए पहचाने गए किसी जोखिम को कम करने के लिए ज़रूरी योजनाएं मौजूद रहें.÷

बता दें कि यह टी20 वर्ल्ड कप के इतिहास में पहली बार होगा कि जब टूर्नामेंट 20 टीमों के साथ खेला जाएगा. यह क्रिकेट इतिहास का सबसे बड़ा टी20 विश्व कप होगा, जिसके लिए सुरक्षा के इंतज़ाम तो पुख्ता होने ही चाहिए.

चीन ने इंडोनेशिया को 3-0 से हराकर 16वीं बार जीता उबेर कप

बीजिंग। उबेर कप बैडमिंटन-2024 के फाइनल में, चीनी टीम ने इंडोनेशिया को 3-0 से हराकर चैंपियनशिप अपने नाम की। इस फाइनल के पहले महिला एकल मैच में चीनी महिला खिलाड़ी छन युफेई ने इंडोनेशियाई महिला खिलाड़ी ग्रेगोरिया मारिस्का टुनजुंग को सिर्फ 38 मिनट में सीधे सेटों में हराया।

दूसरे महिला युगल मैच में छन छिंगछेन और च्या यिफ़ान ने भी इंडोनेशियाई महिला युगल सीति फादिया सिल्वा रामधन्ति और रिबका सुगियार्तो को 2-0 से हराया।

तीसरे महिला एकल मैच में, चीनी महिला खिलाडी ह बिंगच्याओ ने पहला गेम हारने के बाद एस्टर नुरुमी ट्राई वार्डोयो को 2-1 से हराया। अंत में, चीनी टीम ने इंडोनेशियाई टीम को 3-0 के स्कोर से हराया और चैंपियनशिप जीती।

उबेर कप, जिसे विश्व महिला बैडमिंटन टीम चैम्पियनशिप के रूप में भी जाना जाता है। इस आयोजन के इतिहास में, चीनी टीम सबसे सफल टीम रही है।

वर्ष 1984 में उबेर कप में अपनी शुरुआत के बाद से, चीनी टीम ने वर्ष 2018 में फाइनल के अलावा सभी 20 बार फाइनल में जगह बनाई है। चीनी टीम के लिए यह 16वीं बार है कि उन्होंने उबेर कप चैंपियनशिप जीती।

रद्द उड़ानों का टिकट बेचने के आरोप में कंतास एयरलाइन पर गिरी गाज

लगा करोड़ों का जुर्माना

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया की प्रमुख एयरलाइन क्वांटास एयरवेज पहले से रद्द हो चुकी उड़ानों के लिए टिकटों की बिक्री से जुड़ा मुकदमा को निपटाने को तैयार हो गया है। एयरलाइन ने इसके लिए 120 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर यानी 7.9 करोड़ अमेरिकी डॉलर का भुगतान करने पर सहमति दे दी। एयरलाइन 100 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर या 6.6 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि जुर्माने के रूप में देगी वहीं 86,000 से अधिक ग्राहकों को 20 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर यानी 1.3 मिलियन अमेरिकी डॉलर मुआवजे के रूप में दिया जाएगा। यह मामला 2021-2022 का है। ऑस्ट्रेलियाई प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता आयोग की अध्यक्ष जीना कैस-गॉटलिब ने सोमवार को एक बयान में कहा, क्वांटास का आचरण अहंकारी और अस्वीकार्य था। कई उपभोक्ताओं ने एक ऐसे विमान की बुकिंग कर छुट्टी, व्यापार और यात्रा की योजना बनाई होगी, जिसे पहले ही रद्द कर दिया गया था। उन्होंने कहा कि हम यह कार्रवाई इसलिए सुनिश्चित कर रहे हैं क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में काम करने वाली कंपनियां हर समय अपने ग्राहकों के साथ स्पष्ट, सटीक और ईमानदारी से संवाद करती हैं।

क्वांटास समूह की मुख्य कार्यकारी अधिकारी वेनेसा हडसन ने कहा कि यह समझौता अदालत की मंजूरी के अधीन है और यह एक महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि हम राष्ट्रीय विमानन कंपनी के प्रति विश्वास बहाल करने की दिशा में काम कर रहे हैं। हडसन ने कहा, जब COVID शटडाउन के बाद उड़ान फिर से शुरू हुई, तो हम मानते हैं कि कंटास ने ग्राहकों को निराश किया। हम जानते हैं कि हमारे कई ग्राहक समय पर विमान रद्द होने की सूचनाएं प्रदान करने में हुई हमारी विफलता से प्रभावित हुए थे और हमें ईमानदारी से इसके लिए खेद है।क्वांटास, जिसने पिछले साल 1.1 बिलियन का वार्षिक लाभ दर्ज किया था। हाल के वर्षों में क्वांटास एयरलाइन टिकटों की बढ़ती कीमतों, खराब सेवा मानकों के दावों और COVID-19 महामारी के दौरान 1,700 ग्राउंड स्टाफ की बर्खास्तगी जैसी चीजों के लिए चर्चा में रहा है। सितंबर में, तत्कालीन सीईओ एलन जॉयस ने एयरलाइन की व्यापक आलोचना के बीच शीर्ष पद पर 15 साल रहने के बाद अपनी सेवानिवृत्ति को दो महीने के लिए आगे बढ़ाया था।

प्रथम पेज का शेष

लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण....

मध्यप्रदेश की नौ सीटोंः मुरैना, भिंड, ग्वालियर, गुना, सागर, विदिशा, भोपाल, राजगढ़, बैतूल, महाराष्ट्र की 10 सीटों-बारामती, रायगढ़, धाराशिव, लातूर (एससी), सोलापुर (एससी), माधा, सांगली, रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग, कोल्हापुर, हटकनंगले, उत्तरप्रदेश की 11 सीटों- संभल, हाथरस, आगरा (एससी), फ़तेहपुर सीकरी, फ़रीज़ाबाद, मैनपुरी, एटा, बदायूँ, आंवला, बरेली, पश्चिम बंगाल की चार सीटों मालदा उत्तर, मालदा दक्षिण, जंगीपुर, मुर्शिदाबाद पर मतदान होगा। चुनाव आयोग ने जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग रजौरी सीट पर मतदान की तारीख में बदलाव किया है। अब यहां 25 मई को छठे चरण में वोटिंग होगी।

लोकसभा चुनाव में अब तक दो चरण के मतदान हो चुके हैं, अब कल तीसरे चरण का मतदान होना है। चुनाव आयोग मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिये मतदाता जागरूकता अभियान के कई कार्यक्रम चला रहा है। अगर इंटरनेट मीडिया पर प्रचार-प्रसार के लिये किसी तरह की पोस्ट, वीडियो या संदेश अपलोड किया या उसे फारवर्ड किया, तो उसका पता जिला स्तरीय मीडिया सर्टिफिकेशन एंड मानिटरिंग कमेटी लगायेगी। इसके लिये साइबर सेल की मदद ली जायेगी। इस बार भी मतदान का समय सुबह सात बजे से शाम छह बजे तक रहेगा।

लोकसभा के पहले चरण में 19 अप्रैल को 21 राज्यों की 102 सीटों पर मतदान हुआ। छब्बीस अप्रैल को दूसरे चरण में 88 सीटों पर मतदान हुआ, जिसके बाद अब सात मई को तीसरे चरण के मतदान होंगे, 13 मई को चौथे, 20 मई को पांचवे, 25 मई को छठे, एक जून को सातवें चरण के मतदान होंगे। चार जून को वोटों की गिनती की जायेगी।

हमारी सरकार आने पर 50 प्रतिशत ....

उनके खातों में 8,500 रुपये प्रति माह देना शुरू कर देगी. कांग्रेस ने आदिवासी बहुल रतलाम-झाबुआ सीट से भाजपा की अनीता नागर चौहान के खिलाफ पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया को मैदान में उतारा है. यहां 13 मई को मतदान होगा.

धर्मांतरण के खिलाफ सरकार....

एसी, एसटी, ओबीसी व सामान्य, सभी वर्ग के लोग इस देश में रहते हैं जो इस देश की चिंता करते हैं इसलिए सबका हक बराबर है। एक विशेष समुदाय के वोट बैंक के लिए तुष्टिकरण की राजनीति कांग्रेस पार्टी करती आई है। पिछली कांग्रेस द्वारा मोदी सरकार पर भेदभाव के आरोप पर श्री साय ने कहा कि केन्द्र की मोदी की सरकार कभी किसी से भेदभाव नहीं करती है। पिछली कांग्रेस सरकार के साथ भी कोई भेदभाव नहीं किया गया था। लेकिन यहां की पूर्व कांग्रेस सरकार एवं स्वयं भूपेश बघेल नहीं चाहते थे कि केंद्र की योजनाओं का लाभ छत्तीसगढ़ की जनता को मिले क्योंकि इसका श्रेय भाजपा और मोदी जी को चला जाएगा।

उन्होंने कहा कि पिछले 5 वर्षों में 18 लाख गरीब परिवार प्रधानमंत्री आवास योजना से वंचित हो गए। भारत सरकार द्वारा इसका पैसा भी भेजा गया, गरीबों के पक्का मकान बनवाने हेतु लगातार छत्तीसगढ़ सरकार को पत्र लिखा गया लेकिन यहां की कांग्रेस सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया। हर घर जल पहुंचाने के लिए संकल्पित भारत सरकार द्वारा शुरू की गई 'जल जीवन मिशन' योजना भी कांग्रेस सरकार में कमीशनखोरी की भेंट चढ़ गई। जबसे छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनी हैं केंद्र सरकार की सभी योजनाएं एवं मोदी की गारंटी का लाभ हर व्यक्ति तक पहुंचाने का काम हमारी सरकार कर रही है।

चुनाव के बाद विष्णु सरकार की जनहितैषी योजनाओं के बंद हो जाने के सवाल पर विष्णु देव साय ने कहा कि कांग्रेस मुद्दाविहीन हो गई है। उन्हें अपनी हार स्पष्ट दिखाई दे रही है इसलिए वे मुद्दे की बात नहीं कर रहे है, केवल भ्रम और झूठ फैला रहे हैं। संविधान खतरे में पड़ जाएगा, आरक्षण समाप्त कर देंगे, महतारी वंदन का पैसा व 3100 रूपया धान खरीदी चुनाव तक है, कांग्रेसी ये भ्रम लोगों के बीच पैदा कर रहे हैं। लेकिन जनता वास्तविकता को जानती है वह इनके झांसे में नहीं आने वाली।

उन्होंने कहा कि मैं बतौर मुख्यमंत्री प्रदेश की जनता को आश्वस्त करना चाहता हूं कि जब तक हमारी सरकार है, हमारी कोई भी योजना या मोदी की गारंटी बंद नहीं होगी। प्रधानमंत्री जी ने भी कहा है कि न संविधान को कोई खतरा है, न किसी का आरक्षण समाप्त होगा। अनुसूचित क्षेत्रों में धर्मांतरण को रोकने के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि धर्मांतरण का विरोध हमने लगातार किया है और जब हम सरकार में हैं, तो आने वाले समय में यदि जरूरत पड़ी तो इसके खिलाफ हम कठोर कानून लेकर आएंगे।

मलयेशियाई फुटबॉलर पर जानलेवा हमला, तेजाब फेंका; तीन दिन पहले लूटपाट में घायल हुआ था एक साथी खिलाड़ी

मलयेशिया के एक फुटबॉलर पर रविवार को जानलेवा हमला हुआ। फैसल हलीम नाम के इस फुटबॉलर पर एक शॉपिंग मॉल में तेजाब फेंका गया, जिससे वह झुलस गया।

सेलांगोर राज्य के खेल अधिकारी नजवान हलीमी ने बताया कि मलयेशिया की राष्ट्रीय टीम के खिलाड़ी फैसल पर कुआलालंपुर के बाहर पेटलिंग जाया जिले में हमला किया गया। इससे फैसल घायल हो गए। उनकी गर्दन, कंधे, हाथ और सीने पर जख्म के निशान हैं। 26 साल के फैसल सेलांगोर फुटबॉल क्लब में विंगर हैं।

फैसल की तस्वीर ऑनलाइन वायरल हुई

नजवान ने कहा, मैं इस हिंसा की कड़ी निंदा करता हूं और पुलिस से अपराधी को जल्द से जल्द पकड़ने का आग्रह करता हूं। सेलांगोर पुलिस प्रमुख हुसैन उमर खान के मुताबिक, इस मामले में एक संदिग्ध को गिरफ्तार किया गया है। हालांकि, उसने अब तक इसके पीछे के मकसद का खुलासा नहीं किया है। ऑनलाइन वायरल हुई एक तस्वीर में फैसल को एक बेंच पर बैठे दिखाई दिए और उनके शरीर पर जलने के निशान हैं।

तीन दिन पहले साथी खिलाड़ी हमले में हुआ था घायल

इस हमले से तीन दिन पहले एक अन्य राष्ट्रीय खिलाड़ी अख्यार राशिद पूर्वी राज्य तेरेंगानु में अपने घर के बाहर लूटपाट में घायल हो गए थे। स्थानीय मीडिया के अनुसार दो अज्ञात संदिग्धों ने 25 वर्षीय अख्यार पर लोहे की रॉड से वार किया और उनके सिर और पैर में चोटें आई थीं, जिससे उन्हें टांके लगाने पड़े थे। स्थानीय पुलिस प्रमुख अज़ली नूर ने कहा कि संदिग्ध अख्यार के पैसे लेने के बाद भाग गए थे।

मलयेशिया फुटबाल संघ के अध्यक्ष का बयान

मलयेशिया फुटबाल संघ के अध्यक्ष हमीदीन मोहम्मद अमीन ने कहा कि वह राष्ट्रीय टीम के दो खिलाड़ियों पर दोनों हमलों से निराश और दुखी हैं। उन्होंने रविवार को एक बयान में कहा, मलयेशिया के लोग प्रार्थना करते हैं कि अख्यार और फैसल जल्द से जल्द ठीक हो जाएं और खेल के मैदान पर लौटें।

सावधान! वॉट्सऐप पर आ गया फ्रॉड करने का नया तरीका, रातोंरात हो जाएंगे कंगाल

भारत में साइबर क्राइम के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं. स्कैमर्स लोगों की निजी जानकारी चुराकर उनके नाम से वॉट्सऐप अकाउंट बनाते हैं और उनके जान पहचान के लोगों को मैसेज करते हैं.

भारत में साइबर क्राइम के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं. स्कैमर्स अलग अलग तरीके से लोगों को जाल में फंसाते हैं और फिर बैंक अकाउंट खाली कर देते हैं. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स भी इसे अछूते नहीं. या ये कहें कि स्कैमर्स इन ऐप्स की मदद से किसी को भी चूना लगा सकते हैं. फेसबुक, इंस्टाग्राम के बाद अब वॉट्सऐप भी इन स्कैमर्स के लिए लोगों को जाल में फंसाने का जरिया बन गया है.

ये स्कैमर्स आपको अलग अलग तरीके से फंसा सकते हैं और फिर पैसे ऐंठ सकते हैं. इस समय एक ऐसा ही मामला सामने आया है. अगर आपके पास भी ऐसे मैसेज आए, तो आप इसका अंदाजा लगा सकते हैं कि ये स्कैमर्स का काम हो सकता है. इसके लिए आपको कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है.

निजी जानकारी चुराते हैं स्कैमर्स

स्कैमर्स आपकी निजी जानकारी भी चुरा रहे हैं. वे आपके इंस्टाग्राम या फेसबुक अकाउंट से पहले आपसे जुड़ी जानकारी लेते हैं. फिर इसी जानकारी के आधार पर आपकी तस्वीर और फोन बुक को कॉपी करते हैं. इसके बाद वॉट्सऐप पर आपके नाम से नया अकाउंट बनाते हैं और आपके जान पहचान के लोगों को मैसेज करते हैं. इतना ही नहीं, ये स्कैमर आपसे इस तरह बात करते हैं, जैसे आप इन्हें पहले से जानते हों और आपको इन पर शक भी ना हो.

इसके अलावा, ये आपको फोन भी कर सकते हैं. स्कैमर्स आमतौर पर आपको बैंक अकाउंट में अर्जेंट पैसे डालने या इमरजेंसी का हवाला देते हैं. कई बार वे मोबाइल रिचार्ज का भी बहाना देकर आपसे पैसे लेना चाहते हैं. ऐसे में जरूरी है कि आप किसी भी अननोन नंबर से इस तरह के मैसेज आने पर अलर्ट हो जाएं और किसी प्रकार का ट्रांजेक्शन ना करें.

कहां से लीक होता है डेटा?

ऑनलाइन फ्रॉड की सबसे बड़ी वजह हो सकती है डेटा लीक. डार्क वेब पर तमाम यूजर्स का डेटा बेचा जाता है. ये डेटा किसी भी यूजर की पर्सनल जानकारी हो सकती है. इसमें आधार कार्ड नंबर, पैन कार्ड नंबर या फिर मोबाइल नंबर भी शामिल होते हैं. ये स्कैमर्स वहां से डेटा उठाते हैं और फिर स्कैम करने के नए नए बहाने ढूंढते हैं.

डेटा लीक की कई और वजहें भी हो सकती हैं. मान लीजिए कि आप गेमिंग ऐप्स अपने फोन में इंस्टॉल करते हैं. इसके बाद ये ऐप्स आपके फोन का एक्सेस मांगते हैं. एक बार एक्सेस इन करने पर ये आपका पूरा डेटा अपने पास स्टोर कर लेते हैं.

ठीक इसी तरह से अगर आप किसी फेक वेबसाइट्स पर विज़िट करते हैं, तो ये आपका पूरा डेटा चुरा लेते हैं. यूजर्स की डिटेल्स मिलने के बाद ये आपको कोई बैंक अधिकारी या फिर सर्विस एग्जीक्यूटिव बनकर कॉल कर सकते हैं. यहां तक कि कई बार स्कैमर्स आपको डरा धमकाकर भी पैसे ऐंठ सकते हैं.

कैसे बच सकते हैं?

इस तरह की स्कैनिंग से बचने के लिए सबसे पहले आपको समय समय पर अपने अकाउंट्स का पासवर्ड बदलना होगा. इसके अलावा, सोशल मीडिया पर फोटो और वीडियो को शेयर करते हुए थोड़ी सावधानी रखनी होगी, जिससे आपका डेटा लीक ना हो जाए. इसके अलावा, किसी भी वेबसाइट पर एक्सेस करने से पहले ये जांच लें कि ये वेबसाइट फर्जी तो नहीं है. साथ ही साथ किसी भी थर्ड पार्टी ऐप पर ओटीपी शेयर करने से बचें.

नए गेमर्स को आसानी से जीतने बेहतरीन टिप्स एंड ट्रिक्स

फ्री फायर मैक्स भारत के सबसे पॉपुलर बैटल रॉयल गेम्स में से एक है. इस गेम की खास बात ये है कि यूज़र्स को इसे खेलने के लिए किसी अच्छे या महंगे मोबाइल फोन की जरूरत नहीं होती है. गेमर्स बजट रेंज के स्मार्टफोन में भी इस गेम को खरीद सकते हैं. इस गेम के ग्राफिक्स, विजुअल्स और गेमप्ले किसी बजट रेंज के फोन के प्रोसेसर पर आसानी से चल जाते हैं. यही कारण है की भारत के टीनएजेर्स सस्ते स्मार्टफोन्स में पूरे मजे के साथ इस गेम को खेल पाते हैं. अगर आपने फ्री फायर मैक्स खेलना हाल ही में शुरू किया है, लेकिन आप गेम में जीत हासिल नहीं कर पा रहे हैं, तो हमारी ये टिप्स एंड ट्रिक्स आपके काफी काम आ सकती है.

फ्लाइट से कूदने में जल्दी ना करें

दरअसल, फ्री फायर मैक्स खेलने वाले नए गेमर्स गेम शुरू होते ही फ्लाइट से मैप पर कूद जाते हैं. ऐसे में आप मैप पर कूदते ही गिर सकते हैं, क्योंकि शुरुआत में एक साथ बहुत सारे गेमर्स नीचे उतरते हैं. लिहाजा, नए गेमर्स होने के मुताबिक आपको फ्लाइट से उतरने में जल्दी नहीं करनी चाहिए. आपको थोड़ी देरी से मैप पर कूदना चाहिए. इससे आपके मैप पर उतरने तक कुछ गेमर्स मर चुके होंगे, और आपके लिए कंप्टीशन थोड़ा कम हो जाएगा.

मैप पर खाली जगह देखकर कूदे

आप मैप पर कूदने से ध्यान से देखें कि कौन सी जगह ज्यादा खाली है. यहां तक कि आप फ्लाइट से कूदने के बाद जब पैराशूट के साथ नीचे जाते हैं, तब भी जमीन से करीब आते-आते ध्यान से देखें कि कौनसी जगह पर कम लोग लड़ाई कर रहे हैं. ऐसे में आपका खतरा कम हो जाएगा.

लैंड करते ही हथियार जमा करें

मैप पर उतरने के बाद आप सबसे पहले अपने पास अलग-अलग तरह के पर्याप्त हथियार जमा कर लें. इससे आपको लड़ाई लड़ने में आसानी होगी. कई बार ऐसा होता है कि नए गेमर्स हथियार ना होने की वजह से काउंटर अटैक नहीं कर पाते और मर जाते हैं.

डेंजर ज़ोन से हमेशा दूर रहे

आप डेंजर ज़ोन पर हमेशा ध्यान रखें. मैप पर दौड़ते वक्त भी डेंज़र ज़ोन पर नज़र बनाए रखें और कोशिश करें कि आप एकदम बीचो-बीच में हो.

किल करने के लिए गाड़ियों का भी इस्तेमाल करें

मैप पर आपको जीप, कार, ट्रक, ट्रैक्टर, टैंक आदि कोई भी भारी-भरकम गाड़ी मिलती है, तो उसका इस्तेमाल करना सीखिए. उसमें बैठने के बाद आप विपक्षियों पर गाड़ी चढ़ाकर भी उसे मार सकते हैं. हालांकि, गाड़ी में आग भी लग जाती है तो आपको उससे बाहर निकलने में भी फुर्ति दिखानी होगी.

भारत में जल्द लॉन्च होंगे ये वीडियो गेम्स

भारत में जल्द ही ये 5 नए गेम रिलीज़ होने वाले हैं, जो मोबाइल और पीसी पर खेले जाएंगे. इनमें से किसी गेम में गेमर्स को भूतों से बचने का टास्क मिलेगा तो किसी में मर्डर मिस्ट्री सुलझाने का.

भारत की वीडियो गेम इंडस्ट्री काफी तेजी से आगे बढ़ रही है, क्योंकि पीसी कंसोल और मोबाइल डिवाइस के लिए बहुत सारे गेम इंडियन मार्केट में आ चुके हैं और बहुत सारे नए गेम आने वाले भी हैं. आने वाले समय में भारत की गेमिंग इंडस्ट्री दुनिया की सबसे बड़ी गेमिंग इंडस्ट्री भी बन सकती है. भारत मे वीडियो गेम की बढ़ती मांग को देखते हुए डेवलपर्स बहुत सारे नए गेम पर काम कर रहे हैं, जिनमें से कुछ गेम्स आने वाले कुछ हफ्तों में ही लॉन्च होने वाले हैं. आइए हम आपको 5 ऐसे वीडियो गेम के बारे में बताते हैं, जो अगले कुछ ही हफ्तों में शुरू होने वाले हैं.

अगर आप किसी भूतिया वीडियो गेम की तलाश कर रहे हैं, तो अब आपकी तलाश खत्म होने वाली है. 6 मई 2024 भारत में ़यड्ड्रद्यड्ड (कमला) नाम का एक नया वीडियो गेम शुरू हो रहा है. यह वीडियो भारतीय तौर-तरीके वाले भूतों यानी हॉरर गेम है. इसमें गेमर्स को अंत तक भूतों से बचकर सर्वाइव करना होगा. बहरहाल, गेम की क्वालिटी और कंटेंट तो गेम रिलीज होने के बाद ही पता चलेगा.

क्रिमसन टैक्टिक्स के डेवलपर्स से : द राइज़ ऑफ़ द व्हाइट बैनर, मर्सिनरी बैटल कंपनी-द रीपर्स एक ःतेज़ गति वाला, रॉगुलाइट, बुलेट हेवन गेमः है जिसमें एक ह्यष्ट्ठ-द्वद्ब सेटिंग दी गई है. क्रद्यड्डष्म रुड्डह्लष्द्र स्न्लह्मस्नद्वशह्य का टाइटल 7 मई 2024 को लॉन्च होगा, इसलिए ऐसा लग रहा है कि मर्सिनरी बैटल कंपनी-द रीपर्स गेम भी जल्द ही लॉन्च होने वाला है.

यह भी एक मजेदार गेम है, जो 9 मई 2024 को भारत में रिलीज़ होने वाला है. इस एक सोलो गेम डेवलपर प्रतीक जाधवानी ने बनाया है. इसका मतलब है कि इस गेम को सिर्फ एक इंसान प्रतीक जाधवानी ने बनाया है. इस गेम में गेमर्स को जीवन का एक हिस्सा जीने का मौका मिलता है. इस खिलाड़ी एक पिशाच की भूमिका निभाते हैं, जो गहरी नींद से जागता है और अब उसे मॉर्डन वर्ल्ड के अनुसान ढ़लना होगा. इसके लिए शहर में घूमना होगा, काम करना होगा, नए लोगों से मिलना होगा, महल की मरम्मत करनी होगी, मछली पकड़नी होगी और भी काफी कुछ करना होगा.

अगर आप इंडियन वीडियो गेम को फॉलो करते हैं, तो इस गेम के बारे में जरूर सुना होगा. मशाला गेम्स ने इस नए गेम डिटेक्टिव दोस्तों को बनाया है. आपको बता दें कि यह मशाला गेम्स द्वारा बनाया गया पहला ही गेम है. इसमें गेमर्स एक डिटेक्टिव यानी जासूस का काम करता हैं और एक मर्डर मिस्ट्री को सुलझाते हैं. यह खेल 2024 की तीसरे क्वाटर यानी जून 2024 के बाद लॉन्च हो सकता है.

लेज़र टैंक नाम का के इस वीडियो गेम को ह्वद्बद्ब्रअद्रष्द्भत्रड्डद्रह्य ने बनाया है. यह एक टॉप डाउन शूटर गेम है. इसमें गेमर्स लेज़र टैंक्स का इस्तेमाल करके विदेशी राक्षसों के खिलाफ लड़ते हैं. इसमें गेमर्स को अलग-अलग तरह के कई आधुनिक हथियारों का इस्तेमाल करने का मौका मिलता है. अभी तक इस गेम की रिलीज डेट सामने नहीं आई है, लेकिन ऐसा कहा जा रहा है कि इस साल पीसी के लिए रिलीज किया जाएगा.

ट्रेनों में ब्रेक सिस्टम कैसे करते हैं काम

आज के वक्त अधिकांश लोग ट्रेनों में ही सफर करते हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि जिन ट्रेनों में आप सफर करते हैं, उस ट्रेन में ब्रेक कैस काम करता है. आज हम आपको बताएंगे कि ब्रेक कितने प्रकार के होते हैं.

भारतीय रेलवे की ट्रेनों में हर रोज लाखों यात्री सफर करते हैं. ट्रेन में सफर करने के दौरान आपने कई बार महसूस किया होगा कि ट्रेन अलग-अलग कारणों से कई बार बीच रास्ते में रोक दी जाती है. लेकिन क्या आपने कभी ये सोचा है कि आखिर ट्रेनों में ब्रेक सिस्टम कैसे काम करता है. आज हम आपको बताएंगे कि ट्रेन में ब्रेक सिस्टम कैसे काम करता है.

ट्रेन का ब्रेक सिस्टम

बता दें कि ट्रेन को रोकने के लिए ट्रेन के डिब्बों में एयर ब्रेक लगाए जाते हैं. इन्हें तकनीकी तौर पर न्यूमैटिक ब्रेक कहते हैं. ये एक प्रेशर पाइप से जुड़े होते हैं, जो वायुमंडलीय दाब का 5 गुना प्रेशर देते हैं. ये इंजन से लेकर आखरीं डिब्बे तक हर पहियें में लगा होता है. ये ड्राइवर के ब्रेक हैंडल से जुड़ा रहता है. बता दें कि ड्राइवर जब ब्रेक लगाता है, तो ब्रेक पाइप महज 6 सेकेंड में ब्रेक लगा देता है. इसके बाद ब्रेक ब्लॉक या ब्रेक पैड पहिए से जाकर चिपक जाते हैं. इस दौरान घर्षण इतना ज्यादा होता है कि ब्रेक पैड गर्म हो जाते हैं और ट्रेन रुक जाती है.

कितने तरह के होते हैं ब्रेक

अब सवाल ये है कि क्या सभी ट्रेनों में एक ही तकनीक के जरिए ब्रेक लगता है. बता दें कि ब्रेक ट्रेन कोच के मुताबिक 5 तरह के होते हैं. जैसे एलएचवी सवारी डिब्बों में न्यूमैटिक डिस्क ब्रेक लगे होते हैं. इसमें हवा के दबाव से ब्रेक लगता है. ये बिल्कुल शीशे की तरह चमकते नजर आते हैं. वहीं ज्यादातर मेल एक्सप्रेस ट्रेनों में एलएचवी कोच ही लगाए जा रहे हैं.

आईसीएफ सवारी डिब्बों में न्यूमैटिक ट्रेड ब्रेक लगाए जाते हैं. ये बाहर से अंदर की ओर होते हैं. इसके अलावा लगभग सभी मेमू, डेमू और ईएमयू ट्रेनों में ट्रेड ब्रेक ही लगे होते हैं. ये काफी पॉवरफुल होते हैं. इसके अलावा मालगाड़ी में भी ये लगाए जाते हैं.

भारत में ज्यादा लोग धड़ाधड़ चला रहे इंटरनेट

भारत में डिजिटल क्रान्ति रुकने के फिलहाल कोई संकेत नहीं है। जी हां, देश में इंटरनेट यूजर्स की संख्या लगातार बढ़ रही है और इससे पता चलता है कि देश में बहुत सारे कामों के लिए डिजिटल मीडियम का इस्तेमाल किया जा रहा है। टेलिकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया (ञ्जक्र्रढ्ढ) की लेटेस्ट टेलिकॉम सब्सक्राइबर रिपोर्ट से खुलासा हुआ है कि देश में इंटरनेट यूजर्स की संख्या तेजी से बढ़ी है।

रिपोर्ट के मुताबिक, दिसंबर 2023 के आखिर में भारत में 936.16 मिलियन यूजर्स इंटरनेट इस्तेमाल कर रहे थे। सिर्फ तीन महीने में इंटरनेट यूजर्स की संख्या में करीब 2 फीसदी का इजाफा हुआ है। मोबाइल ब्रॉडबैंड के जरिए वायरलेस इंटरनेट यूजर्स की संख्या सबसे ज्यादा करीब 897.59 मिलियन है। लेकिन वायर्ड ब्रॉडबैंड यूजर्स की संख्या भी बढ़ रही है और इसके 38.57 मिलियन कनेक्शन हैं।

सबसे ज्यादा इजाफा ब्रॉडबैंड यूजर्स की संख्या में हुआ है। कुल ब्रॉडबैंड इंटरनेट यूजर्स की संख्या पिछली बार के मुकाबले 904.54 मिलियन रही जो पिछी तिमाही की तुलना में 2 प्रतिशत ज्यादा है। वहीं पुरानी टेक्नोलॉजी पर चलने वाले ह्ड्डह्म्ह्म्श2ड्ढड्ढड्डठ्ठस्र कनेक्शन में 31.6 मिलियन में कमी आई क्योंकि अधिकतर भारतीय अब हाई-स्पीड डेटा प्लान चाहते हैं।

बैंडविड्थ की यह बढ़ती मांग अब शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है। शहरों में इंटरनेट सबसक्राइबर्स की संख्या जहां लाखों में रही वहीं साल के आखिर में देश के कुल टेलीफोन यूजर बेस में ग्रामीण भारत की हिस्सेदारी 44त्न से अधिक थी। 527.77 मिलियन ग्रामीण निवासी डिजिटल रूप से जुड़े हुए थे, ग्रामीण टेली-घनत्व लगभग 59 प्रतिशत तक पहुंच गया।

एक वायरलेस यूजर का औसत राजस्व (्रक्रक्क) तिमाही-दर-तिमाही लगभग 2 प्रतिशत बढ़कर 152.55 रुपये हो गया, जो पिछले साल के मुकाबले 8 प्रतिशत ज्यादा है। पोस्टपेड मोबाइल ्रक्रक्क खासतौर से मजबूत होकर 189 रुपये प्रति माह पर रहा।

राधिका खेड़ा बोलीं- मुझे कमरे में बंद किया, चीखती-चिल्लाती रही : कहा- राहुल की यात्रा के दौरान शराब ऑफर की

रायपुर। राधिका खेड़ा ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया है। इस बीच अमर उजाला को दिये इंटरव्यू में उन्होंने कई सनसनीखेज आरोप लगाये थे। इसके बाद उन्होंने आज प्रेस कॉन्फ्रेंस लेकर कांग्रेस पर कई सनसनीखेज आरोप लगाये। उनके आरोप से छत्तीसगढ़ कांग्रेस में खलबली मची हुई है। राधिका खेड़ा ने आरोप लगाया है कि छत्तीसगढ़ कांग्रेस के संचार विभाग के चेयरमैन सुशील आनंद शुक्ला ने अपने दो साथियों के साथ रायपुर के पार्टी ऑफिस में उनके साथ अभद्रता करने की कोशिश की। जब उन्होंने इसके बारे में पार्टी के शीर्ष नेताओं को जानकारी दी, तब आरोपी नेताओं के ऊपर कोई कार्रवाई नहीं की गई। यहां तक कि कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे और जयराम रमेश तक सबको इस आपत्तिजनक घटना के बारे में बताया गया, लेकिन आरोपी नेताओं पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद हताश होकर उन्होंने कांग्रेस पार्टी को अलविदा कह दिया।

उन्होंने कहा कि घटना 30 अप्रैल की है। शाम को लगभग छह बज रहे थे। मैं पार्टी ऑफिस में कुछ काम कर रही थी। उसी समय छत्तीसगढ़ कांग्रेस का प्रवक्ता सुशील आनंद शुक्ला अपने दो साथियों - नितिन भंसाली और सुरेंद्र वर्मा - के साथ कमरे में आया। ये दोनों लोग भी छत्तीसगढ़ कांग्रेस के

प्रवक्ता हैं। इसके एक साथी ने कमरा पीछे से बंद कर लिया। कमरा किसने बंद किया, यह मैं नहीं देख पाई, लेकिन कमरा बंद होने की आवाज सुनते ही मैंने अपना फोन निकाल लिया और कैमरा चालू कर दिया। मैंने चिल्लाना शुरू कर दिया। इसके बाद बाहर निकलकर मैंने इस घटना की जानकारी सबको दी। लेकिन किसी ने कोई कार्रवाई नहीं की। जब इस घटना के छह दिन बीत जाने के बाद भी ऐसे अपराधियों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई, मैंने कांग्रेस छोड़ने का फैसला कर लिया।

उन्होंने बताया कि मैंने पूर्व सीएम भूपेश बघेल के राजनीतिक सलाहकार विनोद वर्मा को कॉल किया उनसे मेरी बात हुई तो मुझे कहा गया कि तुम कॉर्डिनेट करके नहीं चलती है। इस बीच पवन खेड़ा को मैंने जब पूरी बात बताया तब मुझे डांट पड़े कि तुम जो कर रही हो गलत है। आवाज उठा रही हो जो गलत है। उसके बाद भूपेश बघेल ने मुझे कॉल बैक किया। उनसे करीब आधे घंटे तक बात हुई। जब मैंने सुशील आनंद शुक्ला से विवाद के बारे में बताया और अपने साथ हुए दुर्व्यवहार को लेकर राजनीति छोड़ने की बात कहीं तो उन्होंने कहा कि तुम छत्तीसगढ़ ही छोड़ दो। तब मुझे समझ में आ गया कि किस तरह पड़यंत्र के साथ मेरे साथ यह सब किया गया। उसके बाद छह दिन तक मैं इंतजार करती रही। राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, जयराम रमेश, खड़गे जो कांग्रेस पार्टी चलाते हैं सबको लगातार कॉल किया। मैसेज किया। चिट्ठियां लिखीं पर मुझे कहीं से संतोषजनक जवाब नहीं मिला। कहीं से कोई भी मदद नहीं की गई। मैं अपने मर्जी से छत्तीसगढ़ नहीं गई थी, मुझे पार्टी ने बाकायदा तीसरी बार भेजा था। जब मैंने ट्वीट करना शुरू किया और न्याय की गुहार लगाई तब जयराम रमेश सिंह का फोन आया और उन्होंने कहा कि तुम सही नहीं कर रही हो।

राधिका खेड़ा ने कहा कि जब राहुल गांधी जी भारत जोड़ो न्याय यात्रा निकाल रहे थे, मैं छत्तीसगढ़ में यात्रा की प्रभारी थी। उसी समय से मेरे साथ अभद्रता करने की कोशिश की गई थी। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान मैं कोरबा में जिस होटल में ठहरी थी, सुशील आनंद शुक्ला मुझसे यह जानने की कोशिश करता था कि मैं होटल के किस कमरे में रुकी हुई हूं। मुझे शराब ऑफर की जाती थी। यह पूछा जाता था कि किस कमरे में रुकी हुई हूं और मुझे कौन सी शराब भेज दी जाए। इस घटना की दो लड़कियां गवाह भी हैं। लेकिन यह बेहद अपमानजनक और शर्मनाक था। इसके बारे में उस समय भी मैंने अपनी पार्टी के बड़े नेताओं को जानकारी दी थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। लेकिन समझदारी बरतते हुए मैं उन नेताओं से दूरी बरत रही थी।

धर्मांतरण से बिगड़ रहा शहर का धार्मिक वातावरण

ऋद्धि-सिद्धी कालोनी के बाद मोतीपुर में लगी चंगाई सभा, धर्मांतरण के लगे आरोप

राजनांदगांव (दावा)। शहर में इन दिनों धर्मांतरण किए जाने की आवाज जोर पकड़ने से संस्कारधानी नगरी का धार्मिक वातावरण प्रभावित होने लगा है। बता दें ऊबीते दिनों शहर के आउटर क्षेत्र ऋद्धि-सिद्धी कालोनी में चंगाई सभा आयोजित किए जाने से धर्मांतरण किए जाने का मामला बसंतपुर थाने पहुंचा था। वही रविवार 5 मई को मोतीपुर क्षेत्र में इसी तरह के आयोजन दुहराए जाने से हिन्दू संगठन के लोगों का आक्रोश देखने में आया।

मोतीपुर क्षेत्र में एक धर्म विशेष द्वारा प्रार्थना सभा कराए जाने की जानकारी मिलते ही विश्व हिन्दू परिषद एवं बजरंग दल के लोगों ने वहां धावा बोल दिया जिससे वहां विवाद की स्थिति निर्मित हो गई। मामला पुलिस तक पहुंच गया है। बताया जाता है कि मोतीपुर निवासरत आम आदमी पार्टी की नेत्री चन्द्रमणि वर्मा द्वारा अपने निवास स्थान पर प्रार्थना सभा करवा रही थी जिसकी जानकारी हिन्दू संगठन के लोगों को मिली। मौके पर पहुंचने पर कुछ लोग प्रार्थना सभा में शामिल मिले। जिन्हें हटाए जाने पर विवाद की स्थिति निर्मित हो गई।

आयोजिका चन्द्रमणि का कहना है कि वह 20 वर्षों से प्रभु ईसामसीह पर आस्था रखती है और अपने घर में प्रार्थना सभा आयोजित करती है। रविवार को प्रार्थना सभा के दौरान हिन्दू संगठन के लोग पहुंच कर धक्का-मुक्की, गाली-गलौज करने लगे इससे विवाद की स्थिति निर्मित हो गई। हिन्दू संगठनों का आरोप है कि इन प्रार्थना सभाओं के जरिए लोगों का प्रलोभन देकर धर्मांतरण कराया जा रहा है। इससे राजनांदगांव का धार्मिक वातावरण बिगड़ रहा है।

फर्जी ऋण पुस्तिका दिखाकर दूसरे के जमीन को अपना बताकर सौदा तय कर की धोखाधड़ी

आरोपी को न्यायिक रिमांड पर भेजा गया जेल

राजनांदगांव (दावा)। प्रार्थी हेमशंकर चंद्राकर पिता रामनारायण चंद्राकर निवासी ग्राम दीवानभेड़ी तहसील डोंगरगांव ने दिनांक 16 फरवरी को थाने में लिखित आवेदन पेश कर रिपोर्ट दर्ज कराया कि घटना दिनांक 02.02.2019 से 08.05.2023 के मध्य आरोपी प्रदीप कुमार घाटोडे उर्फ संजय पिता स्व. दामोदर राव घाटोडे उम्र 52 वर्ष निवासी स्टेशन पारा गोरेलाल चाल राजनांदगांव हाल श्रीमती निर्मला श्रीवास्तव का मकान नं. 05 पाण्डूरंग कॉलोनी राजनांदगांव द्वारा कौरिनभांठा प.ह.नं. 41 गांधी नगर राजनांदगांव से लगा हुआ जमीन को अपना बताकर फर्जी ऋण पुस्तिका दिखाकर प्रार्थी से 20 लाख रूपये में सौदा तय किया गया और प्रार्थी से आरोपी ने 13,00000 रूपये आरटीजीएस के माध्यम से दिनांक 02.02.2019 को तथा 6,50,000 रूपये नगद प्राप्त कर 50,000 रूपये को पंजीयन के समय प्राप्त करने का करार किया गया।

रजिस्ट्री का समय आने पर आरोपी द्वारा टालमटोल करने लगा, तब यह परेशान होकर अपनी राशि को मांगा गया तो आरोपी ने आपसी राजीनामा कर राशि वापसी करने का 03 चेक दिया गया, जो बाउंस हो गया। आरोपी को रकम मांगने पर टाल-मटोल करना बताया, जिसकी रिपोर्ट पर आरोपी के खिलाफ अपराध 115/2024 धारा 420 भादवि. कायम कर विवेचना में लिया गया है और अपराध कायमी से वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया। पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा तथा नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र नायक राजनादगांव के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी निरीक्षक एमन साहू के नेतृत्व में थाना कोतवाली से आरोपी घटना दिनांक से फरार था, जिसका लगातार पतासाजी किया जा रहा था।

आज दिनांक 06.05.2024 को मुखबीर की सूचना पर आरोपी प्रदीप कुमार घाटोडे उर्फ संजय पिता स्व. दामोदर राव घाटोडे को हिरासत में लेकर पूछताछ पर अपराध घटित करना स्वीकार करने पर विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में न्यायालय के समक्ष पेश किया गया। उपरोक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक एमन साहू, सउनि. उदय सिंह चंदेल, आरक्षक रंजीत चौरसिया, रूपेन्द्र वर्मा एवं थाना स्टाफ की सराहनीय भूमिका रही।

कांग्रेस ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को दी बड़ी जिम्मेदारी, रायबरेली का बनाया पर्यवेक्षक

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को एक और बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है, उन्हें गांधी परिवार की मजबूत सीट का वरिष्ठ पर्यवेक्षक बनाया गया है। इस सीट से खुद कांग्रेस नेता राहुल गांधी चुनाव मैदान में उतरे हैं, जिससे मुकाबला दिलचस्प नजर आ रहा है, भूपेश बघेल ने इस बार खुद राजनांदगांव लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा है, ऐसे में उनकी सीट पर वोटिंग के बाद अब पार्टी ने उन्हें नई जिम्मेदारी सौंप दी है।

कांग्रेस पार्टी ने भूपेश बघेल को उत्तर प्रदेश की रायबरेली लोकसभा सीट का सीनियर पर्यवेक्षक बनाया है, कांग्रेस नेता राहुल गांधी इस सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। रायबरेली लोकसभा सीट उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की सबसे मजबूत सीट मानी जाती है, 2019 में यहां से कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी ने जीत हासिल की थी, लेकिन इस बार उन्होंने चुनाव नहीं लड़ा, उनकी जगह पर पार्टी ने आखिरी वक्त में राहुल गांधी को यहां से चुनाव लड़ाया है।

बता दें कि रायबरेली लोकसभा सीट से अब तक सोनिया गांधी ही चुनाव लड़ती आ रही थी, लेकिन पहली बार पार्टी ने यहां से राहुल गांधी को उतारा है, राहुल गांधी इस बार दो सीटों से चुनाव मैदान में हैं, वह रायबरेली के अलावा केरल की वायनाड सीट से भी प्रत्याशी हैं, वायनाड में वोटिंग हो चुकी है, ऐसे में अब राहुल का भी पूरा फोकस रायबरेली में ही होगा। इसलिए पार्टी ने सीनियर नेता होने के नाते भूपेश बघेल के इस सीट का पर्यवेक्षक बनाया है। भूपेश बघेल की गिनती राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के करीबियों में होती है, ऐसे में बघेल अब रायबरेली में सक्रिए होंगे, उन्होंने इस जिम्मेदारी के लिए पार्टी का धन्यवाद भी किया है।

कांग्रेस ने इस बार भूपेश बघेल को भी लोकसभा चुनाव में टिकट दिया था, भूपेश बघेल छत्तीसगढ़ की राजनांदगांव लोकसभा सीट से चुनाव लड़े थे, उनका मुकाबला बीजेपी के सटिंग सांसद संतोष पांडे से हुआ था। बघेल फिलहाल दुर्ग जिले की पाटन विधानसभा सीट से विधायक है। भूपेश बघेल के अलावा राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को भी अमेठी लोकसभा सीट का वरिष्ठ पर्यवेक्षक बनाया है, ऐसे में कांग्रेस पार्टी ने दोनों सीनियर नेताओं को लोकसभा चुनाव में बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी है।

बांस के छोटे लाट बनाने की मांग की छोटे व्यापारियों ने वन मंडल अधिकारी को सौपा ज्ञापन

० बड़े व्यापारियों के हिसाब से बनाया गया है बांस का लाट
० अछोली डिपो में 15 को होनी है बांस की नीलामी

डोंगरगढ़ (दावा)। औद्योगिक बास की निलामी में बड़े व्यापारियों को लाभ पहुंचाने का आरोप लगाते हुए छोटे व्यापारियों ने वनमंडलाधिकारी राजनांदगांव को ज्ञापन सौंपा है। लाट को छोटा करने की मांग छोटे व्यापारियों की ओर से गिरधारी अग्रवाल ने की है। वन मंडल अधिकारी राजनांदगांव को दिए गए ज्ञापन में कहा गया है कि, डोंगरगढ़ स्थित ग्राम अछोली डिपो में आगामी 15 मई को होने वाले नीलामी में बांस के लाट को छोटा बनाने की मांग की गई है। वर्तमान में जो लाट दिखाई दे रहा है वहां बड़े व्यापारियों के हिसाब से बनाया गया है।

शासन को नुकसान बड़े बास के लाटो को बड़े व्यापारी रिंग बनाकर कम दर पर बोली लगाकर ले लेते हैं। जिससे शासन को राजस्व का नुकसान होता है। वहीं छोटे व्यापारी आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण नीलामी में भाग नहीं ले पाते और शासन को राजस्व की हानि होती है। नीलामी को लेकर आर्थिक आंकलन करने पर अधिकारियों और व्यापारियों के मिलीभगत की करतूत सामने आ सकती है।

वन मंडल अधिकारी राजनांदगांव आयुष जैन ने आवेदक को आश्वस्त किया है कि बांस के बड़े लाट के स्थान पर कुछ छोटे लाट बनाकर बांस की नीलामी करने का प्रयास किया जाएगा। वहीं डिपो प्रभारी दीपक बोस ने बताया कि कुछ बड़े लाटों को छोटे लाट में परिवर्तित किया जा रहा है।

चाकू लहराते हुए लखोली का युवक गिरफ्तार, भेजा गया जेल

राजनांदगांव (दावा)। सिटी कोतवाली पुलिस ने लखोली के एक युवक चाकू लहराते हुए धर दबोचा है। और उसे को सोमवार 6 मई को धारा 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत गिरफ्तार कर जेल की सीखचों के पीछे भेज दिया हैं। बताया जाता है कि उक्त युवक आदतन बदमाश हैं। पुलिस ने उसके के कब्जे से एक नग लोहे का धारदार चाकू जप्त किया गया है।

कोतवाली थाना प्रभारी एमन साहू ने बताया कि बैगा पारा लखोली का मोनू बासफोड़ आदतन आरोपी हैं उसके खिलाफ पूर्व में मारपीट एवं जुआं एक्ट के मामले दर्ज कर चालान किया जा चुका है। बताया गया कि पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा तथा नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेंद्र नायक के मार्गदर्शन एवं उनके स्वयं के थाना प्रभार व नेतृत्व मे असामाजिक तत्वों के विरूद्ध अभियान चलाये जा रहे हैं। अभियान के तहत 06 मई को मुखबीर से सूचना प्राप्त हुई कि मोनू बांसफोड़ नामक व्यक्ति बैगापारा अटल आवास चौक के पास अपने हाथ में चाकू लेकर लोगो को डरा धमका रहा है, आसपास के लोग दहशत में है। कि सूचना पर तत्काल मौका पहुंचकर घेराबंदी कर पकड़े नाम पता पूछने पर अपना नाम व पता मोनू बांसफोड़ पिता गणेश बांसफोड़ उम्र 19 वर्ष साकिन अटल आवास बैगापारा लखोली बताया। जिसके कब्जे से एक नग लोहे का धारदार चाकू पुलिस ने जप्त कर कब्जा लिया गया।

आरोपी के विरूद्ध आर्म्स एक्ट के तहत प्रर्याप्त अपराध सबूत पाये जाने से थाना कोतवाली में अपराध क्रमांक 270/24 धारा 25, 27 आर्म्स एक्ट कायम कर आरोपी को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमाण्ड पर न्यायालय पेश किया गया, आरोपी का जेल वारंट प्राप्त होने पर जिला जेल राजनांदगांव में दाखिल किया गया। आरोपी आदतन अपराधी है, इसके खिलाफ पूर्व में अप0 क्र0 699/21 धारा 294, 323, 506, 34 भादवि0 एवं अप0क्र0 594/23 धारा 3 (2) छ0ग0 जुआं प्रतिषेध अधिनियम 2022 कायम कर चालान न्यायालय पेश किया गया है।

हर्षोल्लास से संपन्न हुआ युगांतर द्वारा सन सिटी में पांच दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर

राजनांदगांव (दावा)।5 मई शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी युगांतर पब्लिक स्कूल द्वारा नगर की लब्धप्रतिष्ठ सन सिटी क्लब हाउस में 1 मई से 5 मई तक पांच दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का शानदार समापन हुआ। इस प्रशिक्षण शिविर को युगांतर पब्लिक स्कूल की फिजिकल एजुकेशन शिक्षिका वंदना सिंह ने शानदार ढंग से संचालित किया। विद्यालय की फिजिकल एजुकेशन शिक्षिका वंदना सिंह को योग प्रशिक्षक और मेडिटेशन विशेषज्ञ के रूप महारत हासिल होने से सन सिटी के बच्चे और महिलाएँ आल्हादित रहे। वे इस प्रशिक्षण शिविर में बड़ी संख्या में भाग लेकर योगा के साथ जुम्बा का भी लुत्फ उठाया। उन्होंने शरीर में स्थित सात चक्रों को सक्रिय बनाने हेतु मंत्र और आसन सिखाए और उनका प्रभावकारी रूपों में अभ्यास कराया। यही नहीं उन्होंने सूर्य नमस्कार के जरिये स्वस्थ रहने की कला सिखाई। वंदना सिंह के अविस्मरणीय योगदान के कारण सनसिटी के अध्यक्ष आनंद चोपड़ा ने अपनी कार्यकारी समिति के सदस्यों सहित उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि युगांतर का आयोजन सराहनीय है। शिविर प्रभारी दीप्ति बिंदल पीजीटी कॉमर्स के अविस्मरणीय सहयोग से यह शिविर यादगार रहा। इस आयोजन को लेकर सनसिटी में गजब का उत्साह माहौल देखने को मिला। नई उमंग और उत्साह के साथ बच्चे और महिलाएँ भाग लेकर अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक दिखलाई पड़े।

इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन विनोद सदानी, सेक्रेटरी विनय डड्ढा, कोषाध्यक्ष मिश्रीलाल गोलछा, निदेशक (स्पोर्ट्स) सुशील कोठारी, अजय सिंगी, नरेंद्र कोटड़िया, प्राचार्य डॉ.मधु पी चौधरी, पी.आर.ओ. स्पोर्ट्स ऑफिसर दिनेश प्रताप सिंह सहित युगांतर परिवार ने सन सिटी में युगांतर द्वारा आयोजित पांच दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर में सफलतापूर्वक संचालित होने तथा विद्यालय की फिजिकल एजुकेशन शिक्षिका वंदना सिंह के सम्मानित होने पर हर्ष प्रकट किया है।

जीवन में सफल होने के लिए कैरियर के बहुत से अवसर - कलेक्टर

० एनसीसी का संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित
० बिना किसी तनाव के करें परीक्षा की तैयारी
० मानसिक रूप से स्वयं को बनायें मजबूत, कैरियर के लिए युवाओं को दिया गया मार्गदर्शन

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए व्यवस्थित, योजनाबद्ध अध्ययन जरूरी

राजनांदगांव (दावा)। कलेक्टर संजय अग्रवाल आज जेएलएम गायत्री विद्यापीठ राजनांदगांव में आयोजित नेशनल कैडेट कोर के संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में शामिल हुए। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने युवाओं को कैरियर के संबंध में मार्गदर्शन देते हुए कहा कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए मानसिक रूप से स्वयं को मजबूत बनाएं। योग, मेडिटेशन के साथ ही शारीरिक गतिविधियां आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जीवन में सफल होने के लिए कैरियर के लिए बहुत से अवसर हैं।

युवा, भारतीय सेना, शिक्षक, उद्योग सहित विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे सकते हैं। उन्होंने बताया कि पढ़ाई के दौरान पोस्ट कार्ड विधि का प्रयोग करते हुए रिवीजन किया, जिसके कारगर परिणाम रहे। मुख्य बिंदुओं को पोस्ट कार्ड पर लिखकर रिविजन करना परिणाममूलक रहा। ऐसे विद्यार्थी जो मानसिक तौर पर मजबूत होते है, वे असफल होने पर फिर से तैयारी में जुट जाते हैं। उन्होंने कहा कि 8 घण्टे के पढ़ाई के साथ ही कोचिंग या अपने शिक्षकों से मार्गदर्शन ले सकते हैं। व्यवस्थित एवं योजनाबद्ध तरीके से अध्ययन करने के लिए अनुशासन बहुत जरूरी है। पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित करते हुए अध्ययन की गति बनी रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सामूहिक चर्चा के माध्यम से पढ़ाई करने पर प्रतियोगी परीक्षाओं में फायदा मिलता है। उन्होंने गीता के प्रेरक श्लोक का स्मरण करते हुए युवाओं से कहा कि कर्म करते रहें और फल की चिंता न करें। जीवन भर इस ज्ञान का अनुकरण करें। हर देश, काल, परिस्थिति में गीता का यह ज्ञान सार्वभौमिक एवं प्रासंगिक है। किसी भी तरह का तनाव नहीं ले और मेहनत एवं कोशिश के हिसाब से अपनी अपेक्षाओं को बढ़ाएं। कलेक्टर ने इस दौरान युवाओं द्वारा किए गए प्रश्न एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया तथा उन्हें मन लगाकर पढ़ने के लिए कहा। कलेक्टर ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

लेफ्टिनेंट कर्नल विवेक कुमार दुबे ने युवाओं को भारतीय सेना में जाने के लिए अग्निवीर परीक्षा के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बच्चों से कहा कि अनुशासन में रहने के साथ ही व्यवस्थित दिनचर्या एवं पढ़ाई से सफलता हासिल कर सकते हैं। उन्होंने अपने जीवन शैली के बारे में तथा अनुशासन में रहने के बारे में बताया। उन्होंने युवाओं से कहा कि फिट एवं स्वस्थ रहें। जिला शिक्षा अधिकारी अभय जायसवाल ने कहा कि मेमोरी मैप के लिए पोस्टकार्ड विधि का प्रयोग कर सकते हैं। विद्यार्थी परीक्षा के समय तनाव नहीं ले तथा पढ़ाई के बीच-बीच में थोड़ा आराम करें। इस अवसर पर सचदेवा कॉलेज भिलाई के कैरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट चिरंजीव जैन ने कहा कि बिना तनाव एवं दवाब के पढ़ाई के लिए उत्साह के साथ पढ़ाई करें। इस अवसर पर सूबेदार रितेश आर नायर, लेफ्टिनेंट टिकेश्वर निषाद, सचदेवा कॉलेज भिलाई के करियर काउंसलिंग एक्सपर्ट श्रीमती गरिमा जैन, करियर काउंसलिंग एंकर श्रीमती दाक्षी साहू एवं कैडेट उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि 38वीं छत्तीसगढ़ एनसीसी बटालियन राजनादगांव के तत्वावधान में जेएलएम गायत्री विद्यापीठ राजनांदगांव में 2 से 11 मई तक दस दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में राजनांदगांव, मानपुर-मोहला-चौकी एवं कवर्धा जिलों के 7 महाविद्यालय एवं 9 विद्यालय से लगभग 585 कैडेट प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भाग ले रहे हैं। जिसमें केन्द्रीय विद्यालय राजनांदगांव, सर्वेश्वर दास हायर सेकेण्डरी विद्यालय राजनांदगांव, स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय पिपरिया, कन्या हायर सेकेण्डरी विद्यालय मोहला, हायर सेकेण्डरी विद्यालय रामपुर, होली किंगडम हायर सेकेण्डरी स्कूल कवर्धा के बच्चे शामिल हो रहे हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक दीपक कुमार बुद्धदेव द्वारा स्वस्तिक ऑफसेट एण्ड स्क्रीन प्रिंटर्स, बल्देवबाग रोड, राजनांदगांव से मुद्रित कर प्रकाशित। सम्पादक दीपक कुमार बुद्धदेव।
* समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। * किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र राजनांदगांव रहेगा। फोन नं. - 07744-406631 e-mail : dainikdawa_rjn@yahoo.com